कक्षा XI - XII

भोजपुरी व्याकरण आ रचना

व्याकरण खण्ड

अध्याय 1

वर्ण विचार

ध्वनि, वर्ण, वर्तनी

ध्वनि

'ध्वनि' बोलनिहार के मुँह से उच्चरित होके सुननिहार के कान के सुनाई पड़ेवाला नाद के कहल जाला। अर्थबोध करावेवाली ध्वनि सार्थक आ बिना अर्थबोध वाली ध्वनि निरर्थक कहल जाले। व्याकरण में 'सार्थक ध्वनि' पर विचार करत ओकरा 'भाषा-ध्वनि' चाहे 'वाग्-ध्वनि' कहल गईल बा। एह तरह से 'ध्वनि' चाहे 'भाषा-ध्वनि' भाषा में प्रयुक्त ऊ लघुत्तम ध्वनि होले, जवन वक्ता के मुँह से उच्चरित होके आ अउर ध्वनियन के साथ मिल के अर्थबोध करावे में समर्थ होय। अ, आ, ई, ई, क, ख्, ग् वगैरह वक्ता के मुँह से उच्चरित होके ध्वनि कहल जाले। ध्वनियन का एह लिखित रूप के 'लिपि-संकेत', 'ध्वनि-चिह्न' चाहे 'वर्ण' कहल जाला।

ध्वनि-भेद

भाषा में दू तरह के ध्वनि प्रयुक्त होले-स्वर ध्वनि आ व्यंजन ध्वनि। जवना ध्वनि के उच्चारण अपने आप होय, मतलब, जवना के उच्चारण खातिर अउर ध्वनियन के मदद ना लेवे के पड़े, स्वर ध्वनि कहल जाले, जइसे-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए वगैरह। जवना ध्वनि के उच्चारण स्वर ध्वनि के सहायता से होय, ओकरा के व्यंजन-ध्वनि कहल जाला,

जइसे-क्, ख्, ग्, च्, छ्, ज् वगैरह। एह व्यंजन ध्वनियन के उच्चारण खातिर स्वर ध्वनि के मदद लिहल जरूरी बा, जइसे स्वर ध्वनि 'अ' के सहायता से व्यंजन ध्वनि क्+अ = क, ख्+अ = ख, ग्+अ = ग, वगैरह के उच्चारण होला। एह स्वर आ व्यंजन ध्वनियन खातिर निर्धारित 'ध्वनि-चिह्न' के स्वर वर्ण आ व्यंजन वर्ण कहल जाला।

वर्ण

वर्ण ओह मूल ध्वनि का लिपि-संकेत के कहल जाला जवना के खंड चाहे टुकड़ा ना होय, जइसे-अ, आ, इ, क्, ख्, ग् वगैरह। भोजपुरी के एगो शब्द बा - 'अदहन'। एह शब्द में अ, द्, अ, ह्, अ, न्, अ सात गो वर्ण बा, जवना में 'अ' के बोले खातिर कवनों दोसर वर्ण के मदद के जरूरत नइखे पड़त। एकर उच्चारण अपने-आप हो जाता, आहि जा द्,ह्,न् के उच्चारण खातिर वर्ण 'अ' के सहायता लेवे के पड़ता। एह उच्चारण के आधार पर वर्ण के दू भेद कइल गईल बा-स्वर वर्ण अउर व्यंजन वर्ण जवना वर्ण के उच्चारण अपने आप होय, ओकरा के स्वर वर्ण आ जवना वर्ण के उच्चारण स्वरवर्ण के सहायता से होय, ओके व्यंजन वर्ण कहल जाला।

स्वर वर्ण

भोजपुरी में मूल स्वर वर्ण के संख्या तीन बा-अ, इ, उ। एह तीनों मूल स्वरन के ह्रस्व स्वर भी कहल जाला आ एही तीनों स्वरन का मेल से आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, दीर्घ आ संयुक्त स्वर वर्ण बनेलें। समान ह्रस्व स्वर के मेल से दीर्घ स्वर बनेला जइसे - आ (अ+अ), ई(इ+इ),

अब भोजपुरी के बोली से भाषा के रूप में हो गइला का बाद आ बिहार आ उत्तर प्रदेश के कई विद्यालय आ विश्वविद्यालवन में एकरा अध्यापन के काम हो रहल बा।

कवनो भाषा के व्याकरण ओकरा भाषा के सर्त प्रयोग करावे के गुर सिखावे ला। एह बात के ध्यान में राख के व्याकरण के जरूरत महसूस भइल। कुछ व्याकरणो लिखाइल बा, बाकिर राज्य शिक्षा शोध संस्थान परिषद् द्वारा भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पाठ्यक्रम तइयार हो चुकल। एह में व्याकरण के कुछ जरूरी अंश लिहल गइल बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पाठ्यक्रम में शामिल करावे में **डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाल**, व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी. बिहार के बहुत बड़ योगदान रहल। साँच कहीं त उनही के कठिन मेहनत आ लगन के कारण ई पाठ्यक्रम में शामिल हो के पुस्तक के रूप में अपने सभन के सामने आइल। एह खातिर **डॉ. पाल** के जेतना प्रशंसा कइल जाव, कम बा।

हमरा आशा बा, भोजपुरिहा क्षेत्र के लोग एह के तहेदिल से अपनाई आ अगर कवनो तरह के कमी रह गइल होखे, ऊ अगिला संस्करण में पूरा हो जाई।

अंत में पाठ्य पुस्तक विकास समिति के निर्माण में लागल भोजपुरी के सभी विद्वान लोगन के प्रति आभार प्रगट करत बानी।

(हसन वारिस)
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार
पटना-800006

कथनी

अर्द्धमागधी से निकलल पूर्वी भारत में फइलल- खास कर बिहार में, कई गो बोलियन के समूह रहल बा आ एही बोलियन के समूह के तरह लगभग बीस बोलियन के समूह ह हिन्दी। एही बोलियन में भोजपुरी, मगही, मैथिली, अँगिका, बज्जिका आदि बा। कुछ समय पहिले तक ई सब बोली के रूप में मानल जात रहे, बाकिर धीरे-धीरे ई सब बोली से भाषा के रूप ले लिहलस। एह दौड़ में मैथिली कुछ आगे निकल गइल। ओकरा बाद भोजपुरी आ दोसर बोलियन के बारी आइल। एह में भोजपुरी बोली तनी आगे हो गइल- एकरा साथे आउरियो चले लागल। बोली से ई सब भाषा के रूप धइलस। एकर आपन लिखित साहित्य भइल अपन साहित्य विधा के हर भाग में लिखाइल। उपन्यास लिखाइल, नाटक आ कहानी लिखाइल, कहे के गरज ई कि एह में सब कुछ लिखाइल। लिखले ना गइल पढ़ाइयो शुरू भइल।

भाषा जब साहित्य से जुड़ जाला, पढ़े-पढ़ावे के माध्यम के रूप में उभर के सामने आवेला त ओह में एकरूपता ले आवे खातिर ओह भाषा-विशेष के व्याकरण के जरूरत पड़ेला, काहे कि व्याकरण भाषा के ऊ चाबुक ह जवन सब जगह से हाँक-हूँक के सही राह पर ले आवे के काम करेला।

अभी भोजपुरी भाषा के संक्रमण काल बा, हालांकि एह भाषा में सब कुछ लिखा चुकल बा, लिखा रहल बा, पढ़ल-पढ़ावल जा रहल बा, व्याकरण के जरूरत पड़ गइल, हालाँकि सगरी जगह के भोजपुरी के एक

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार जुलाई 2007 से राज्य की उच्च माध्यमिक कक्षाओं (कक्षा - XI-XII) हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है । नए पाठ्यक्रम के आलोक में भाषा की पुस्तकों का विकास एस० सी० ई० आर० टी०, पटना द्वारा तथा आवरण डिजाइनिंग एवं मुद्रण बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम के द्वारा किया गया है। यह पुस्तक उसी श्रृंखला की एक कड़ी है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा - I-XII) के गुणवत्तापूर्ण सशक्तिकरण के लिए कृतसंकल्पित शिक्षा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग-निर्देशन के प्रति हम कृतज्ञ हैं ।

हमें आशा है कि यह पुस्तक राज्य की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सिद्ध होगी। एस० सी० ई० आर० टी० के निदेशक के हम आभारी हैं, जिनके नेतृत्व में इस पुस्तक को विकसित किया गया ।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक शिक्षार्थी के ज्ञानवर्धक एवं उपलब्धि-स्तर की वृद्धि में सहायक होगी। संवर्द्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सदैव भविष्य की गोद में सुरक्षित रहती हैं । प्रकाशन एवं मुद्रण में निरंतर अभिवृद्धि के प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके ।

हसनैन आलम भा०प्र०से०
प्रबन्ध-निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक
प्रकाशन निगम लि०

दिशा बोध

श्री हसन वारिस, निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), समिति पटना,बिहार विद्यालय परीक्षा
डॉ॰ कासिम खुरशीद, विभागाध्यक्ष (प्रभारी), भाषा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी. बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोइन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी. बिहार

भोजपुरी पाठ्य पुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष - **डॉ. गुलाबचन्द्र प्रसाद अभय**, पूर्व निदेशक, बिहार भोजपुरी अकादमी, पटना
समन्वयक - **डॉ. सुरेन्द्र कुमार**, व्याख्याता, भाषा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना-800006

सदस्य

1. **डॉ. जयकान्त सिंह**, व्याख्याता सह अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर
2. **डॉ. शिवचन्द्र सिंह**, व्याख्याता, हिन्दी विभाग, आर.पी.एम. कॉलेज, पटना सिटी

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) पटना द्वारा आयोजित समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

1. **श्री सूर्यदेव प्रसाद साह**, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राम विलास गंगा राम कॉलेज, महाराजगंज, सीवान
2. **डॉ॰ गोवर्द्धन सिंह**, अध्यक्ष, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा

अकादमिक सहयोग

1. **श्री इम्तियाज आलम**, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस.सी.इ. आर.टी., बिहार, पटना-800006
2. **श्री ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी**, राज्य साधन सेवी, बी.ई.पी., पटना
3. **श्रीमती बेबी कुमारी**, शिक्षिका राजकीय बालिका उच्च विद्यालय महुआबाग, पटना
4. **डॉ. ज्ञान्ति कुमारी**, शिक्षा संकाय राँची विश्वविद्यालय राँची
5. **श्री देवेन्द्र प्रसाद**, प्रधानाध्यापक, उच्च विद्यालय परसा (सारण)

प्रस्तावना

भोजपुरी हिन्दी भाषा के बिहारी वर्ग के एगो प्रभावशाली भाषा ह। एह उपभाषा वर्ग में मैथिली, मगही, अंगिका आ बज्जिका के स्थान बा, जवन बिहार के कुछ क्षेत्र विशेष में मातृभाषा के रूप में बोलल, समझल जाला। एह में से मैथिली उपभाषा के साहित्यिक रूप के कुछ अधिका विकास भइल, कारण ई रहे कि मैथिलीभाषी एकजुट होके आवाज उठावे में ज्यादा समर्थ बा आ प्राथमिक कक्षा से स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ाई त होते बा, संविधान के अष्टम सूची में शामिल बा आ साहित्य अकादमी से ओकर मान्यता मिल चुकल बा। एह दिसाईं मैथिली भाषा सब तरह से विकसित हो चुकल बा।

बिहारी हिन्दी के उपभाषा आज से दू-तीन दशक पहिले भोजपुरिये एगो बोलिये रहे, हालाँकि भोजपुरी बोले बाला लोगन के संख्या ना बिहार भा भारते में अधिक बा, बलुक विदेश के बहुत देशन में करोड़ों के संख्या में भोजपुरी बोलल जाला। ई दू-तीन दशकन में भोजपुरी खाली बोलिये ना रह गइल, बलुक एगो भाषा के रूप ले लिहलस। साहित्य के हर विधा में विपुल साहित्य के रचना हो रहल बा। आज ई स्थिति बा कि एकर साहित्य भंडार काफी भर चुकल बा आ ई बिहार भा बिहार के बाहर के कवनो क्षेत्रीय भाषा से कम नइखे। फिल्म जगत त एह भाषा के विकास में काफी सहयोग कर रहल बा आ कुछ लोग जे भोजपुरीभाषी नइखे, उहो भोजपुरी सीख रहल बा। विदेश के देशन में मारीशस, फीजी, सूरिनाम, त्रिनिदाद आ अउरियो जगह भोजपुरी भाषा के बोलनिहार के संख्या करोड़न में बा।

भोजपुरी व्याकरण आ रचना

कक्षा XI आ XII खातिर



(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत .

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।



प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 30.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा टेक्स्टबुक प्रेस, पटना-800001 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोम (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर 5,000 प्रतियाँ 20.5 × 14 सेमी. साईज में मुद्रित ।

रूप में ले आइल अभी संभव नइखे। बिहारे में भोजपुरी कई रूप में बोलल जाला-कहीं बा त कहीं बड़वें, कहीं बटे त कहीं बाटे। बिहार का बाहर के भोजपुरी के रूप त अउरियों अलग बा। एह सब के समेट के एक रूप में ले आइल तत्काल संभव नइखे।

इहाँ ई सवाल उठावल जा सकत बा कि तब भोजपुरी में व्याकरण के जरूरते का बा। जरूरत बा, जवन आगे चलकर हिन्दीए खानी एगो सर्वसम्मत मानक रूप धरी, काहे कि पाठ्यक्रम के भइला के रूप में मान्यता खातिर ई जरूरी होई।

प्रस्तुत व्याकरण में व्याकरण के प्रायः सब अंग के लिहल गइल बा आ अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत कइल गइल बा, जवन पाठ्यक्रम का भाषा भइला का नाते रउरा खातिर उपयोगी सिद्ध होई। क्षेत्रीयता के आधार पर भोजपुरी के जो स्वरूप बा, ओह में केनियो से कवनों छेड़-छाड़ नइखे कइल गइल। बदलत समय में ई अपने-आप ठीक हो जाई।

एह व्याकरण में ध्वनि, ध्वनि से बनल शब्द, शब्द से बनल कई गो रूप-क्रिया, काल, वचन, लिंग, अव्यय, वाक्य, ओकर भेद, समास, छंद आ अलंकार के बिल्कुल स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करे के कोशिश कइल बा। ई बात साँच बा कि हिन्दी में अधिकांश संस्कृत शब्दन के प्रयोग कइल गइल बा आ दोसर क्षेत्रीय भाषा में लगभग हिन्दीए के तर्ज पर व्याकरण के रचना भइल बा, तबहूँ भोजपुरी के कुछ आपन ठेठ शब्द बाड़े सँ, जवन आओरियो भाषा में दुर्लभ बा। एह व्याकरण के पुस्तक में ओहू पर विचार कइल गइल बा।

एकरा रचना भाग में हर प्रकार के पत्र लेखन के विषय में बतावले गइल बा। विद्यार्थी लोगन के जानकारी खातिर पटकथा लेखन, रिपोर्ताज, फीचर-लेखन, रेडियोवार्ता, आदि के विषय में जानकारी दिहल गइल बा, जवना से भोजपुरी भाषा के विद्यार्थी लाभ उठाइहन। अगर कवनो तरह के कसर रह गइल होखे त अगला संस्करण में सुधार कइल जा सकेला।

अध्यक्ष
डॉ॰ गुलाब चन्द्र प्रसाद अभय

समन्वयक
डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार

विषय सूची

व्याकरण खण्ड

रचना खण्ड

ऊ (उ+उ)। असमान ह्रस्व स्वर के मेल से संयुक्त स्वर चाहे संधि-स्वर बनेला जईसे-ए (अ+इ), ऐ (अ+ए), ओ (अ+उ), औ (अ+ओ)। भोजपुरी में प्रयुक्त एह दसो स्वर वर्ण के कई-कई गो उच्चारण रूप बा।

एह दसो स्वर वर्ण के तीन भाग में बाँटल गइल बा-

ह्रस्व स्वर वर्ण	-	अ, इ, उ
दीर्घ स्वर वर्ण	-	आ, ई, ऊ
संयुक्त स्वर वर्ण (संधि स्वर)	-	ए, ऐ, ओ, औ
गुण स्वर	-	ए, औ
वृद्धि स्वर	-	ऐ, औ

स्वर वर्ण के अन्य भेद

निरनुनासिकता आ अनुनासिकता के आधार पर स्वर वर्ण के दूगो भेद होला-(क) साधारण (सामान्य) चाहे निरनुनासिक स्वर वर्ण आ (ख) अनुनासिक चाहे सानुनासिक स्वर वर्ण।

जवना स्वर के उच्चारण में मुँह से पूरा-पूरा साँस निकले आ नाक के मदद ना लेवे के पड़े, ओकरा के साधारण चाहे निरनुनासिक स्वर कहल जाला जइसे- अ, आ, ई, ई, उ, ऊ वगैरह।

जवना स्वर के उच्चारण मुँह के साथ-साथ नाको से कुछ हवा (साँस) निकले, ओकरा के अनुनासिक चाहे सानुनासिक स्वर कहल जाला

जइसे- अं, अं। अनुनासिक स्वर के लिखित रूप में स्वर के ऊपर अनुस्वार (-) के चिह्न दिहल जाला आ अनुनासिके स्वर में जब हवा (साँस) नाक से आउरो कम अंश (अनुस्वार के उच्चारण वाला अंशो से कम) में बाहर निकले तब ओकरा खातिर स्वर वर्ण के ऊपर चन्द्रविन्दु (ँ) के चिह्न लगावल जाला। उदाहरण खातिर अनुस्वार वाला स्वर वर्ण-अं (अंगूर, अंतरा) आ चन्द्रविन्दु वाला स्वर वर्ण-अँ (अँतरी, आँठी, अँठइल, अँटिआ)।

एह तरह से भोजपुरी में स्वर वर्ण के कुल संख्या बारह होता-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अँ। अइसे भोजपुरी में ऐकार अउर औकार वाला शब्दन के अभाव बा बाकिर संस्कृत अउर हिन्दी के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में से अउर और वाला शब्दन के प्रयोग हो रहल बा। एकरा अलावे भोजपुरी में 'ऋ' स्वर के अस्तित्व नइखे, बाकिर संस्कृत अउर हिन्दी से आइल शब्दन खातिर 'ऋ' स्वर लिखाय-पढ़ाय लागल बा। अइसे भोजपुरी भाषी एह 'ऋ' स्वर के उच्चारण 'रि' जइसन करेलन।

जाति के आधार पर स्वर वर्ण के दू भाग में बाँटल गइल बा- सजातीय चाहे सवर्ण स्वर आ विजातीय चाहे असवर्ण स्वर।

समान स्थान आ प्रयत्न से उच्चरित स्वर सजातीय चाहे सवर्ण स्वर कहल जाला, जइसे-इ, ई।

अलग-अलग स्थान आ प्रयत्न से उच्चरित स्वर के विजातीय चाहे असवर्ण स्वर कहल जाला जइसे-अ, ऊ।

व्यंजन वर्ण

भोजपुरी में उच्चरित होखेवाला मूल व्यंजन वर्ण के संख्या ***32 (बतीस)*** गो बा- क्, ख्, ग् घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट, ठ्, ड्, ढ्, ढ्, द्, ढ्, म्, क्, द्, ध्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, स्, ह्।

भोजपुरी के अपना मूल शब्दन में ण्, श्, ष् व्यंजन अउर क्ष्, त्र, ज्ञ् संयुक्त व्यंजन वर्ण के अस्तित्व नइखे, बाकी संस्कृत अउर हिन्दी के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में एह व्यंजन वर्ण के प्रयोग हो रहल बा। एकरा अलावे भोजपुरी में प्रयुक्त होखेवाला कुछ खास संयुक्त व्यंजन बाड़े स। जइसे-ङ् ह (खङ्ह, गेङ्हवा), न्ह (रीन्हल, अँउन्हल, मुन्हारे, चोन्हाइल), म्ह (थम्हल, थाम्हल, जम्हुआइल), ल्ह (अल्हर, आल्हा, कुल्ह, काल्ह), र्ह/ई (गर्हल/गईल, मर्हि/मर्हि, लेंर्हा, मार्हा, कोर्ही)।

व्यंजन वर्ण के भेद

व्यंजन वर्ण के उच्चारण में भीतर से आवेवाली हवा (साँस) कंठ से ओठ तक कहीं ना कहीं हलुके रोकावट के जवरे बाहर निकलेले, जवना के आधार पर व्यंजन वर्ण के तीन गो भेद कइल गइल बा- स्पर्श (वर्गीय), अन्तःस्थ अउर उष्म।

व्यंजन वर्ण के अउर भेद

उच्चारण में वायु प्रक्षेप के दिसाई-व्यंजन के दूगो भेद होला- अल्पप्राण आ महाप्राण।

अल्पप्राण- अल्प मतलब थोड़ा आ प्राण मतलब साँस (हवा के शक्ति)। जवना व्यंजन के उच्चारण में बहुते कम वायु के प्रयोग होय चाहे जवना व्यंजन के उच्चारण में 'ह' के मेल ना हो, ऊ अल्प प्राण व्यंजन कहल जाला, जइसे- क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, त्, द्, न्, प्, ब्, म्, य्, र्, ल्, व्। हर वर्गीय व्यंजन के पहिला, तिसरका, पाँचवा व्यंजन आ य्, र्, ल्, व्।

महाप्राण- जवना व्यंजन के उच्चारण में साँस बल अल्प प्राण से कुछ अधिक लागे आ ओकर उच्चारण 'ह्' सहित होय, ऊ महाप्राण व्यंजन कहल जाला, जइसे- ख्, ध्, छ्, झ्, ण्, ढ, थ्, ध्, फ, भ्, स्, ह्, ड्, ह्, न्ह्, म्ह्, र्ह, ल्ह्।

नाद के दिसाईं वर्ण के दूगो भेद होला-घोष आ अघोष। ***घोषवर्ण***- जवना वर्ण के उच्चारण में स्वरतंत्री सब आपुस में झंकृत होय, ऊ घोष वर्ण कहल जाले, जइसे-सब स्वरवर्ण वर्गीय व्यंजन के तीसरा, चउथा, पाँचवाँ व्यंजन, चारो अन्तःस्थ आ ह् (ऊष्म व्यंजन)-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ़, द्, ध्, न्, ब्, भ, म्, य्, र्, ल्, व्, ह्।

अघोषवर्ण- जवना वर्ण के उच्चारण में स्वरतंत्री सब घोष वर्ण के उच्चारण जइसन झंकृत ना होय, ऊ अघोष वर्ण कहाला जइसे-क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, ह।

अक्षर

मुखरता के आधार पर अक्षर 'अ+क्षर' चाहे 'अक्ष+र' के रूप में बोलल जा सकेला। अ+क्षर वाला रूप में 'अ' ना के अर्थ में आ 'क्षर' क्षरण के अर्थ में बा, अर्थात् जवना के क्षरण ना होय, ऊ अक्षरं न क्षरं विद्यात्। क्षयिते न क्षरतीति वाक्षरम्। 'अक्षर' शब्द 'क्षर' आ 'क्षरि' दूनों धातुअन से निष्पन्न मानल गइल बा। एह दूनों से उहे अर्थ निकलेला, जवना के क्षरण ना होय।

कालक्रम से अक्षर के अर्थ बदलत रहल बा। 'अक्षर' 'वाक्'के अर्थ में भी प्रचलित रहल बा। साँच पूंछी त अक्षर शब्द के विधायक तत्व ह। क, ख, ग, घ वगैरह अक्षर ह। क्, ख्, ग्, घ् वगैरह ध्वनि वर्ण ह। एह तरह से व्यंजनन में स्वर के संयोग से अक्षर बनल बा। देवनागरी लिपि आक्षरिक बा।

भोजपुरी के ध्वनि चाहे वर्ण के उच्चारण संबंधी विशेषता

स्वर वर्ण के उच्चारण संबंधी विशेषता

'अ'

भोजपुरी में 'अ' के उच्चारण में मुँह तनी गोल 'क' के होला। भोजपुरी अ के उच्चारण के लमहर विशेषता ई बा कि एकरा ह्रस्व मात्रा के भी विलम्बित उच्चारण होला, जवना से 'ऊ' दीर्घ नियन लागेला, जइसे- अच्छा-आच्छा, बच्चा-बाच्चा, कतना-काताना, फरका-फाराका वगैरह। एकरा में अँतिम 'आ' ध्वनि त पूरा उच्चरण वाला बा बाकी

पहिलेवाला अ ध्वनि विलम्बित उच्चारण के कारण आ के ओर झुकल सुनाता। एह अ के दीर्घ अ चाहे ह्रस्व आ के रूप में समझल जा सकेला। बाकिर अइसन उच्चारण के हू-बहू लिखे खातिर लिपि में ह्रस्व अ के एगो चिह्न बनावे के पड़ी, चाहे अर्ध 'अ' के चिह्न (विकारी-ऽ) के प्रयोग करे के पड़ी, - अऽच्छा, बऽच्चा, कऽतऽना वगैरह। एह तरह के लिपि से सामान्य लेखन में काफी कठिनाई होई एह से भाषा में अच्छा, बच्चा, कतना, फरकाशब्द रूप चले देवे के चाहीं।

'आ'

भोजपुरी में 'आ' के दूगो उच्चारण भंगिमा बा-दीर्घ आ-अउर ह्रस्व 'ऑ'। दीर्घ आ के उच्चारण में जीभ के बीच के भाग बहुत कम ऊपर उठेला। असल में ई केन्द्रीय स्वर ह। एकरा उच्चारण में ओठ गोल (वर्तुलाकार) ना होखे। जइसे-आन्हर, आरा, आम, आज के 'आ'। ह्रस्व 'आ' के उच्चारण स्थान दीर्घ आ के अपेक्षा कुछ ऊपर होला। अंगरेजी के कॉलेज, बॉल आ भोजपुरी के मॉरले, पॉरले जइसन शब्दन में मिलेला। भोजपुरी में ह्रस्व 'ऑ' के उच्चारण भइला के बावजूद लिखे में सामान्य दीर्घ 'आ' चाहे ओकरा मात्रा के व्यवहार कइल उचित होई।

'इ'

ह्रस्व 'इ' के उच्चारण स्थान भोजपुरी दीर्घ ई से कुछ नीचे होला जइसे-फिकिर, मरिचा, लइका, इसराज के इ पूर्ण ध्वनि ह। भोजपुरी में अति ह्रस्व ई के एगो स्थिति बा, जवन विशिष्ट अपूर्ण ध्वनि ह जे प्रायः अनुच्चरित जइसन रहेले, जइसे-जोइ, पोई, टोकि्, ओकि् वगैरह।

'ई'

'ई' संवृत दीर्घ अग्रस्वर ह। एकरा उच्चारण में जीभ के अगिला भाग एतना ऊपर उठ जाला कि कठोर के बहुत निकट पहुँच जाला। भोजपुरी 'ई' के उच्चारण स्थान मूल चाहे प्रधान स्वर ई के तुलना में कुछ नीचे होला, जइसे- ईजत, ईसर, ईश्वर, ईख वगैरह के ई।

भोजपुरी में प्रयुक्त दुअक्षरा तत्सम शब्दन में यदि पहिला अक्षर अकार आ दूसरका इकार के रहला पर दूसरका इकार के उच्चारण ईकार हो जाला आ ओकर वर्तनी प्रसंग आ प्रयोक्ता-भेद से तत्सम आ तद्‌भव दूनों रूप में चलेला-कवि-कबी, छवि-छबी, गति-गती, मति-मती। दू भा तीन अक्षरा शब्दन में पहिला अक्षर इकार आ अंतिम अक्षर अकार रहला पर पहिला इकार के उच्चारण दीर्घ 'ई' जइसन हो जाला, जइसे-दिन-दीन, टिन-टीन, तिल-तील, मिल-मील, चिलम-चीलम, पितर-पीतर वगैरह। बाकी अइसन उच्चारण चाहे वर्तनी से कबो-कबो शब्द के अर्थ बोध में बाधा उत्पन्न हो जाला। शब्द के वर्तनी भेद से अर्थभेद हो जाला-दिन-दीन, सिल-सील, पितर-पीतर वगैरह। अपवाद-क्रिया पद के उच्चारण में क्षिप्रता चाहे तीन अक्षर का शब्दन में बीचवाला अक्षर दीर्घ चाहे प उच्चारण के बलाघात पड़ला पर शब्द के पहिला अक्षर इकारे उच्चरित होला, जइसे-तिगर, निकल, दिनाय, पिसान, सिलेट, निकडल वगैरह।

'उ'

ह्रस्व 'उ' के उच्चारण स्थान दीर्घ ऊ से थोड़ा नीचे होला, एकरा उच्चारण में ओठ गोल त होला, बाकिर ओतना ना जेतना बंगला में होला,

जइसे–ससुर, भसुर, सासु वगैरह। भोजपुरी में अति ह्रस्व 'उ्' के भी स्थिति बा। जवना के उच्चारण में ओठ ह्रस्व 'उ' के अपेक्षा कम गोल होला। बाकी–ह्रस्व 'उ' शब्द के अंत में आ अति ह्रस्व 'उ्' शब्द के आदि में व्यवहृत ना होले, जइसे–उधार, उजार, ऊखि, रूखि, आजु वगैरह। भोजपुरी में अति ह्रस्व 'उ्' के व्यवहार वैकल्पिक रूप से ह्रस्व 'उ' आ दीर्घ 'ऊ' दूनों खातिर होला, जइसे – ऊ उठो, ऊ सूते वगैरह में उ्, सु एकर उदाहरण बा।

'ऊ'

ऊ संवृत दीर्घ पश्चस्वर ह। भोजपुरी के ऊरिद, दूध जइसन शब्द में एकर अस्तित्व पावल जाला।

'ऋ'

'ऋ' संस्कृत के आपन ध्वनि (वर्ण) ह । भोजपुरी में अपना शब्दन में एह ध्वनि के कवनो अस्तित्व नइखे। संस्कृत, हिन्दी के तत्सम–शब्दन के जब भोजपुरी में प्रयोग होला तब एकर व्यवहार कइल जाला बाकिर एकर उच्चारण 'रि' जइसन होला। भोजपुरी व्यंजन में 'ऋ' के मात्रा व्यंजन के नीचे चिह्न के रूप में लागेला चाहे व्यंजन में ह्रस्व इकार के मात्रा के बाद 'र' व्यंजन के प्रयोग होला–जइसे –कृपा–किरपा, सृजन–सिरजन, पृष्ठ–पिरिष्ठ कृष्ण–किरसन/किसुन वगैरह।

'ए'

ए अर्द्ध–विवृत दीर्घ अग्रस्वर ह। एकरा भोजपुरी उच्चारण में जीभ के उठल भाग मूल चाहे प्रधान 'ए' के अपेक्षा कुछ पीछे रहेला। भोजपुरी

में एकर दीर्घ, ह्रस्व आ अति ह्रस्व तीन उच्चारण भंगिमा बा। दीर्घ ए के उच्चारण-एड़ी, लेवा, खेवा, कलेवा, सगरे, अनेरे, देर, छेनी, केहू, एक वगैरह।

भोजपुरी में दीर्घ ए के उच्चारण के स्थिति-दू अक्षर वाला शब्द के आदि में, तीन अक्षर वाला शब्द के बीच में ए आवे अउर आगे-पीछे सब अक्षर ह्रस्व होखे त 'ए' के दीर्घ उच्चारण होला, जइसे-एक, केरा, केहू, एकर, तेतर, तेसर, देवर, नेवर, भदेस, सकेत, हुरपेटल वगैरह।

ह्रस्व 'ए' मूल स्वर 'ए' आ विवृत 'ए' के बीच में बा जइसे-एकहन, एकरार, ढेकुआरि वगैरह।

भोजपुरी के तीन अक्षर वाला शब्द के आदि ए रहे अउर दोसरका चाहे तिसरका अक्षर चाहे दूनों अक्षर दीर्घ होखे त 'ए' ह्रस्व उच्चरित होला, जइसे- केराव, घेराव, नेबार, सेवार, देवरा, केवाड़ी, खेसारी, बेमारी वगैरह। एकरा अलावे चार चाहे चार से अधिका अक्षर वाला शब्द में (हेहरपन, मेहतर आदि में) एकार वाला क्रियापद के बनल प्रेरणार्थक आ कृदन्त रूप में (देखल-देखाई, देखावल, पेरल-पेरावल, पेरवावल, पराई, घेरल-घेराई, घेराव, घेरावल, घेरवावल), पूर्वकालिक क्रिया (देखाऽके, सुनाऽके, समेटाऽके), संयुक्त क्रिया का पहिली क्रिया के आदि आ मध्य में (देखाऽदिहल, हुरपेटाऽईल), बे उपसर्ग वाला शब्द के 'बे' के उच्चारण आदि में ह्रस्व 'ए' होला- बेकऽहल, बेदम, बेबस, बेरहम वगैरह।

अपवाद– जोर देवे खातिर कबो-कबो 'बे' के अतिदीर्घ उच्चारण कईल जाला-बेऽकार, बेकहल, बेदिल वगैरह। अति ह्रस्व 'ए' सहायक ध्वनि ह। एकर अस्तित्व ढेबुआ, केचुआ जइसन शब्दन में पावल जाला। अति ह्रस्व 'ए' के उच्चारण में जीभ के नोख निचला मसूड़ा के छुअत प्रतीत होले। अतिह्रस्व 'ए्' के उच्चारण शब्द के अंत में ना होखे।

'एँ'

डॉ॰ उदयनारायण तिवारी के अनुसार 'एँ' अत्यधिक विकृत स्वर ह आ एकर उच्चारण स्थान उहे ह, जवन मूल स्वर 'एँ' के ह। असल में एकर व्यवहार प्रत्यय के रूप में होला। प्राचीन भोजपुरी में जोर देवे खातिर, एकरा साथे हि अव्यय के व्यवहार होत रहे, बाकी आधुनिक भोजपुरी में एकर लोप हो गइल बा। प्रत्यय-रूप में शब्द के अंत में प्रयुक्त भइला पर ई अतिह्रस्व ए अउर ह्रस्व ए के रूप धारण कर लेवेला।

ए,ओ,औ

ए, ऐ, ओ, औ चारो संयुक्त स्वर (संधिस्वर) हवेस जवना में 'ए' अउर 'ओ' गुण स्वर बा आ 'ऐ' अउर 'औ' बृद्धिस्वर। भोजपुरी उच्चारण में 'ए' अउ़र 'ओ' गुण स्वर के ह्रस्व दीर्घ उच्चारण प्रसंग आ प्रयोक्ता भेद के अनुसार पावल जाला। मतलब एह दूनों गुण स्वर वर्ण के अस्तित्व बा बाकिर 'ए' अउर 'औ' वृद्धि स्वर वर्ण के अस्तित्व भोजपुरी में नइखे।

ए, ऐ, ओ, औ चारो संयुक्त स्वर सन्ध्यक्षर हवे स जवना के उत्पत्ति दू स्वरन के संयोग से भइल बा। वैदिक काल में ए, ऐ, ओ, औ के उच्चारण अइ, आइ, अउ अउर आउ के समान रहे। डॉ॰ शुकदेव सिंह

के अनुसार संस्कृत काल में 'ए' अउर 'औ' दूगो के अस्तित्व रह गइल जवना के उच्चारण 'अइ' अउर 'अउ' हो गइल। पालि, प्राकृत आ अपभ्रंश काल में एह 'ऐ' आ 'औ' के अस्तित्व लगभग समाप्त हो गइल रहे। 'भोजपुरी में 'ऐ' के उच्चारण 'अएँ' आ 'अइ' अउर 'औ' के उच्चारण 'अउ' आ 'अव' हो गइल बा, जइसे-मैल-मइल, जैसे- जइसे, कैसे-कइसे, भैया-भइया, कैलाश-कएलास, मैदा-मएँदा, बैल-बएल, कौआ-कउआ, दौड़-दउर, कौन-कवन, जौन-जवन वगैरह। भोजपुरी में 'औ' के उच्चारण तीन स्वर के मेल 'अउअ' के रूप में भी बा, जइसे- मौत-मउअत वगैरह।

एह तरह से भोजपुरी में एह 'ऐ' अउर 'औ' स्वर के लिपि-चिह्न अनावश्यक बा काहेकि एह के उच्चारण में दू स्वरन के अलग-अलग अस्तित्व सुरक्षित बा। ओइसे हिन्दी के प्रभाव के कारण आधुनिक भोजपुरी में 'ऐ' अउर 'औ' लिपि चिह्न के प्रयोग हो रहल बा।

अनुनासिक स्वर

अँ, आँ, इं, ई, उं, एं, ओं

भोजपुरी में अएँ (ए) के छोड़ के बाकी स्वर के अनुनासिको रूप पावल जाला। इनकर उच्चारण स्थान उहे रहेला बाकी कोमल तालु आ काकल कुछ नीचे झुक जालें। ई अनुनासिक स्वर अर्थ भेदक हवेस। मतलब अनुनासिक स्वर से अर्थ में बदलाव आ जाला, जइसे-तागा (डोरा)-ताँगा (घोड़ा गाड़ी), विधना(विधाता)-विंधना (छेदल), खाटी-(चारपाई), खाँटी-(खरा), गाज-(फेन), गाँज-(ढेर), पूछ-(पूछल

क्रिया), पूँछ (जानवर के पोंछ), गोड़-(पैर), गोंड़-(एगो खास जाति), भाग-(हिस्सा) भाँग-(नशा के वस्तु) वगैरह।

व्यंजन के उच्चारण संबंधी विशेषता

क् से ह् तक भोजपुरी में बत्तीस गो मूल व्यंजन ध्वनि बा जवना के उच्चारण स्वर के सहायता से होला। एह में टवर्गी 'ण्' आ ऊष्म 'श्' अउर 'ष्' के अस्तित्व नइखे। ण्, श, के स्थान पर न् आ स् व्यंजन के उच्चारण होला आ 'ष' के स्थान पर प्रायः 'ख' के उच्चारण होला। एकरा अलावे भोजपुरी में प्रायः 'ल' के स्थान पर 'र' व्यंजन के उच्चारण पावल जाला। जवना वजह से भाषाविद लोग भोजपुरी में 'न् स् र' ध्वनि केन्द्र के भाषा मनले बा। जइसे-कान (कर्ण), सोना (स्वर्ण), सांत (शांत), गनेस (गणेश), बाम्हन (ब्राह्मण), केरा (केला), नरियर (नारियल), कपार (कपाल), अंगुरी (अंगुली), गारी (गाली), पीतर (पीतल), धूर (धूल), मछरी (मछली), पुतरी (पुतली) वगैरह। अइसे मागधी सहित हिन्दी आदि अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में ण्, श्, ष् आ ल् व्यंजन के प्रयोग खूब हो रहल बा।

क्ष,त्र,ज्ञ

प्राचीन भोजपुरी में क्ष्, त्र्, ज्ञ् व्यंजन के लिपि-चिह्न आ ओकर उच्चारण अस्तित्व नइखे। संस्कृत, हिन्दी वगैरह भाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी के तत्सम, तद्भव शब्दन में एह ध्वनि चिह्न के प्रयोग हो रहल बा। अइसे एह तीनो मूल संयुक्त व्यंजन के उच्चारण में ध्वनि परिवर्तन के साथ कहीं-कहीं एक आ कहीं-कहीं दू गो स्वतंत्र व्यंजनन के

अस्तित्व पावल जाला आ ओकर उच्चारण स्थान ओह स्वतंत्र व्यंजनन के उच्चारण स्थान होला जइसे:-'**क्ष**'-परीक्षा-परीच्छा, शिक्षा-सिच्छा, सीख, क्षत्र-छतर, कक्षा-कच्छा, साक्ष्य-साख, पक्ष-पख, नक्षत्र-नछत्तर, भिक्षा-भिच्छा, भीख, वगैरह। '**त्र**'-पत्र-पतर, क्षत्र-छतर, पुत्र-पुतर, इत्र-इतर, पवित्र-पवितर, विचित्र-विचितर वगैरह। '**ज्ञ**'-संज्ञा-संग्या, विज्ञान-बिग्यान, ज्ञान-ग्यान, ज्ञानी-ग्यानी वगैरह।

अइसे संस्कृत-हिन्दी वगैरह भाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी के तत्सम आ तद्‌भव शब्दन में क्ष,त्र, ज्ञ के प्रयोग कइल जा रहल बा। र्‌ह, ल्ह, न्ह, म्ह वगैरह संयुक्त व्यंजन सहित क्क, म्म, ल्ल, प्प वगैरह द्वित्व चाहे युग्मक व्यंजन उच्चारण भोजपुरी ध्वनि प्रकृति के आपन विशेषता ह।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'उ' कवन वर्ण ह।

(क) व्यंजन वर्ण (ख) स्पर्श व्यंजन वर्ण

(ग) दीर्घ स्वर वर्ण (घ) ह्रस्व स्वर वर्ण

2. भोजपुरी में मूल व्यंजन वर्ण के संख्या केतना बा।

(क) बतीस (ख) चउसठ

(ग) पचास (घ) पचीस

3. **कवर्ग के उच्चारण स्थान ह।**

(क) दाँत (ख) कंठ

(ग) ओठ (घ) तालु

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'ध्वनि' का ह। एकर कए गो भेद होला।
2. वर्ण के परिभाषा देत ओकरा भेदन के बारे में बताईं।
3. स्वर वर्ण चाहे व्यंजन वर्ण के परिभाषित करत उनका भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

दीर्घ उत्तरीय

1. वर्ण के परिभाषा देत भेजपुरी के स्वर आ व्यंजन वर्ण के बारे में बताईं।
2. भोजपुरी वर्ण सब के उच्चारण स्थान के बारे में फरिआ के लिखीं।

अध्याय 2

शब्द विचार

भोजपुरी, मैथिली, हिन्दी वगैरह भाषा के व्याकरण में शब्द के सामान्य परिभाषा पावल जाला कि ध्वनि (वर्ण) चाहे ध्वनियन (वर्णन) के मेल से बनल अर्थबोधक ध्वनि चाहे वर्ण समुदाय के शब्द कहल जाला। शब्द अकेले आ कबो आउर शब्दन के साथ मिल के आपन अर्थ उजागर करेला।

शब्द के प्रकार

मूल, बनावट, रूपान्तर, प्रयोग वगैरह के आधार पर शब्द के कई प्रकार में बाँट के अध्ययन कइल जाला, जइसे-मूल के आधार पर भोजपुरी शब्दन के पाँचगो प्रकार बा-ठेठ, ततसम्, तद्भव, देशज आ विदेशज।

ठेठ शब्द- भोजपुरी के ठेठ शब्द ओह शब्द के कहल जाला जवन भोजपुरी छोड़ के आउर भाषा में ना पावल जाय। एह ठेठ शब्दन के देशज आ क्षेत्रीय शब्द भी कहल जाला, जइसे-झाँखी, थूक, छाल, बंडेरी, ढेंकी, पठरू, धुरखुरा वगैरह।

ततसम् शब्द- 'ततसम्' शब्द तत् आ सम के मेल से बनल बा। तत् माने ओकरा आ सम माने समान मतलब ओकरा (संस्कृत) शब्दन के समान शब्द के प्रयोग जब भोजपुरी में होला ओकरा के तत्सम शब्द कहल जाला, जइसे-मन, आज्ञा, कमल, गीत, नगर, फल, भय वगैरह।

तद्भव शब्द- तद्भव शब्द 'तत्' आ 'भव' के मेल से बनल बा। तत् के अर्थ होला ओकरा आ भव के अर्थ होला उत्पन्न भइल चाहे विकसित भइल। एह तरे संस्कृत ब्दन से विकसित भइल शब्दन के तद्भव शब्द कहल जाला जइसे-अँगोछा (सं० अंगोञ्छ), आग (अग्नि), आठ (अष्ठ), उचाट (उच्चाट), खजूर (खर्जूर), खीर (क्षीर), घंटी (घंटिका), जीभ (जिह्वा), ताँत (तन्तु), दही (दधि), दूध (दुग्ध), धरती (धरित्री), हाथ (हस्त), काम, करम (कर्म), मीठ (मिष्ठ), धाम (धर्म) वगैरह।

देशज (देशी) शब्द- भोजपुरी के मौलिक शब्दन के देशज चाहे ठेठ शब्द कहल जाला, जइसे-बाप, खोंता, जूता, सोंटा, टीक, छान्ही, मरेठा, चाभुक, लोटा बगैरह।

विदेशज (विदेशी)- अंगरेजी, अरबी, फरसी वगैरह विदेशी भाषा के शब्द जवन भोजपुरी में प्रयुक्त होला, ओकरा के विदेशज कहल जाला, जइसे-खुदा, नमाज, सरकार, खून, गवाह, शायरी, अंगूर, चुकन्दर, चीलम, शराब, गुलाब, गरदन, जान, दिमाग, कमीज, वगैरह (फारसी), अल्ला, ईद, कुरान, गुनाह, फकीर, जमादार, इंसाफ, कानून, जमानत, नकल, कागज, किताब, अनार, अमरूद, अफीम, कसाई, (अरबी), चर्च, पोप, कलक्टर, अपील, पास, फेल, टिकट, पोस्ट-ऑफिस, कोट, टॉफी, यूरिया वगैरह (अंगरेजी)।

रचना चाहे बनावट के आधार पर शब्द के तीनगो भेद होला- **रूढ़, यौगिक** आ **योगरूढ़** ।

रूढ़- जवना शब्द के खंड के कवनो अर्थ ना होय, ऊ रूढ़ शब्द कहल जाला, जइसे-घर, गाछ, फर, डर, काम, नाम, धाम, चाम, पर वगैरह। घर के 'घ' आ 'र', गाछ के 'गा' आ 'छ', फर के 'फ' आ 'र' के अलग से कवनो अर्थ ना होखे।

यौगिक- जवना शब्द का खंड के अलग-अलग अर्थ होय, ऊ यौगिक शब्द कहल जाला, जइसे - मालगोदाम, भनसाघर, भंडारघर, डाकघर, पुलिसचौकी वगैरह। एह में माल आ गोदाम, भनसा आ घर, भंडार आ घर, डाक आ घर के अलग-अलग अर्थ बा।

योगरूढ़- जवन शब्द यौगिक भइला के बावजूद अर्थ के विचार से अपना सामान्य अर्थ के छोड़ के कवनो परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक होय, ऊ योगरूढ़ कहल जाले, जइसे- पनसोखा (इन्द्रधनुष), हरधर (बलराम) वगैरह।

रूपान्तर के आधार पर शब्द के दूगो भेद होला- विकारी शब्द आ अविकारी शब्द।

विकारी शब्द- जवना शब्द के रूप लिंग, वचन, कारक, काल आ पुरुष के अनुसार बदल जाय, ऊ विकारी शब्द कहाला। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ विशेषण विकारी शब्द ह।

अविकारी शब्द- जवना शब्द के रूप लिंग, वचन, काल पुरुष, कारक के अनुसार ना बदले, ऊ अविकारी शब्द कहाला जइसे-अव्यय, क्रियाविंशेषण, विभक्ति, परसर्ग समुच्चयबोधक, संबंध बोधक, विस्मयादि-बोधक अविकारी शब्द ह।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'झाँखी' भोजपुरी के कइसन शब्द ह।

(क) तत्सम (ख) तद्भव

(ग) ठेठ (घ) विदेशी

2. 'भनसाघर' भोजपुरी के शब्द ह।

(क) योगरूढ़ (ख) रूढ़

(ग) मौखिक (घ) यौगिक

3. अविकारी शब्द के कोटि में आवेवाला शब्द ह।

(क) क्रियाविशेषण (ख) संज्ञा

(ग) क्रिया (घ) सर्वनाम

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शब्द के परिभाषा देत बनावट के आधार पर शब्द-भेदन के परिचय दीं।
2. मूल के आधार पर शब्द भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।
3. रूपान्तर के आधार पर शब्द-भेदन के परिचय दीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शब्द के परिभाषित करत ओकर विविध प्रकार के उदाहरण सहित परिचय दीं।

सहचर शब्द

सहच्चर शब्द के भोजपुरी में बहुते बा। एह के दूगो रूप भोजपुरी में प्रचलन में बा–समानार्थ बोधक सहचर आ विपरीतार्थक बोधक सहचर। एह के कुछ सूची नीचे दिहल जा रहल बा।

समानार्थ बोधक सहचर

आदर–मान, लकड़ी–काठी, कपड़ा–लाता, इज्जत–पानी, घर–दुआर, रूपया–पइसा, बाल–बच्चा, घास–पात, पता–ठेकान, पुरखा–पुरनिया, धइल– धरावल, नेह–नाता, कनिया–बहुरिया, किन–बेसाह, नेग–चार, बीआ–बाल।

विपरीतार्थ बोधक सहचर

अइसहीं कुछ विपरीतार्थ बोधक सहचर शब्द बांड़न सँ। एकरो लमहर सूची बा। नीचे कुछ उदाहरण दिहल जाता–

लेन–देन, ऊँच–नीच, बनल–बिगड़ल, आगा–पाछा, धनी–गरीब, आकाश–पताल,, हकासल–पियासल, लरम–गरम, सहयोगी–सहचर, कागज–पत्तर, दाना–पानी, इंटा–खपड़ा, रकम–पताई, खेत–खरिहान, पथ–पानी, साँप–गोजर, कुता–बिलाई, सूझ–बूझ, दूध–दही, जर–जमीन, हारल–थाकल, फूल–पत्ती इत्यादि।

भोजपुरी में कुछ आनुप्रासिक सहचर शब्द बाड़न सँ। एकर कुछ उदाहरण बा–

बोहनी–बट्टा, काम–धाम, अखोर–बखोर, हरवा–हथियार,

बर-बरिआत, पर-पाहुन, चासा-बासा, चिरई-चुरूंग, धूम-धड़ाका, तड़क-भड़क, आनि-बानी, टेढ़-मेंढ़ इत्यादि।

कुछ विशेषार्थ बोधक सहचर

बोल-चाल, सेवा-खरचा, आगा-पाछ, अह-जह, तगड़-बगड़, अकट-बहेर, आउँज-गाउँज इत्यादि।

बोध-प्रश्न

1. नीचे लिखल के सहचर शब्द बनाईं।

नया ....

भरल ....

उधार ....

पोथी ....

पता ....

घर ....

दूर ....

बूढ़ ....

नीमन ....

ऊँच ....

आकाश ....

आइल ....

दाना ....

रकम ....

लरम ....

आग ....

हरवा ....

आऊँज ....

तगड़ ....

खेवा ....

2. नीचे लिखल में जे ठीक होखे, ओपर चिह्न (✓) लगाईं।

गाछ–पौधा / बिरिछ / बगीचा / ताड़ /

उल्टा / सोझा / सीधा / टेढ/ जमीन / कुदाल /

बोल / बात / खान / चाल / माला / धप धप

3. नीचे लिखल कवना तरह के सहचर शब्द ह।

अकट–बहेर ....

धुँआ–धुकुर ....

खेत–खरिहारन ....

पर–पाहुन ....

मर–मिठाई ....

4. अपना पाठ्य पुस्तक से दस गो सहचर शब्द चुन के लिखीं।

....

....

पर्यायवाची शब्द

कुछ शब्द अइसन होलेस, जवना के एके गो अर्थ वाला एह सब के के पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहल जाला।

इहाँ कुछ पर्यायवाची शब्द दिहल जाता–

मेघ – घटा, बदरी, बादल

रसरी – रस्सी, जोर, जेवर,

खम्हा – खंभा, थुनी,

सूरूज – सूरज, गोसाईं, आदित

छान्ह – छप्पर, छान्ही

आँख – नजर, नयन, नैन, चितवन

गरदन – गर्दन, घेंट, नट्टी

गोड़ – पैर, चरण, टाँग, टँगड़ी

गाछ – पेड़, विरिछ

जजात – फसल, फसिल, टासिल

डाढ़ – डाल, डाढ़ी, डेहुँगी

नियरा – नगीच, नजदीक, भीरी, लगे

चिरई – चिड़िया, पखेरू, पंछी

चाँद	–	चनरमा, चन्दा
बेयार	–	हवा, बेतासि
मेहरारू	–	औरत, जनाना, जनीजात
जोरू	–	मेहरारू, पत्नी, घरनी, मेहर, धनिया
बेटा	–	पुत्र, पूत, पूता
लइकी	–	लड़की, छंउड़ी, बेटी, बिटिया, धिया
लइका	–	लड़का, छौंड़ा, टेल्हा, लरिका, बेटा
बछरू	–	बाछा, बछड़ा, लेरू
बूता	–	बल, काबू, तागद, परभूता
कुइयाँ	–	इनार, कुआँ
गोजी	–	लाठी, लउर,
डंटा	–	लबरा, पैना, सोटा

बोध प्रश्न

1. नीचे लिखल में बताईं कि कवन शब्द कवना के पर्यायवाची ह।

1. मेघ, रसरी, निउरा, सोझा, सामने, सुरूज, चनरमा, नजर, पंछी, बिजुरी, लइका, टाँग, जोरू, घरनी, मुन्हार, गदबेर, लबेदा, पैना, चारपाई, खटिया, इनार, कुइआँ।

....

....

....

....

2. सही पर (✓) निशान लगाईं।

दिअरी के पर्यायवाची शब्द ह–

देवाल/आन्ही/खटिया/दीआ/दूर/छप्पर

3. नीचे दिहल शब्दन के दू-दू गो पर्यायवाची शब्द लिखीं।

स्त्री – ...., ...

संतान – ...., ...

लइकी – ...., ...

फसल – ...., ...

पत्नी – ...., ...

दीवार – ...., ...

4. बताईं नीचे लिखल कवन कवना शब्द के पर्यायवाची ह।

गदबेर, लउर, बूता, बछरू, सटका, छेरी, चिरकुट, हरिअरी, जनानी, नगीचा, चिरई, पूत, टेल्हा, लरिका, कान्ही, बउखी।

विपरीतार्थक शब्द

हिन्दीए अइसन भोजपुरियो में उल्टा अर्थ देवे वाला बहुते शब्द बा। कुछ उदाहरण नीचे दिहल गइल बा–

अच्छा	–	खराब	ठंढा	–	गरम
बिअही	–	उघड़ी	समहर	–	एकहर
सोझा	–	अलोता	करिया	–	गोर
आगा	–	पाछा	लमहर	–	छोट
बाप	–	मतारी	बनल	–	बिगड़ल
आपन	–	दोसर	आइल	–	गइल
गलती	–	सही	मालिक	–	नोकर
राँड़	–	एहवाती	छोट	–	बड़
समेटाइल	–	छितराइल	नेकी	–	बदी
अन्हार	–	अँजोर	नीमन	–	बाउर
इमरित	–	जहर	ऊँचा	–	खाला
घटी	–	नफा	दहार	–	सुखार
अपजस	–	जस	ओदा	–	सूखल

वैरागी	गिरहस्त	मनभरू	ललाइल
अबर	बरियार	सतवंती	बेसवा
खिनउरी	देहगर	गहिर	छितनार
मोट	पातर	देश	परदेश
नगद	उधार	जनम	मरन
जुआइल	अजू	मीठ	तीत
अजुराह	फुरसताह	नकली	असली
नियरा	दूर	उखाड़ल	रोपल
निगचा	दूर	सेंकुरल	फइलल
बिऊहल	उसरल	आमदनी	खरच
बसल	उजड़ल	सोझ	टेढ़
जिनगी	मउअत	जिऊतार	मुअतार

बोध प्रश्न

बताईं

1. खराब के विपरीतार्थक ह।

उघड़ी / अलोता / अच्छा

2. नीचे लिखल के विपरीतार्थक शब्द लिखीं।

एहवाती	दोसर ....
छितराइल	सही ....
अँजोर	जहर ....
जस	गिरहस्त ....
देहगर	मोट ....
तीत	छितनार ....
अजू	उधार ....
बिगड़ल	जिअतार ....
गरम	आइल ....
सुखार	जनम ....

3. पर्यायवाची का ह, एक वाक्य में लिखीं।

4. नीचे लिखल शब्दन के दु-दु गो पर्यायवाची लिखीं।

कुता, लइकी, फइल, साँझ, डंडा, घास, दीपक, खाट, सटका, मेहरारू, इनार, बेयार।

शब्द विचार 30

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द अइसन होला जे सुने में त एके जइसन लागेला, बाकिर ओकरा अर्थ में बहुत अंतर होला। अइसने शब्द के श्रुतिसम भिन्नार्थक कहल जाला। नीचे दिहल शब्दन से एकर अंतर साफ हो जाई।

1. गोर - साफ चमड़ा वाला

   गोड़ - पैर, टाँग

2. चवर - खेत के खाली क्षेत्र

   चँवर - पोंछ के आकार के बनल लम्बा चीज

3. जवर - साथ

   जवरा - पवनी-पसारी के मिले वाला अनाज के हिस्सा

4. छावरा - मछरी के छोट बच्चा

   छँवड़ा - लइका

5. तोर - तोहार

   तोड़ - एक तरह के पातर रसरी

6. दवड़ - जगह

   दउड़ - दउड़े के काम

7. पाट - नदी के चौड़ाई

   पाठ - पढ़े-लिखे के चीज

8. पाटी – खटिया के लम्बाई–चौड़ाई में लागल लकड़ी

पाठी – बकरी के बिना बिआइल बच्चा

9. बीरी – पान के छोटा बीड़ा

बीड़ी – सूखल लंबाई से बनल चीज़

10. वीर – बहादुर, बली

बीड़ – छप्पड़ छावे के सामान

11. बास – बसेरा

बाँस – एगो लम्बा मजबूत पौधा

12. भुसउल – भूसा राखे के जगह

भुसकउल – बेकार के लमहर आकार

13. राड़ – उदण्ड

रार – झगड़ा, तकरार

14. लवका – बादल में चमके वाली बिजुरी

लउका – कद्दू

15. सवर – संयोग

सबर – बड़हन भाग

16. हार – पराजय

हाड़ –हड्डी

17. ठूरी - भूजल अनाज के बिना फूटल दाना

ठूढ़ी - ठुड्ढी

18. धोवा - मिल में धोआइल नया कपड़ा

धोई - छिलका निकला दाल

19. डोली - कनिया के ढोवे वाला सवारी

ढ़ोली - दू सई पान के संख्या

20. सोर - जड़

सोरी - पातर कंद

21. कोर - किनारा

कोरा - गोदी

22. कवर - खाये के एगो मात्रा

कवरा - कुत्ता के देवे वाला भोजन

23. कमर - डाँर

कम्मर - कम्बल

24. कतार - पाँती

कटार - एगो हथियार

बोध प्रश्न

1. नीचे लिखल शब्दन के विपरीतार्थक शब्द लिखी।

खाल .... पाछा ....

तातल .... घिरना ....

लमहर .... समहर ....

करिआ .... बिगड़ल ....

अँवासल .... दोसराइत ....

नोकर .... विरीतार्थक ....

2. नीचे दिहल शब्दन में से चुन के सही विपरीतार्थक पर (✓) निशान लगाईं।

उजर–बिगड़ल / फइलल / करिआ / तातल / पाछा

बाउर– माहुर / घटी / रूखड़ / अकसरूआ / नीमन

लगे– नियरा / सगही / पिछुआर / गलती / राँड़

गिरहस्त– कोत / अपजस / वैरागी / सूखा / उसर

अबर–अस्थिराह / खोंढ़ / अनकर / बरियार / तंग

3. **विपरीतार्थक शब्द चुनीं आ एह से एक-एक वाक्य बनाईं।**

सकेत ....

पुन्न ....

बाय ....

दहार ....

करिआ ....

एहवाती ....

अन्हार ....

छितराइल ....

मजगूत ....

नया ....

अलोता ....

अकसरूआ ....

मालिक ....

गलती ....

अनेकार्थक शब्द

कुछ शब्दन के अर्थ एक से जादा होला, अइसन शब्द अनेकार्थक कहाला। हिन्दीए के तरह भोजपुरियो में अइसन ढेर शब्द बाड़न स। कुछ उदाहरण नीचे दिहल जाता।

कल - समय के बारे में (कल-बीतल, कल-आवे वाला)
मशीन के पार्ट-पुर्जा, नल, कल-पुर्जा

कन - चाउर के टुकड़ा, कंद,

काग - एगो करिया चिरई, ठेपी

टाप - घोड़ा के पैर के आवाज, मछरी मारे के एगो सामान

पाग - चीनी गरम क के बनावल रस, पगड़ी, मुरइठा

पाल - नाव पर हवा के दिशा रोकेवाला बड़हन परदा, पालल

बीछी - बिच्छू, केरा के छोट पौधा

लीख - ढील (माथा में पड़े वाला), बैलगाड़ी के राह

सउरी - प्रसूति घर, एक तरह के मछरी

साम - मूसर के गोल लोहा के छल्ला, साँझ

चाल - चले के ढंग, आदत

सान - छूरी-कैंची के धार तेज करे वाला सामान, घमंड

चीक - मांस बेचे वाला, तीसी के बनल परदा।

एही तरह बहुत अइसन शब्द बा, जवना के एक अर्थ के अलावा आउरो अनेक अर्थ में प्रयोग होला।

शब्दांश-उपसर्ग-प्रत्यय

कुछ शब्दांश अइसन होला जे कवनो शब्द के पहिले लग के ओकरा अर्थ में थोड़ा परिवर्तन क देला-ऊ **उपसर्ग** कहाला। कुछ शब्द जे कवनो शब्द के बाद में लग के ओकरा अर्थ में परिवर्तन क देला-ऊ **प्रत्यय** कहाला।

उपसर्ग

ऊ शब्दांश जवन शब्द के पहिले लागेला। कबो-कबो प्रत्यय लगला से मूल शब्द में परिवर्तन हो जाला।

भोजपुरी में अन, अ, अति, पर, पु, कि, सुनर, उध, दु, कु, स, तऱ्, अव, अध, ना, भर, कम, बिन आदि उपसर्ग लागेला। जइसे-

अन-अनजान, अ-अथाह, बे-बेमन, बेमतलब, नि-निदरदी, कु-कुअन्न, स-सपूत, अध-अधमरू, भर-भरसक, भरपूर, कम-कमखोराक, कमजोर, बिन-बिनबोलावन इत्यादि।

विदेशी भषन के उपसर्ग-

अल, खुश, बद, ला, सर, हम, इत्यादि-जइसे- अल- अलरजी, खुश-खुशहाल, बद-बदमाश ला-लावारिस, सर-सरकार, हम-हमजोली आदि।

अइसन ढेर उपसर्ग बा, जवन भोजपुरी में प्रयोग होला।

बोध प्रश्न

1. शब्दांश का कहाला? उदाहरण के साथ लिखीं।
2. उपसर्ग आ प्रत्यय में का अंतर बा। समुझा के लिखीं।
3. नीचे लिखल उपसर्गन से शब्द बना के वाक्य में प्रयोग करीं।
   अध, सु, कम, दिन, स, कु, नि, हु, पर, बे, अन, कु, अ, भर।
4. नीचे कुछ विदेशी भषन के उपसर्ग बा, ओकरा से शब्द बनाके अपना वाक्य में प्रयोग करीं।
   दर – ....
   बद – ....
   हम – ....
   खुश – ....
   ला – ....
   सर – ....
5. नीचे लिखल उपसर्ग से बनल शब्दन में से उपसर्ग चुनीं।
   दाढ़ी – ....
   एरा – ....
   देशी – ....

आऊँ – ....

अउती – ....

आउत – ....

आरी – ....

आइन – ....

एलू – ....

खोर – ....

प्रत्यय

भोजपुरी भाषा में ढेर प्रत्यय बा, जवन कवनो शब्द के अंत में जुड़ के नया शब्द बना देला। ई संज्ञा से कर्तृवाचक, सर्वनाम से संज्ञा, संज्ञा से विशेषण, विशेषण से संज्ञा, संज्ञा, से संज्ञा विशेषण से विशेषण, ऊनवाचक संज्ञा बनावें में मदत करेला। एकरा अलावा भोजपुरी में कुछ स्त्री प्रत्ययो मिलेला।

नीचे कुछ उदाहरण दिहल जाता-

सर्वनाम से संज्ञा-आइल-अपनाइत

संज्ञा से कर्तृवाचक संज्ञा- अइत-डकइत-डाका

हार-चूड़ी-चूड़ीहार, लकड़ी-लकड़ीहार।

हर-मुस से मुसहर, बाप से बपहर, मामा से ममहर।

संज्ञा से विशेषण

कातिक से कतिका, आइन-धुआँ से धुआँइन आदि।

अइसन ढेर शब्द बाड़न सँ।

विशेषण से संज्ञा

ई उपसर्ग- पियर से पिअरी, बदमाश से बदमाशी।

अई-थेथर से थेथरई, बुरबक से बुरबकईं

आहट-गरम से गरमाहट, भला से भलमनसाहत।

अवती-बूढ़ से बुढ़उती।

संज्ञा से संज्ञा

अई-लरिका से लरिकाई, साधु-सधुआई आरी-भाई-भइआरी, काजर-कजरवटा। हन-तल-तेलहन, दाल-दलहन हर- मामा-ममहर, दादा-ददहर

ई उदाहरण खातिर दहिल जाला। एकरा अलावा एइसन ढेर प्रत्यय बा, जवना से संज्ञा से संज्ञा बनावल जाला।

विशेषण से विशेषण

लाल-ललछहूँ, मइल-मलछहू-छहूँ-प्रत्यय

वाँ-पांच-पचवाँ, नौ-नउवाँ,

आठ-अठवाँ आइल-गरम-गरमाइल, बूढ़-बूढ़ाइल, जुवान-जुवाइल औठा-पहिल-पहिलौठा, आ-साठ से साठा आदि।

स्त्री प्रत्यय

कुछ शब्द अइसन होला जवना के पुल्लिंग शब्द में स्त्री-प्रत्यय लग के स्त्रीलिंग हो जाला। कुछ उदाहरण देखीं-

आइन - मिसिर से मिसराइन, मुंशी से मुंशिआइन।
आनी - जेठ से जेठानी, सेठ से सेठानी, देवर से देवरानी।
नी - घर से घरनी, डाक्टर से डाक्टरनी, चोर से चोरनी
इन - धोबी से धोबिन, कहार से कहारिन
ई - छोटका से छोटकी, बेटा से बेटी, मामा से मामी।

कृत प्रत्यय

क्रिया के मूल रूप या धातु में लागे वाला प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहाला। एह से बनल शब्द कृदंत कहाला। भोजपुरी में अइसन ढेर शब्द बा। कुछ उदाहरण नीचे दिहल जाला-

कृदन्त संज्ञा

आरी - पूछल से पुछारी, पूजल से पुजारी।

आ - घेरल से घेरा, छेंकल से छेंका

आई - पढ़ल से पढ़ाई, छपल से छपाई, रोपल से रोआईं

आवन - परिछल से परिछावन, चुमावल से चुमावन

आँव - पोसल से पोसाँव

ऊ - झाड़ल से झाड़ू

आप - मिलल से मिलाप, छापल से छाप।

अउअल - बुझावल से बुझउअल, मनावल-मनउअल।

कृदन्त विशेषण

आइल-काटल से कटाइल, पीटल से पिटाइल।

अकड़-पीअल से पिअक्कड़, घूमल से घूमक्कड़, बूझल से बुझक्कड़

एरा-लूटल से लुटेरा

इयल – सड़ल से सड़ियल, मरल से मरिअल

आऊ – टिकल से टिकाऊ, उपजल से उपजाऊ, बेचल से बिकाऊ

उका – चोरावल से चोरउका, देखावल से देखउका

वैया – सुनल से सुनवैया, गावल से गवैया, देखल से देखवैया।

बोध प्रश्न

1. नीचे दिहल प्रत्यय के कर्तृवाचक संज्ञा बनाईं।

आड़ी – ....

आटा – ....

आर – ....

हार – ....

अनिया – ....

ई – ....

हर – ....

2. नीचे लिखल संज्ञा से अलग-अलग विशेषण बनाई।

आ, आइल, आहुत, आउत, इआ, वइआ, गद, उई, आह, ऊ, अई,

प्रत्यय के प्रयोग करीं-जैसे-पानी से पनिया।

3. **ई, अई, आइत, आइट, अउती उपसर्ग से विशेषण शब्द, संज्ञा बनाईं। जैसे-पिअर-पिअरी।**

अई, अउती, आटा, आरी, औड़ी, औटा, आका, आवता, हन, ई, हर, आटा, इका, वा, आ, आर, आरी, एला, आस, पा प्रत्यय के संयोग से तीन-तीन गो संज्ञा से संज्ञा बनाईं, जैसे-मामा-ममहर।

4. **नीचे लिखल प्रत्यय जोड़ के विशेषण से विशेषण शब्द बनाईं। जैसे-प्रत्यय-वाँस से सतवाँस।**

सर .... आइल ....

वाँ .... आउत ....

ठा .... औठा ....

हन .... उआ ....

हा .... आ ....

ई .... छहूँ ....

5. **नीचे लिखल शब्दन से प्रत्यय अलग करीं-**

करिअई .... दोसराइत ....

बुढ़उती .... चुनउटी ....

तिलउरी	....	तेलहन	....
बपहर	....	सन्नाटा	....
जजमनिका	....	खुशियाली	....
गउँवा	....	अधेला	....
पहिलवँठा	....	मइलछहूँ	....
सातवाँ	....	गरमाइल	....
खटहा	....	साठा	....
गँवारपन	....	अधेला	....
बहिनपा	....	बचवा	....
भतरा	....	दुधार	....
मुंशियाइन	....	दुबाइन	....
पड़ाइन	....	चोरनी	....

अध्याय 3

संज्ञा

संस्कृत व्याकरण में 'नाम' शब्द के प्रयोग पद के जवना भेद चाहे अर्थ खातिर कइल जाला ठीक ओही अर्थ में भोजपुरी, मैथिली, हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सब के व्याकरण में 'संज्ञा' शब्द प्रचलित बा, बल्कि कवनो पदार्थ के नामवाचक शब्द खातिर 'संज्ञा' शब्द रूढ़ हो गइल बा।

अँग्रेजी में 'संज्ञा' चाहे 'नाम' खातिर 'नाउन' चाहे 'नेम' शब्द के प्रयोग होला जवना के 'नेम ऑफ एनीथिंग' मतलब 'कवनों चीज के नाँव' कह के परिभाषित कइल जाला। दरअसल 'नाउन' चाहे 'नेम' अंगरेजी के एके धातु से बनल बा आ ई दूनो शब्द संस्कृत 'नाम' के ही बदलल रूप ह आ जवना नाम से कवनो वस्तु के सम्यक् ज्ञान-पहचान चाहे बोध होला ओकरे के ओह वस्तु के संज्ञा कहल जाला। सम् आ ज्ञा के मेल से बनल 'संज्ञा' के अर्थ होला ऊ शब्द जवना से कवनो वस्तु के सम्यक् ज्ञान होखे। एह से कवनो वस्तु के नाम खातिर 'संज्ञा' शब्द के प्रयोग तर्कसंगत आ भाषा वैज्ञानिक बा। एह तरह से कवनो वस्तु, व्यक्ति, स्थान, गुण धर्म आदि के बोधक शब्द के संज्ञा कहल जाला। संज्ञा एगो विकारी शब्द ह, जवना के रूप, लिंग आ वचन के अनुसार बदल जाला, जइसे-आदमी, नदी, पहाड़, सीता, सोन, हिमालय, मरजाद, गाज, टाल, बरिआत, पानी, आटा, घाव वगैरह।

संज्ञा के भेद-

संज्ञा के वर्गीकरण के लेके व्याकरण के विद्वान लोग एकमत नइखे। कामता प्रसाद 'गुरु' 'संज्ञा' शब्द से वस्तु आ धर्म के बोध भइला से संज्ञा के दूगो भेद-पदार्थवाचक आ भाववाचक मनले बाड़न। पदार्थवाचक से या त व्यक्ति के बोध होला चाहे जाति के। ऊ दूनो आधारन के मिला के संज्ञा के तीनगो भेद बतवले बाड़न-व्यक्तिवाचक, जातिवाचक आ भाववाचक।

भोजपुरी हिन्दी वगैरह आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के व्याकरण जाने वाला लोग अंगरेजी के आधार पर संज्ञा का एह तीनों भेद के अलावे द्रव्यवाचक आ समूहवाचक दूगो आउर भेद मनले बाड़न। एह तरह से संज्ञा के पाँचगो भेद भइल-व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक आ समूहवाचक। अइसे द्रव्यवाचक आ समूहवाचक संज्ञा-भेद जातिवाचक संज्ञा के उपभेद हवें सँ। नापे, मापे, जोखे आ समूह चाहे समुदाय के बोध करावे वाला पदार्थ सब जाति वाचक संज्ञा के तौलनीय आ समूह चाहे समुदायवाचक प्रकार हवे सँ। एकरा बावजूद एह द्रव्यवाचक आ समूहवाचक संज्ञा-भेद का स्वतंत्र अस्तित्व के मानल अनुचित ना कहाई काहे कि भोजपुरी हिन्दी के व्याकरण जाने वाला लोग एह दूनों संज्ञा के स्वतंत्र भेद मान चुकल बा।

व्यक्तिवाचक संज्ञा

जवना शब्द से कवनो एक व्यक्ति चाहे पदार्थ के बोध होखे, ओकरा के व्यक्तिवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे-रमेसर, दिनेसर, दीनानाथ, सरजुग, सुनीता, सोनपुर वगैरह। इहँवा 'रमेसर, दिनेसर, दीनानाथ' कहला से

एक एक व्यक्ति के, सरजुग कहला से एगो नदी के आ सोनपुर कहला से एगो जगह के बोध होला। आदमी, जानवर, देश, दिशा, नदी, परबत, गाँव, नगर, दिन, महीना, तीज, तेवहार, किताब वगैरह सब के निजी नाम व्यक्तिवाचक के उदाहरण हवे सँ।

व्यक्तिवाचक नाम प्रायः अर्थहीन होला, जरूरी नइखे कि ओह शब्द से व्यक्ति के धर्म, गुण सूचित होखे, व्यक्तिवाचक नाम व्यक्ति चाहे पदार्थ के पहचान चाहे सूचना खातिर संकेत-मात्र होला। कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञा अर्थवाला होला जइसे-राम, रहीम, करीम वगैरह। बाकिर सार्थको नाम सब के अर्थबोध व्यक्ति में होत होख अइसन बाध्यता ना रहे जइसे-'दीनानाथ दुष्ट आदमी हवें' एह वाक्य में दीनानाथ एगो व्यक्ति के नाम बा जवन दुष्ट बा। इहाँ एह दीनानाथ शब्द के अर्थ 'दीन-गरीब पर दया देखावे' वाला मालिक चाहें स्वामी नइखें।

जातिवाचक संज्ञा

जवना शब्द से एक तरह के अनेक पदार्थन के बोध होखे, ओकरा के जातिवाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-आदमी, मरद, मेहरारू, लरिका, लरकी, गाय, बएल, नदी, नहर वगैरह। जवना नाम वाला पदार्थ चाहे आकृति के एक बेरि जान-पहचान के हमनी ओह आकृतिवाला सब पदार्थन के नाम जान-पहचान जाईं, त ओकरे के जातिवाचक नाम चाहे संज्ञा कहल जाला। जेकरा एकबेरि आदमी, मरद, मेहरारू, लरिका, गाय,

बएल वगैरह के संकेत ग्रहण हो जाला ओकरा फेर आउर आदमी मरद, मेहरारू, लरिका, गाय, बएल वगैरह के देख के पहचाने में दिक्कत ना होखे।

समूहवाचक चाहे समुदायवाचक

जवना शब्द से पदार्थन का समूह चाहे समुदाय के बोध होखे, ओकरा के समूहवाचक चाहे समुदायवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे - बरिआत, मेला, गिरोह, झूँड, घउद, गाँज, टाल, बोझा, अँटिया वगैरह।

केतनो बर-बरिआत होखे चाहे मेला होखे, ओकरा में सैकड़न लोग होखे, बाकिर एकर प्रयोग एके वचन में होईं यदि कई गो बरिआत चाहे कईगो मेला के बात होई त बहुवचन में प्रयोग होई।

भाववाचक संज्ञा

जवना शब्द से कवनो वस्तु के गुण, चाहे क्रिया के बोध होला, ओकरा के भाववाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-कमजोरी, सीनाजोरी, कामचोरी, गरीबी, अमीरी, लरिकाही, पंडिताई, सेखी, बदमासी, चाल्हाकी, सुनाई, गदहपन, दउड़ल, बइठल, कूदल, सूतल, खाइल, पीअल, जीअल वगैरह।

द्रव्यवाचक संज्ञा

जवना शब्द से नापे-मापे आ तउले वाला पदार्थन के बोध होखे, ओकरा के **'द्रव्यवाचक'** संज्ञा कहल जाला। जइसे-घीव, दूध, दही, लोहा, सोना, चानी, गिलट, आटा, दाल वगैरह। अइसे द्रव्यवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के ही एगो उपभेद मानल जाले।

समूहवाचक संज्ञा

जवना संज्ञा से पदार्थ चाहे व्यक्ति के समूह के बोध होखे, ओकरा के समूहवाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-दाल, गिराह, बरिआत, मेला, गाँज, झुँड वगैरह। समूहवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के समूह चाहे समुदाय बोधक एगो प्रकार मानल जाला।

भोजपुरी में प्रत्ययन के मेल, वाक्य के प्रसंग आ प्रयोग भेद से संज्ञा के रूप बदल जाला जइसे-

भोजपुरी में जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया के साथे प्रत्ययन के जोड़ के भाववाचक संज्ञा बनावल जाला जइसे-

1. **जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा**- पंडित-पंडिताई, राजपूत- राजपूतांव, भूमिहार-भूईहारी, गदहा से गदहई/गदहपन, मरद से मरदाही, पशु से पशुता, लरिका-लरिकाही/लरिकपन वगैरह।

2. **सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा**- आप से अपनापन

3. **विशेषण से भाववाचक संज्ञा**- गरम-गरमी, नरम-नरमी, विधर्म-विधर्मी, कुकर्म-कुकर्मी, धूर्त-धूर्तई, बहादुर-बहादुरी, गरीब-गरीबी वगैरह।

4. **क्रिया में प्रत्यय जोड़ के भाववाचक संज्ञा**- सजाव-सजावट, बनाव-बनावट, दउड़ल-दउर, चढ़ल-चढ़ाई, लड़ल-लड़ाई, पढ़ल-पढ़ाई, कहल-सुनल-कहासुनी, बैठल-बइठक, डूबल-डूबकी, ठोकल-ठोकर, बुझल-बुझउवल वगैरह।

भोजपुरी में हिन्दिये जइसन कबो-कबो आ कहीं-कहीं जातिवाचक संज्ञा के प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा जइसन पावल जाला जइसे :- पुरी-जगन्नाथपुरी, देवी-दुर्गा, संवत्-विक्रम संवत्, महावीर-हनुमान वगैरह।

कबो-कबो व्यक्तिवाचक संज्ञा के प्रयोग ओही नाम के सब व्यक्तियन के गुण-धर्म के बोध करावे खातिर कइल जाला। अइसन हालत में व्यक्तिवाचक संज्ञा के प्रयोग जातिवाचक संज्ञा जइसन होखे लागेला। जइसे-खली आज के हनुमान हवें, आज समाज में कईगो रावन बाड़े, जीतन हमरा गाँव के नटवरलाल बा। एह वाक्य में हनुमान, रावन, नटवर लाल व्यक्तिवाचक संज्ञा होइयो के जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त बा, काहे कि इन्हन से हनुमान, रावन आ नटवरलाल के असाधारण गुण-धर्म के कारण एगो समूह के बोध होता, जवन जातिवाचक से जुड़ल बा।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'संज्ञा' खातिर संस्कृत में कवन शब्द चलेला।

(क) सर्वनाम (ख) आख्यात

(ग) निपात (घ) नाम

2. 'रमेसर' कवना संज्ञा के उदाहरण ह।

(क) व्यक्तिवाचक (ख) जातिवाचक

(ग) समूहवाचक (घ) भाववाचक

3. 'लरिकउवा' संज्ञा के कवन रूप ह।

(क) गुरुतर	(ख) गुरु
(ग) सामान्य	(घ) विशिष्ट

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाम लिखीं।
2. भोजपुरी संज्ञा के तीनों रूपन के बारे में बताईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा के परिभाषित करत ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

अध्याय 4

सर्वनाम

संज्ञा के बदले प्रयुक्त होखे वाला शब्द के सर्वनाम कहल जाला जइसे-हम, तू, ऊ, रउआ, केहू, कवन वगैरह।

हिन्दी व्याकरण में कामता प्रसाद गुरु सर्वनाम के परिभाषा देले बाड़न, सर्वनाम ओह विकारी शब्द के कहल जाला जवन पूर्वापर संबंध से कवनो संज्ञा के बदला में आवेला, जइसे-हम, तू, यह, वह वगैरह बाकिर पूर्वापर संबंध से सर्वनाम खाली संज्ञा के बदले ना आवे, बल्कि ऊ वाक्यन, उपवाक्यन आ वाक्यांशनो के बदले प्रयुक्त होला, जइसे- 'आदमी के ईमानदार होखे के चाहीं, ई उत्तम विचार बा।' बिआह गुड़िया के खेल ना, ई जनम-जनम के बन्धन होला।' एह दूनों उदाहरण में 'ई' सर्वनाम पहिला में वाक्य के आ दूसरा में वाक्यांश के बदले प्रयुक्त बा। एह तरह से ऊ सब विकारी चाहे अविकारी शब्द जवना के प्रयोग पूर्वापर प्रसंग के आधार पर संज्ञा, वाक्य, उपवाक्य चाहे वाक्यांश के प्रतिनिधि के रूप में कइल जाला, ओकरा के सर्वनाम कहे के चाहीं। बाकिर प्रायः हर व्याकरण में सर्वनाम ओही शब्द खातिर रूढ़ बा जवन केहू नाम (संज्ञा) के प्रतिनिधि होखे।

भोजपुरी सर्वनाम के भेद :

भोजपुरी में प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के छव गो भेद होला-पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक आ निजवाचक।

(1) पुरुषवाचक

कहेवाला (वक्ता), सुनेवाला (श्रोता) आ जेकरा बारे में कहल जाव, ओह सब के व्याकरण में पुरुष कहल जाला। एह से जवना शब्दन से कहेवाला, सुने वाला भा जेकरा बारे में कहल जाय ओकर बोध होखे, ओकरा के पुरुषवाचक सर्वनाम कहल जाला। एह तरह से पुरुष वाचक सर्वनाम तीन तरह के होला–उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष आ अन्य पुरुष। कहेवाला उत्तम पुरुष, जइसे–हम, हमनी, हम सब, हमनी सब, सुनेवाला मध्यम पुरुष, जइसे–तें, तू, तू लोग, तहन लोग, तहनी का आ जेकरा विषय में कहल जाव ऊ अन्य पुरुष, जइसे–ऊ, ऊ लोग आदि। भोजपुरी में मध्यम पुरुष सर्वनाम तँ, तू, तँ लोग आदि के स्थान पर आदरसूचक शब्द रउआ, रउरा, रउआलोग, रउरालोग, **रउरा सब, रउआ सब** के प्रयोग कइल जाला। ओइसहीं अन्यपुरुष में आदर सूचक **उहाँका**, उहाँके, इहाँ का, इहाँ के, उहाँ सभन, इहाँ सभन के प्रयोग होला।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से वक्ता के नजदीक **चाहे** दूर के कवनो निश्चित वस्तु के बोध होखे, ओकरा के निश्चयवाचक **सर्वनाम** कहल जाला। नियरा (नजदीक) चाहे दूर के वस्तु के आधार पर एकर दूगो भेद कइल जाला। **निकटवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम**, जइसे–ई, ई लोग, इन्हन लोग, ई सभ इनकर, इन्हकर, इन्हकरा लोगन के, एह लोगन के, एकर आदि आ दूरवर्ती **निश्चयवाचक सर्वनाम**, जइसे–ऊ, ऊ लोग, ऊ सब, उलोग, उहाँ सभन, उन सब, उनका, उनके, उनकरा, उन्हका, ओकरा, ओकर, ओह लोगन के आदि।

(3) अनिश्चय वाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से कवनो निश्चित वस्तु के बोध ना होखे, ओकरा के अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे-केहू, कुछऊ, कुछ, कवनो, किछु आदि।

(4) प्रश्नवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से प्रश्न करे के बोध होला, ओकरा के प्रश्नवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे-कवन, के, का, कथी, केकर, केकरा, किनकर वगैरह। के-के, कवन-कवन, कइसे-कइसे, केकर-केकर, कथी-कथी वगैरह द्विरूक्ति से बहुत्वबोधक प्रश्नवाचक सर्वनाम बनेला।

(5) संबंधवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से वाक्य में कवनो दूसर सर्वनाम से संबंध स्थापित कइल जाव, ओकरा के संबंधवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे- जे, से।

(6) निजवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से निजता मतलब अपनापन के बोध होला, ओकरा के निजवाचक सर्वनाम कहल जाला। जइसे-अपने (स्वयं)

भोजपुरी के आदर सूचक शब्द "रउआ" के उच्चारण कहीं-कहीं "रावा" आ "रउरा" भी होला। डॉ॰ उदय नारायण तिवारी भोजपुरी के आदरसूचक सर्वनाम "राउर" के उत्पत्ति प्राकृत लाउल से भइल बा ("लाउल" : प्रबोधचन्द्रोदय" नाटक में प्रयुक्त भइल बा।) संस्कृत में एकर रूप राजकुल भा राजकुल्य होई। भोजपुरी में आदरसूचक सर्वनाम

राउर के अलावे आप, अपना आपन, अपने के प्रयोग होला, जइसे–हम आप से कहलीं, हम अपने से कहलीं, हम अपने के नेवता देहलीं आदि।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'हम' कवन सर्वनाम ह ?

(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष

(ग) अन्य पुरुष (घ) महापुरुष

2. मध्यम पुरुष के कोटिं में आवेलें

(क) कहेवाला (ख) सुनेवाला

(ग) रोवेवाला (घ) गावेवाला

3. 'जे, से' कवन सर्वनाम ह–

(क) सम्बन्धवाचक (ख) प्रश्न वाचक

(ग) पुरुष वाचक (घ) निश्चय वाचक

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सर्वनाम के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाम लिखीं।
2. भोजपुरी के उत्तम पुरुष चाहे मध्यम पुरुष सर्वनाम के रूपावली लिखीं।

दीर्घ उत्तरीय

1. सर्वनाम के परिभाषा दीं आ ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिच्चय दीं।

अध्याय 5

वाक्य विचार

शब्दन का क्रमबद्ध सार्थक समूह के वाक्य कहल जाला। जइसे– सुनयना पोथी बाँच तारी। लइका पानी पीअता। गाड़ी नाला में गिर गइल वगैरह।

वाक्य के अंग-उद्देश्य आ विधेय

मुख्य रूप से वाक्य के दूगो अंग होला–उद्देश्य आ विधेय।

उद्देश्य आ विधेय– वाक्य में जेकरा बारे में कुछ कहल जाव, ऊ उद्देश्य ह आ उद्देश्य का बारे में जे कुछ कहल जाव, ऊ विधेय ह। जइसे–कविता खातारी। किसन पढ़ता।

एह वाक्य में कविता आ किसन उद्देश्य बा आ 'खा तारी' आ 'पढ़ता' विधेय बा।

उद्देश्य एगो संज्ञा भा सर्वनाम हो सकेला चाहे ओकरा से संबंधित त समानाधिकरण विशेषण भी ओकरा साथे हो सकेला। ई समानाधिकरण उद्देश्य के विस्तार कहाला। जइसे- 'हमार बड़का चाचा राजनारायण सिंह आइल बाड़न'। मोहन के भाई श्याम वर्मा पुलिस में रहस। एह वाक्य में 'हमार बड़का चाचा' 'राजनारायण सिंह' आ 'मोहन के भाई' उद्देश्य बा 'श्याम वर्मा' के विस्तार भा समानाधिकरण बा।

विधेय में कम-से-कम एगो क्रिया-पद रहल जरूरी होला। ऊहे मुख्य विधेय होला, बाकिर विधेय का विस्तार का रूप में कर्म, क्रियाविशेषण आ आउर दोसरो संबंधित पद आ सकेला। जइसे-सुरेन्द्र बाबू अपना बाप-मातारी आ भाई-बहिन के पटना बोला लेलन। राजकुमार पाल आपन लइका के पढ़ावत बाड़न।

इहाँ मुख्य विधेय 'बोला लेलन' आ 'पढ़ावत बाड़न' के विसतार 'अपना बाप-मतारी आ भाई-बहिन' आ 'आपन लइका' बा।

अइसनो वाक्य होला जेमें उद्देश्य आ विधेय में से एगो लुप्त रहेला। जइसे-'आईं' एमें उद्देश्य 'हम' भा 'अपने' लुप्त बा। ओइसहीं-'एमें विधेय अनुक्त भा लुप्त बा, जवना के पूर्ति प्रसंगानुसार कवनो क्रिया पद से दीहल जा सकेला।

वाक्य के प्रकार

अर्थ आ रचना के अनुसार वाक्य के कई गो प्रकार होला।

अर्थ के अनुसार वाक्य के प्रकार

अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ गो प्रकार होला-

(1) विधानार्थक वाक्य, (2) निषेधार्थक वाक्य, (3) आज्ञार्थक वाक्य, (4) विस्मयार्थक वाक्य (7) संकेतार्थक वाक्य आ (8) संदेहार्थक वाक्य।

(1) विधानार्थक वाक्य-जवना वाक्य से कवनों क्रिया के होखे

के बोध होला ओकरा के विधानार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे–सुप्रज्ञा पढ़तारी। घोड़ा घास खाता। बस खुलता।

(2) **निषेधार्थक वाक्य**–जवना वाक्य से कवनो क्रिया के ना होखे के बोध होला ओकरा के निषेधार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे–संजय खेलत नइखन। हमरा कलम नइखे। अशोक स्कूल ना जइहन। निवेदिता राज ना खइहन।

(3) **आज्ञार्थक वाक्य**–जवना वाक्य से कवनो क्रिया के करे भा ना करे का आदेश के बोध होला ओकरा के आज्ञार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे–गाँव जा। घमा में मत दउड़। मन लगा के पढ़।

(4) **प्रश्नार्थक वाक्य**–जवना वाक्य से प्रश्न के बोध होला ओकरा के प्रश्नार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे–कहाँ जातार? ई का ह? तोहर नाँव का ह? तोहर घर कहाँ बा? कहवाँ जातार?

(5) **इच्छार्थक वाक्य**–जवना वाक्य से इच्छा, कामना, सराप आदि के बोध होला ओकरा के इच्छार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे–भगवान करस, तोहार बढ़न्ती होखे। तू अच्छा हो जा। जीअऽ, जागऽ, नीके रह।

6. **विस्मयार्थक वाक्य**–जवना वाक्य से विस्मय, अचरज आदि के बोध होखे ओकरा के विस्मयार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे–अइसन जुलुम! हाय राम! ओह! ई का भइला! बड़ा दुःख बा! ऐं! अइसन? बारे–रे–बाप!

(7) **संकेतार्थक वाक्य**–जवन वाक्य दू भा दू से अधिका वाक्य

के मेल से बनेला ओकरा के संकेतार्थक वाक्य कहल जाला। एमें एक वाक्य का क्रिया का सम्पन्न होखे के सम्भावना दोसरा वाक्य पर निर्भर करेला। जइसे-अगर अभिषेक राज आ जइतन, त लिखे के काम पूरा हो जाइत। रउआ कहीं, त हम पटना जाईं।

(8) **संदेहार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से क्रिया का होले में संदेह के बोध होला ओकरा के संदेहार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-मास्टर साहेब आवत ना होखस। इस्कूल साइद विहान से खुली। लइका खेलत ना होखस।

रचना के अनुसार वाक्य के प्रकार

रचना के अनुसार वाक्य **तीन** प्रकार के होला-**(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य आ (3) संयुक्त वाक्य।**

(1) सरल वाक्य-जवना वाक्य में एगो उद्देश्य आ एगो विधेय होला ओकरा के सरल वाक्य कहल जाला। जइसे-लरिका पढ़ता। मोहन घरे जइहन। हम पढ़तानी। नितेश खातारन।

(2) मिश्र वाक्य-जवना वाक्य में एगो सरल वाक्य का अलावे ओकरा उद्देश्य चाहे विधेय पर आश्रित एगो या एगो से ज्यादा उपवाक्य होला ओकरा के मिश्र वाक्य कहल जाला। मिश्र वाक्य के उपवाक्य मुख्य उपवाक्य का साथ व्याधिकरण समुच्चय से जुड़ल रहेला।

उपवाक्य

उपवाक्य तीन तरह के होला- संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य,

आ क्रियाविशेषज्ञण उपवाक्य। विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव अपना किताब "भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा' में उपवाक्य के प्रकार का बारे में आपन विचार एह तरह से दीहले बाड़न-

संज्ञा उपवाक्य-ई वाक्य में संज्ञा के काम करेला आ मुख्य उपवाक्य से 'कि, जे' संयोजक से जुड़ल रहेला जइसे-

कर्त्ता का रूप में -'बान्ह कइसे टूट गइल' आश्चर्य बा।

कर्म का रूप में-हमरा मालूम रहे कि 'तू ना अइब'।

समानाधिकरण का रूप में-'ई बात कि रमेश गारी देलन' गलत बा।

पहिला वाक्य में 'बा' क्रिया के कर्त्ता 'बान्ह कइसे टूट गइल', दूसरा वाक्य में 'मालूम रहे क्रिया के कर्म तू ना अइब आ तीसरा वाक्य में 'ई बात' संज्ञा के समानधिकरण 'रमेश गारी देलन' संज्ञा उपवाक्य बा।

विशेषण उपवाक्य-ई वाक्य में विशेषण के काम करेला। ई 'जे' आ 'जवन' संयोजक से जुड़ल रहेला। मुख्य उपवाक्य का साथे एकर सहचर संयोजक से, तवन, हओ के, ओकरा, तवना के आदि से भी जुड़ सकेला। विशेषण उपवाक्य वाक्य में मुख्य उपवाक्य का पहिलहूँ आ सकेला आ बादो में। ई मुख्य उपवाक्य का कर्त्ता भा कर्म के विशेषता देखावेला आ समानधिकरणों बन के आवेला। जइसे- कर्त्ता से - ऊ पौधा, जवन हम रोपले रहीं, सूख गइल।

कर्म से- ऊ एगो बात कहलन जवन सबका बेजाँय लागल।

समानाधिकरण से-रउरा जे चिट्ठी भेजनी, ओ से बड़ा सहारा मिलल।

कहीं-कहीं विशेषण उपवाक्य के संयोजक लुप्तो रहेला। जइसे-जइसन अपने के मर्जी होए (ओइसने हमनीं भा कोई करी) क्रियाविशेषणों का शब्द में कहीं-कहीं विशेषण उपवाक्य छिपल रहेला। जइसे-ई ऊ दिआर (क्षेत्र) ह, जहवाँ कउआ भात ना पूछे। (जहवाँ-जवना क्षेत्र में)।

क्रियाविशेषण उपवाक्य- ई वाक्य में क्रियाविशेषण जइसन काम करेला इहो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य का पहिले भा पाछे आ सकेला। ई वाक्य में नीचे लिखल तरह से आवेला। एमें आश्रित उपवाक्य का पहिले 'जब, जइसे, अतना, काहेकि, अगर, जो, जहाँ, जहाँ से, जहाँ ले, जहाँ तक, अरगचे आ मुख्य उपवाक्य का साथ 'तब, ओइसे, ओतना, तौभी, ताहम, उहाँ, उठाँ तक वैरह संयोजक आ सहचर-संयोजक आवेला।

कालवाचक-अब हल्ला भइल, तब लोग दउड़ल।

जब ले ऊ आवस ना, तूँ एतहीं बइठल रहिहऽ।

स्थानवाचक-जहाँ काम मिले, उहाँ जाए के पड़ी।

जेने से आइल, ओने लौट गइल।

रीतिवाचक-जइसे फरिआय, ओइसे बात करिहऽ।

हम ओह लेखा ना बोलब, जे लेखा तूँ बोलेलऽ।

परिणामवाचक-जेतने अपरेशन के दिन नजदिकाता, ओतने ओकर करेज काँपता। जेतना चल सके, उठा ले जा।

कार्यकारणवाचक-हम उनका के ना भुला सकीं, काहेकि उनके चलते हमरा ई दिन देखे के पड़ल। अइसन एसे कह देनी, ताकि उनका मन में शंका ना रह जाय।

विरोधसूचक-ऊ गरीब बा, तबो हमार मदत करी। ऊ भले ही ना बर बा, बाकिर जबान के पक्का बा।

संकेतवाचक-ऊ खूब मेहनत करेलन, ताकि नीरोग रहस।

ब्याधिकरण समुच्चय के प्राय: सब संयोजक का साथ क्रियाविशेषण उपवाक्य के उदाहरण बन सकेला। कहीं कहीं मुख्य उपवाक्य भा आश्रित उपवाक्य में कुछ पद लुप्तो रहेला, जइसे-जहाँ मन करे जा। बइठ चाहे जा। या त तूहीं, ना त हमही इहाँ बइठब।

(3) संयुक्त वाक्य-जवना वाक्य में एक से जादे सरल भा मिश्र वाक्य आश्रित उपवाक्य का साथे चाहे अकेले समानाधिकरण समुच्चय से जुड़ल होला, ऊ संयुक्त वाक्य कहाला। संयुक्त वाक्य चार तरह से समानाधिकरण समुच्चय से जुड़ेला-(क) संयोजक (ख) विभाजक (ग) विरोधदर्शक (घ) परिणाम-सूचक

(क) संयोजक-एह काम से पइसा त मिलबे करी, समाज के सेवो होई। राम खाली इंजीनियरे नइखन, बलुक महाभारत के जानकारो बाड़न।

(ख) विभाजक-आज खेल में या त जय चाहे छय होई। या त पढ़ बइठऽ, ना त खेले जा।

(ग) विरोध-दर्शक-हम मोहन के लाख समझवनी, बाकिर ऊ हमार एक ना मनलें। लोग के मदत करीं, बाकिर तरफदारी मत करीं।

(घ) परिणाम-सूचक-अगर रउरा कहीं त, हमहूँ साथे चलीं। राम हमार बात ना मनलन, एह से उनका ई दिन देखे के पड़ल।

वाक्य के रूपान्तर

एक तरह का वाक्य के बिना अर्थ बदलले, दोसर तरह का वाक्य में बदल देवे के प्रक्रिया के रूपान्तर कहल जाला।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

सरल वाक्य-शर्मा जी अपना हिस्सा के खेत बेच दीहलन।

मिश्र वाक्य-शर्मा जी ऊ खेत बेच दीहले, जवन उनका हिस्सा के रहे।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य-बेमार भइला का चलते ऊ बारात मे ना अइलन।

संयुक्त वाक्य-ऊ बेमार रहस, एह से बारात में ना अइलन।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य

मिश्र वाक्य-जे ईमानदार होला, ओकर सभ इज्जत करेला।

सरल वाक्य-ईमादार के सभे इज्जत करेला।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य

संयुक्त वाक्य- धनो गइल आ धरमो गइल।

सरल वाक्य-धन, धरम दूनू गइल।

कर्त्तृवाच्य से कर्म वाच्य

कर्त्तृवाच्य- हम पढ़तानी।

कर्मवाच्य- हमरा से पढ़ाता।

विधिवाचक से निषेधवाचक

विधिवाचक- हम दिल्ली जरूर जाएब।

प्रश्नवाचक- हम दिल्ली काहे ना जाएब?

प्रश्नवाचक से विधिवाचक

प्रश्नवाचक- रउरा अइसन हिम्मती आदमी कहाँ मिली?

विधिवाचक- रउरा अइसन हिम्मती आदमी कतहीं ना मिली।

बोध प्रश्न

1. वाक्य के परिभाषा देत ओकर प्रकार के बारे में बताईं।

2. वाक्य के अंग सब के परिभाषा बताईं।

3. रचना के अनुसार वाक्य के कय गो प्रकार बतावल गइल बा।

अध्याय 6

विशेषण

संज्ञा आ क्रिया के विशेषता बतावेवाला शब्द के विशेषण कहल जाला। जइसे–करिआ गाय, पीअर आम, गोर लइकी, तेज दउड़ल, गवें–गवें बोलल, लाहे–लाहे डोलल वगैरह। एमें करिआ, पीअर, गोर, तेज, गवें–गवें आ लाहे–लाहे विशेषण शब्द बाड़े स।

विशेषण के कामे ह विशेषता बतावल। भाषा के छोट इकाई वाक्य ह आ ओकर मुख्य रूप से दूगो भाग होला– उद्देश्य आ विधेय। जवन शब्द उद्देश्य आ विधेय के विशेषता बतावे, उहे ओकर विशेषण होला। व्याकरण में उद्देश्य के विशेषता बतावेवाला के संज्ञा-विशेषण आ विधेय के विशेषता बतावे वाला के क्रिया विशेषण कहल जाला।

विशेषण के भेद

संज्ञा आ क्रिया के विशेषता बतावे के आधार पर विशेषण के दूगो भेद बतावल गइल बा–संज्ञा विशेषण आ क्रिया विशेषण।

संज्ञा विशेषण - जवना शब्द से संज्ञा के विशेषता के ज्ञान होय, ओकरा के संज्ञा विशेषण कहल जाला, जइसे–कत्थी कुरता, कनफुँकवा गुरु, डम्हक आम, कमाऊ पूत, करकसा मेहर, कुअतल लइका, खकही

चटाई, खटतुरूस अंगूर, गवेल लइका, गरदाखोर कपड़ा वगैरह में कत्थी रंग कुर्त्ता के, कनफूँकवा गुरु के, डम्हक आम के, कमाऊ पूत के, करकसा मेहर के कुअतल लइका के, खकही चटाई के, खटतुरूस अंगूर के, गवेल लइका के, गरदाखोर कपड़ा के संज्ञा के विशेषता बतावता। एह से ई सब के सब संज्ञा विशेषण के उदाहरण बा।

क्रिया विशेषण–जवना शब्द से क्रिया के विशेषता उजागर होला, ओकरा के क्रिया-विशेषण कहल जाला, जइसे-गवें-गवें बोलल, गते-गते चलल, गद्गद् भइल, गपागप भकोसल, गाहे-बेगाहे टोकल, अनचिते आ धमकल, अचके गिरल, अछोधाह होके रोवल वगैरह, गवे-गवें बोलल क्रिया के, गते-गते चले के, गद्गद् भइला के, गपा-गप भकोसला के, गाहे-बेगाहे टोकला के, अनचिते आ धमकला के, अचके गिरला के, अछोधाह होके रोवला के, क्रिया के विशेषता बतावेवाला शब्द बा। एह से ई सब क्रिया विशेषण के उदाहरण बा। व्याकरण में विशेषण शब्द के द्वारा जवना शब्द (संज्ञा चाहे क्रिया) के विशेषता बतावल जाला ओकरा के विशेष्य कहल जाला, जइसे-एहर आवऽ में एहर विशेषण के विशेष्य 'आवल' क्रिया बा ओइसहीं, करिआ काग में काग, लमहर गाँज में गाँज, पातर कर्ची में कर्ची, कुअतल पड़रू में पड़रू क्रम से करिआ, लमहर, पातर, कुअतल विशेषण के विशेष्य शब्द बा। भाषा में कुछ शब्द विशेषणो के विशेषता बतावे वाला होले, उन्हन के प्रविशेषण चाहे विशेष्य विशेषण कहल जाला, जइसे-कुच-कुच अँहरिया रात, खूब पाकल आम, ढ़ेर पातर लइकी, बहुते लबरा आदमी में कुच-कुच, खूब, ढेर, बहुते शब्द क्रम से

अँहरिया, पाकल, पातर, लबरा विशेषण के विशेषता बतावेवाला शब्द बा जवन प्रविशेषण चाहे विशेष्य विशेषण के उदाहरण बा।

संज्ञा विशेषण के भेद-

प्रयोग के आधार पर संज्ञा विशेषण के पाँचगो भेद होला-सार्वनामिक विशेषण, गुणवाचक विशेषण, संबंधवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण आ परिमाण वाचक विशेषण।

1. सार्वनामिक विशेषण

जवन सर्वनाम विशेषण जइसन विशेष्य के विशेषता बतावेला, ओकरा के सार्वनामिक विशेषण कहल जाला, जइसे-ई आम, ऊ काम, अपन घर, तोहर कटोरा, अइसन कठरा, ओइसन करछुल, कइसन दुल्हा वगैरह में ई, ऊ, अपन, तोहर, अइसन, ओइसन, कइसन सर्वनाम क्रम से आम, काम, घर, कटोरा, कठरा, करछुल, दुल्हा विशेष्य (संज्ञा) के विशेषता बता रहल बा।

पुरुषवाचक आ निज वाचक सर्वनाम के छोड़ के बाकी सब सर्वनाम के प्रयोग विशेषण जइसन होला। संज्ञा/विशेष्य के साथे आवेवाला सर्वनाम के ओह संज्ञा/विशेष्य के विशेषण कहल जाला।

जब यौगिक सार्वनामिक विशेषण विशेष्य के बिना आवेलें त ओकर प्रयोग संज्ञा जइसन होला, जइसे-जइसन करबऽ ओइसन पइबऽ। सार्वनामिक विशेषण के प्रयोग मूल आ यौगिक दू रूपन में होला। एह आधार पर सार्वनामिक विशेषण के दूगो भेद पावल जाला-मूल सार्वनामिक विशेषण आ यौगिक सार्वनामिक विशेषण।

2. गुणवाचक विशेषण

जवन शब्द विशेष्य के गुण धर्म के उजागर करेला ओकरा के गुणवाचक विशेषण कहल जाला, जइसे-अच्छा, बुरा, पातर, मोट, लामा, चाकर, लाल, हरिअर वगैरह।

भोजपुरी में गुणवाचक विशेषण के संख्या आउर विशेषण सब से अधिका बा जवन के काल, स्थान, आकार, रंग, दशा स्वभाव वगैरह के आधार पर कइ कोटि में बाँटल जा सकेला, जइसे

काल सूचक गुणवाचक विशेषण- नया/नाया, पुरान, ताजा/टटका, बसिआ, भूत, पिछिला/पछिला, अगिला, टिकाउ, वर्तमान, भविष्य, वगैरह।

स्थान सूचक गुणवाचक विशेषण-उजार, ऊँच-नीच/ऊँचा-खाला, भारतीय, बिहारी, चउरस, दहिना/दहिनवारी, बावाँ, बवाँरी, बाहरी, भीतरी, ऊपरी, सतही, पूरबी, देसीय, देसिला, गहिर, छितनार वगैरह।

आकार सूचक गुणवाचक विशेषण-गोल, लामा, चाकर, चवकोर सुनर, नुकीला/ नोकदार, सुडउल, समान, तिरछा, सीधा, गलफूल्ला।

रंग सूचक गुणवाचक विशेषण-लाल, पीअर, हरिअर, कत्थी, उज्जर, करिआ, फीका, करलूठ, गरदाखोर वगैरह।

दशा सूचक गुणवाचक विशेषण-नीमन, सुखल, हरिअर, काँच, पाकल, खुश, दुबर पातर, भारी, गाढ़, भींजल, धनिक, गरीब, अमीर, मेहनती, रोगी, बेमरिहा, मोट, छोट, पघिलल, गील सूखल, पोसुआ, खीसिआइल, घबराइल, अपाहिज, कटिहर, कठेस, कन्हा।

3. सम्बन्ध वाचक विशेषण

जवन शब्द विशेष्य के विशेषता आउर वस्तु के संबंध से बतावेला, ओकरा के संबंधवाचक विशेषण कहल जाला। सम्बन्धवाचक विशेषण संज्ञा, क्रिया आ क्रिया-विशेषण सब से बनलं होला, जइसे- भीतर से भीतरी, बाहर से बाहरी, भारत से भारतीय, हप्ता से हप्तवारी, माह से माहवारी, पहाड़ से पहाड़ी, साल से सालाना वगैरह।

4. संख्यावाचक विशेषण

जवना शब्द से विशेष्य के संख्यागत विशेषता उजागर होखे, ओकरा के संख्यावाचक विशेषण कहल जाला। निश्चित आ अनिश्चित संख्या के आधार पर एकर दूगो भेद होला-निश्चित संख्यावाचक विशेषण आ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।

5. परिमाण वाचक विशेषण

जवना शब्द से कवनो वस्तु के माप-तौल से जुड़ल विशेषता उजागर होला ओकरा के परिमाण वाचक विशेषण कहल जाला, जइसे-सेरभर दूध, थोरा पानी, तोला भर सोना के सेरभर, थोरा, तोलाभर पद क्रम से दूध, पानी आ सोना के परिमाण वाचक विशेषण बा। एकरा अलावे एतना, ओतना, जेतना, केतना, आउर, सभ, समुच्चा, थोरका, जादा, अधिका वगैरह एकर उदाहरण बा।

भोजपुरी के कुछ आपन विशेषण

नीमन (बढ़िया), लोफर चाहे लखैरा (आवारा), पुरनिया (बूढ़), फोकराइन (दूध के गंध), छिपछिपाह (हल्का-हल्का पानी), टटका (ताजा), पेन्हायल (दूध देवे खातिर तइयार जानवर) निखुराह चाहे निखोराह (खाय में मीन-मेख निकालेवाला), छरिआह (ढेर रोअनिया), जड़ाऊँ (जड़ल), उदन्त (बिना दाँत के बएल), टंच (बहुते बढ़िया), छिनार (रसिक मिजाजी), बमकल (क्रोधित), पेटू (अधिका खायवाला), फरदहर (तेज), उवेगल (उद्विग्न), ललुआवन (लललइतअस), छोहगर चाहे ओछ (छोट), लहालोट (गदगद), सवदगर (स्वादिष्ट), जनमउती चाहे जनमतुआ (नवजात), बदरकट्टू (बदरी के बादो कड़-कड़ धूप), बतफरोस चाहे बतपंगना (बतबनवना), ललपटिया (धूर्त), एकपिठिया (ठीक बाद में जनमल लड़का), पहिलौंठ (पहिला लइका), पेटमधवा (जवन खाली पेट भरे के बाड़े में सोचत होखे) पेटपोछुआ (अंतिम संतान), नन्हमुनिआ (छोट मुँह के घाव), बलतोड़, (बाल टूटला से भइल घाव), बाघी कोखी (काँख के घाव), पिलखी (पीठ के घाव), कनकट (जवना बरतन के किनारी टूट गइल होखे), लरछूत चाहे पराछूत चाहे छूतहर (ज़वन आसानी से पीछा ना छोड़े), थेथर (बेहाया), गुमसाइन (एगो खास तरह के गन्ध), बिलाला (ललाइत), रकटल चाहे खखनल (ललाइत), खरकटल (बरतन में अन्न सूख के पकड़ लिहल), बेहाल (व्यग्र), बेलाग (बिना लाग के), बरिआर (मजबूत), नीरइठ (जवन जूठ नइखें), मरखाह (मारेवाला मवेशी), सुधुआ चाहे सुधा (ना मारेवाला मवेशी), बउध (भोदा, बिना कंठ के), बकलर (मूरख) एकसंझी (दिन

में एक बार दूध देवेवाली मवेशी), उलाड़ (असंतुलित गाड़ी), अथाह (जेकरा सीमा के पता ना चले), थाह (जेकरा सीमा के पता होखें), दूधकट्टू (जवना लइका के लइकाई में माई के दूध पीये ला ना मिलल होखे) आदि।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अइसन दुल्हा' में 'अइसन' शब्द उदाहरण बा–

(क) परिमाण वाचक विशेषण के (ख) संबंधवाचक विशेषण के

(ग) सार्वनामिक विशेषण के (घ) गुणवाचक विशेषण के

2. 'तिगुना' शब्द कवना विशेषण के उदाहरण बा।

(क) क्रम बोधक (ख) आवृति बोधक

(ग) समुदाय बोधक (घ) अनिश्चय वाचक

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विशेषण के परिभाषा बताईं।
2. विशेषण के भेदन के परिचय दीं।
3. भोजपुरी के संख्यावाचक विशेषण के बारे में बताईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विशेषण के परिभाषा देत ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

अध्याय 7

कारक

कारक के अर्थ होला–करेवाला। व्याकरण में 'कृ' धातु से बनल, 'कारक' शब्द के लक्षण बतावल बा कि क्रिया के संगे सम्बन्ध (अन्वय) के योग्यता कारकत्व ह आ जवना में कारकत्व होखे, उहे कारक ह– **'क्रियान्वयित्वम् इति कारकत्वम्।'** बाकी नागेश भट्ट खाली क्रिया के निष्पादक के कारक मनले बाड़न– **'क्रिया निष्पादकत्वं कारकत्वम्।'** मतलब क्रिया के निष्पन्न करे के योग्यता जेकरा में होखे चाहे जे क्रिया के निष्पत्ति में सहायक होखे, ऊ कारक ह।

क्रिया के साथ अन्वय के आधार पर कारक के चार गो भेद होला–कर्त्ता, कर्म, करण आ अधिकरण, कई वैयाकरण सम्प्रदान, अपादान आ संबंध के क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध चाहे क्रिया के निष्पादन में सीधा सहायक ना होखे के वजह से कारक नइखे मनले। बाकी आचार्य रामदेव त्रिपाठी आ विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव क्रिया के साथे प्रत्यक्ष आ परोक्ष संबंध के आधार पर सम्बन्ध कारक के छोड़ के कारक के छव गो भेद मनले बाड़न–कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान आ अधिकरण। उहँवे डॉ० उदयनारायण तिवारी सम्बन्ध के भी कारक भेद में स्थान देले बाड़न। क्रिया के साथ अप्रत्यक्ष संबंध के आधार पर यदि सम्प्रदान आ अपादान के कारक भेद मानल जा सकत बा त सम्बन्ध के कारकभेद ना मानल उचित ना कहा

सके। एह तरह से क्रिया के साथ प्रत्यक्ष आ परोक्ष संबंध के आधार पर कारक के सात भेद मानल जा सकेला आ ओकरा के दू कोटि में रखल जा सकेला–

(1) क्रिया के प्रत्यक्ष सम्बन्धी कारक–कर्त्ता, कर्म, करण आ अधिकरण।

(2) क्रिया के अप्रत्यक्ष सम्बन्धी कारक–सम्प्रदान, अपादान आ सम्बन्ध।

कर्त्ता कारक

वाक्य में जे क्रिया करेला चाहे क्रिया करे खातिर स्वतंत्र होला, ओकरा के कर्त्ताकारक कहल जाला। ई कर्त्ताकारक तीन तरह के होला– प्रधान, प्रयोजक आ प्रयोज्य।

प्रधान कर्त्ता–जे खुद क्रिया करेला, जइसे–राम हाँफतारे।

प्रयोजक कर्त्ता– जे दोसरा से क्रिया (काम) करवावेला, जइसे–नितेश रवि से पाती पढ़ववलन। इहाँ नितेश प्रयोजक कर्त्ता बाड़न।

प्रयोज्य कर्त्ता– जे दोसरा के प्रेरणा से क्रिया करे। ऊपर के वाक्य में 'रवि' प्रयोज्य कर्त्ता बाड़े, काहे कि प्रयोजक नितेश से प्रेरित होके पढ़े के काम करत बाड़े।

भोजपुरी के कर्त्ता के साथे कवनो कारकीय चिह्न ना लागे। बाकी विशेष परिस्थिति में कर्त्ता के साथे 'के' आउर 'से' परसर्ग लागेला, जइसे– कृदन्त क्रिया आ विधि क्रिया से जहाँ चाहिए के अभिप्राय प्रकट होय– मोहन के खाये के चाहीं। सीता के नहाये के चाहीं। राम के घरे जाये के बा।

कर्त्ता द्वारा क्रिया करे में असमर्थता प्रकट करे खातिर चाहे अनायास क्रिया सम्पन्न हो जाये के स्थिति में कर्त्ता खातिर 'से' परसर्ग लागेला, जइसे-करुणा से गावल नइखे जात, किसन से बजावल नइखे जात, गणेसी से गिलास फूट गइल, तहरा से नइखे रहल जात, उनका से नइखे सहल जात वगैरह।

कर्मकारक

वाक्य के जवना पद पर क्रिया (व्यापार) के फल पड़ेला, ऊ कर्म कारक कहल जाला।

करण कारक

क्रिया के सिद्धि में जे सबसे बढ़के साधक होखे चाहे क्रिया (व्यापार) करे में कर्त्ता जेकर सबसे अधिक सहायता लेवे, ऊ करण कारक होला। भोजपुरी के करण कारक में 'से' परसर्ग के प्रयोग होला, जइसे-ऊ तलवार से लड़ी, हरिआ लाठी से मारी, सुप्रज्ञा पाल कंडा का कलम से लिखतारी। एह वाक्य सब में तलवार, लाठी, कंडा के कलम करण कारक के उदाहरण बा।

करण कारक के संज्ञा रूप में ए, एं, अन्, अन्हि वगैरह विभक्ति लगा के त कबो 'के' परसर्ग लगा के 'से' परसर्ग के अर्थ प्रकट कइल जाला, भुखे पेट बथऽता (भुख से पेट बथऽता), दाँतन्हि लइका चीर दिहलस (दाँतन से लइका चीर दिहलस), कवना राहे जइबऽ (कवना राह से जइबऽ), चेथरूआ आसकते ना गइल (चेथरूआ असकत में ना गईल), ई

बस्तर देहे लगा लऽ (ई बस्तर देह से लगालऽ), हाथ के लिखल किताब (हाथ से लिखल किताब), बाप के अरजल धन (बाप से अरजल धन), ढेंकी के कूटल चाउर (ढेंकी से कूटल चाउर) वगैरह।

सम्प्रदान कारक

वाक्य में जेकरा खातिर क्रिया (व्यापार) कइल जाय, ओकरा के सम्प्रदान कारक कहल जाला। जेकरा के कुछ दिहल जाय चाहे जेकरा खातिर कुछ कइल जाय, उहे सम्प्रदान कारक कहल जाला।

भोजपुरी में सम्प्रदान कारक खातिर ला, लागे, लेखें, बदे, खातिर, वास्ते, नेवरतीं, निमित वगैरह यौगिक परसर्गन के प्रयोग कइल जाला, जइसे–राम ला/लागि/बदे/खातिर/वास्ते/नेवरती दवा ले आवऽ, कुक्कुर खातिर कवरा ले आवऽ, मोरा लेखे नी बालम जी के नइहरवा वगैरह।

भोजपुरी लोकगीतन में सम्प्रदान खातिर लेखे, जोगे, लागि, के परसर्ग के खूब प्रयोग पावल जाला। जइसे–हमरा सामी जोगे जेवना बनावहू हे सइंया लागी सेजिया डंसइबो, हमरा के गहना गर्हा द, बबुआ के आमी घुमा दऽ वगैरह।

अपादान कारक

वाक्य में क्रिया द्वारा जहाँ से भा जवना से कवनो चीज अलग होय, ओकरा के अपादान कारक कहल जाला। ई बात स्पष्ट बा कि स्थिरता ओकरे में होई जवना से कवनो चीज अलग होत होखे आ उहे विश्लेष के आश्रय होई एह से ओकरे के अपादान कहल जाला।

कहीं-कहीं आ कबो-कबो अपादान खातिर के, से परसर्ग के प्रयोग होला जइसे- जेल के भागल कैदी, पेड़ से पतई गिरल वगैरह।

सम्बन्ध कारक

संज्ञा के जवना रूप से वाक्य के वस्तु के सम्बन्ध दोसरा वस्तु के संगे सूचित होय, ओह रूप के संबंधकारक कहल जाला, जइसे-गरीब के कुटिया, देवेन्द्र के आजी (दादी), शुभेन्द्र के बाबा, सर्वेन्द्र के भाई, निवेदिता के माई वगैरह।

वाक्य में क्रिया के साथे सीधा सम्बन्ध ना होखे के कारण सम्बन्ध के कारक भेद ना मानल जाव। कुछ वैयाकरण सम्बन्ध के मुख्य कारक भेद ना मान के गौण भेद मनले बाड़न। बाकिर हिन्दी आ भोजपुरी के कुछ वैयाकरण लोग के आग्रह के सम्मान करत भोजपुरी में संबंध के कारक भेद मान लिहल बा।

भोजपुरी में सम्बन्धकारक खातिर 'के' परसर्ग लागेला बाकिर जब वाक्य में सम्बन्ध कारक के तीनगो पद लगातार आवेला त पुनरुक्ति दोष मेटावे खातिर पहिला बेरि 'का' आ दोसरा बेरि 'के' के प्रयोग कइल जाला-इनका घर के हाल ठीक नइखे, सुगिया का बेटा के बिआह बा वगैरह।

अधिकरण कारक

व्याकरण में क्रिया व्यापार का आधार के अधिकरण कहल जाला, जइसे-खटिया पर चुनउटी बा। इहवाँ 'खटिया' अधिकरण के उदाहरण बा।

जवना संज्ञा या सर्वनाम से क्रिया का व्यापार के आधार ज्ञात होय, ओकरा के अधिकरण कारक कहल जाला। ई आधार तीन तरह के होला– औपश्लेषिक (एक देशीय), वैषेयिक अभिव्यापक।

भोजपुरी में औपश्लेषिक आ अभिव्यापक आधार खातिर 'में' आ वैषेयिक आधार खातिर 'प' चाहे 'पर' परसर्ग के प्राय: व्यवहार होला, जइसे–

बाघ जंगल में रहेला। (अपश्लेषिक)

घरभरना पलंगरी पर ओठंगल बा। (वैषेयिक)

तिल में तेल बा। (अभिव्यापक)

भोजपुरी में अधिकरण कारक खातिर 'में' 'प' चाहे 'पर' परसर्ग के प्रयोग कइल जाला।

सम्बोधन

भोजपुरी के वैयाकरण सम्बोधन के कारक भेद नइखन मनले। केहू के हाँक लगावे, बोलावें चाहे सम्बोधित करे खातिर एकर प्रयोग कइल जाला, बाकी क्रिया के साथे प्रत्यक्ष चाहे परोक्ष सम्बन्ध ना भइला के कारण एकरा के कारक भेद ना मानल जाय।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'कारक' शब्द कवना धातु से बनल बा।

(क) कार (ख) कृ

(ग) कर (घ) रक्

2. भोजपुरी में कारक के कएगो भेद मान्य बा।

(क) नव गो (ख) पाँच गो

(ग) सात गो (घ) एगारह गो

3. 'में' कवना कारक के परसर्ग ह।

(क) अधिकरण (ख) सम्प्रदान

(ग) सम्बन्ध (घ) करण

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कारक के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाँव लिखीं।
2. कारक का भेद के परिभाषा आ परसर्ग बताईं।

दीर्घ उत्तरीय .प्रश्न

1. कारक के परिभाषा देत ओकरा भेदन के विभक्ति/परसर्ग सहित परिचय दीं।

अध्याय 8

अव्यय

अव्यय ऊ अविकारी शब्द ह जेकरा रूप पर कवनो विकारी तत्त्व जैसे लिंग, वचन, पुरुष, कारक आ काल के कवनो प्रभाव ना पड़ेला, यानी, हर हाल में जेकर मूल रूप बनल रहेला ओकरा के अव्यय कहल जाला।'

कालवाचक अव्यय-काल (समय) के बोध करावे वाला अव्यय कालवाक अव्यय कहाला। कालबोधक अव्यय हवे-'आजु' 'काल्हु', 'जल्दी', 'तुरते', 'कब', 'कबो-कबो', 'रोज-रोज', 'अबे', 'जबे', 'जल्दी' आदि।

स्थानवाचक अव्यय-स्थान भा स्थान विशेष के बोध करावे वाला अव्यय स्थानबोधक अव्यय कहाला। स्थानबोधक अव्यय हवे-नियरे, पारे, दूरे, बहरी, भीतर, भीतरी, सगरो, नगीच, इहवाँ, उहवाँ आदि।

दिशावाचक अव्यय-दिशा के बोध करावे वाला अव्यय दिशा-बोधक अव्यय कहाला। दिशाबोधक अव्यय हवे-ऐने, ओने, बाँये, दाँये, दहीने, उत्तरे, दक्खिने आदि।

स्थितिवाचक अव्यय-स्थिति के बोध करावे वाला अव्यय स्थिति-बोधक अव्यय कहाला। स्थितिबोधक अव्यय हवे-नीचे, तरे, उपरे।

प्रकारवाचक अव्यय-प्रकार के बोध करावे वाला अव्यय प्रकार-बोधक अव्यय कहाला। प्रकारबोधक हवे-एकबायक, बिरिया, अती आदि।

संख्यावाचक अव्यय-संख्या के बोध करावे वाला अव्यय संख्या-बोधक अव्यय कहाला। संख्याबोधक अव्यय हवे-एगो, दूगो, एकबेर, दूबेर, अकसरूआ आदि।

परिमाणवाचक अव्यय-परिमाण भा मात्रा के बोध करावे वाला अव्यय परिमाणबोधक अव्यय कहाला। परिमााणबोधक अव्यय हवे-उउरी, कुल्ही, बेसी, जादे, निकहन आदि।

स्वीकारवाचक अव्यय-स्वीकृति भा स्वीकार के बोध कराबे वाला अव्यय स्वीकारबोधक अव्यय कहाला। स्वीकारबोधक अव्यय हवे-हँ, हूँ, हिं, अवश्य, जरूर आदि।

निषेधवाचक अव्यय-निषेध भा अस्वीकार के बोध करावे वाला अव्यय निषेधवाचक अव्यय कहाला। निषेधवाचक अव्यय हवे-ना, नू, नाहीं, नूहीं, नहीं, मत आदि।

रीतिवाचक अव्यय-क्रिया के सुभाव भा रीति के बोध करावे वाला अव्यय रीतिवाचक अव्यय कहाला। रीतिवाचक अव्यय हवे-फटाफट, अचानक, झटपट।

संबंधवाचक अव्यय-दू विचार, भाव, शब्द भा वाक्य के बची संबंध बतावेवाला अव्यय संबंधवाचक अव्यय कहाला। संबंधवाचक अव्यय हवे-आ, अउर, अउरी, फेर फिनु भा, ना, चाहे, का आदि।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(स्थानबोधक, संबंधवाचक, निपात, अव्यय, संख्याबोधक)

(क) ऊ अविकारी शब्द जेकर मूल रूप हर हाल में बनल रहेला ओकरा के .... कहल जाला।

(ख) संस्कृत में शब्द के चार गो रूप नाम, आख्यात, उपसर्ग आउर ....बा।

(ग) स्थान भा स्थान विशेष के बोध करावे वाला अव्यय........... कहाला।

(घ) संख्या के बोध करावे वाला अव्यय..........अव्यय कहाला।

(ङ) दू विचार, भाव शब्द भा वाक्य के बीच संबंध बतावेवाला अव्यय ..... अव्यय कहाला।

2. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दिहीं।

(क) अव्यय केकरा के कहल जाला?

(ख) अव्यय कइसन शब्द ह विकारी की अविकारी?

(ग) विकारी तत्व कवन-कवन बा?

3. क्रियाभ्यास

(क) निपात के बारे में अपना गुरूजी से बतकही कइके ज्ञान बढ़ावे के चाही।

(ख) देशी भा ठेठ अव्ययन के वर्गीकृत एगो सूची बनाईं।

अध्याय 9

क्रिया

जवना शब्द से कवनों काम के कइल चाहे भइल बुझाय, ओंकरे के क्रिया कहल जाला, जइसे-खाइल, पीअल, आइल, गइल, जीअल, मूअल वगैरह। क्रिया विकारी शब्द होले, ओकरा रूप में लिंग, बचन आ पुरुष के अनुसार बदलाव आवत रहेला।

भाषा के लघुत्तम इकाई वाक्य में क्रिया प्रधान होले। बल्कि क्रिया के बिना वाक्य के रचना होइये ना सके। वाक्य में संकेतित पदार्थ क्रिया के संदर्भ के बिना अपना अस्तित्व के सही पहचान ना दे पावे। क्रिये संज्ञा पदन का अर्थ के वाक्य में प्रक्षेपण करेले। संस्कृत के पद-भेद आख्यात के भोजपुरी, हिन्दी वगैरह के व्याकरण 'क्रिया' संज्ञा दिहल गइल बा।

क्रिया के मूल रूप के धातु कहल जाला जवना में प्रत्यय लगा के क्रिया के अलग-अलग रूपन के रचना होला। धातु क्रिया के प्रकृति ह। जइसे-खाइल, जागल, पढ़ल, बइठल क्रिया रूप खा, जाग, पढ़, बईठ धातु में इल, ल प्रत्यय लगा के बनल बा।

क्रिया के भेद

भोजपुरी में क्रियाभेद के पाँच गो आधार बा, प्रत्यय के आधार पर निष्पत्ति के आधार पर, कर्म के आधार पर, अर्थ के आधार पर आ संरचना के आधार पर।

प्रत्यय के आधार पर क्रिया के दूगो भेद होला- कृदन्त क्रिया आ तिङन्त क्रिया।

कृदन्त क्रिया - क्रिया के धातु रूप में कृत् प्रत्यय के योग से कृदन्त क्रिया के रचना होला, जइसे-हँसल, रोवल, पढ़ल, रखवार, देखनिहार, देखत, पढ़त, पढ़ के, उठके वगैरह। कृदन्त क्रिया दू प्रकार के पावल जालें-विकारी कृदन्त क्रिया आ अविकारी कृदन्त क्रिया।

विकारी कृदन्त क्रिया-विकारी कृदन्त क्रिया के चार गो प्रकार बा-(1) क्रियार्थक संज्ञा (2) कर्तृवाचक संज्ञा (3) अपूर्णवाचक कृदन्त आ (4) पूर्णतावाचक कृदन्त।

अविकारी कृदन्त क्रिया - अविकारी कृदन्त क्रिया के चार गो प्रकार बा- (1) पूर्वकालिक कृदन्त (2) तात्कालिक कृदन्त (3) अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त आ (4) पूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त।

विकारी कृदन्त

(1) क्रियार्थक संज्ञा- क्रिया के मूल धातु में ल, ला, व, न चाहे ए प्रत्यय के योग से भोजपुरी के क्रियार्थक संज्ञा के रचना होले, जइसे-हँसल नीमन ह, रोवल बाउर ह, पढ़ला से ग्यान होई, देखले-सुनले का होई, मनावन-दनावन लाग गइल वगैरह वाक्य में हँसल, रोवल, पढ़ला, देखले-सुनले आ मनावन-दनावन क्रियार्थक संज्ञा के रचना खातिर क्रम से ल, ला, ले, न कृत् प्रत्यय के प्रयोग कइल गइल बा।

(2) **कर्तृवाचक संज्ञा**-भोजपुरी में कर्तृवाचक संज्ञा के रचना खातिर धातु में बार, वाला, हार प्रत्यय के प्रयोग पावल जाला, जसे-रखवार (माँस के ढेर पर कुकुर (रखवार), देखनिहार, बनवनिहार (बनावे वाला), सुननीहार (सुनेवाला) वगैरह।

(3) **अपूर्णतावाचक कृदन्त**- भोजपुरी में अपूर्णवाचक कृदन्त धातु के सङ्गे अत, मते प्रत्यय जोड़ के बनेला, जइसे-निहारत (राह निहारत आँखि पथराइल), निहारते (आकाश निहारते बीतल रात), हेरत, हेरते (ढील हेरते आँखि लाग गइल) वगैरह।

(4) **पूर्णतावाचक कृदन्त** - भोजपुरी में पूर्णतावाचक कृदन्त धातु में 'ल' प्रत्यय लगाके बनावल जाला, जइसे-देखल लरिका, सुनल गीत, पढ़ल लरिकी, पाकल आम वगैरह।

अविकारी कृदन्त

पूर्वकालिक कृदन्त-भोजपुरी में क्रिया के पूर्वकालिका बतावे खातिर धातु में 'के' प्रत्यय के प्रयोग कइल जाला जइसे-पढ़के, जाके, खाके, नहाके, उठके वगैरह।

वाक्य प्रयोग-सीतवा पढ़ के खाई, रमुआ नहा के खाई, जटवा खाके जाई वगैरह। भोजपुरी में पूर्वकालिका कृदन्त के उपयोग क्रियाविशेषण के रूप में होला।

तिङन्त क्रिया

क्रिया में धातु रूप में तिङ् प्रत्यय लगा के तिङन्त क्रिया रूप के रचना होला। संस्कृत व्याकरण में क्रिया के तिङति रूप क साध्य आ कृदन्त के सिद्ध कहल गइल बा। 'साध्य' मतलब जवना क्रिया के सिद्ध होखे में संदेह होखे। आदेश, विधि, प्रार्थना, संभावना, प्रश्न आशीर्वाद, निमंत्रण सहित भविष्यत काल आदि के क्रिया हमेशा अनिश्चित चाहे संदिग्ध होले। मतलब एह सब में क्रिया के साध्य रूप रहेला। एह से इन्हन खातिर क्रिया के तिङन्त रूप चलेलें, अइसे त भोजपुरी कृदन्त प्रधान भाषा ह एकरा बावजूद एह भाषा में विधि, आदेश, प्रार्थना, नेवता सहित भविष्यतकाल वगैरह का क्रिया के तिङन्त रूप पढ़स, जास, रोवस, पढ़ऽ, **लिखऽ, दिहीं, दीहन, जइहन, खइहन वगैरह के प्रयोग पावल जाला। बाकिर भोजपुरी के वैयाकरण लोग क्रिया के तिङन्त रूप पर विचार नइखे कइलें।**

क्रिया के निष्पत्ति के आधार पर क्रिया भेद

वैयाकरण लोग क्रिया के शुरू होखे के अवस्था के साध्यावस्था आ पूरा होखे के अवस्था के सिद्धावस्था बतावत, एह दूनों अवस्था के आधार पर क्रिया के दूगो भेद बतवले बा-साध्य क्रिया आ सिद्ध क्रिया।

साध्य क्रिया- जब क्रिया के निष्पति ना भइल होला चाहे संदिग्ध होला त क्रिया साध्य होले, जइसे-राम आवस, सीता जास, रमुआ खाओ, मतेसरी जाओ, हरिआ पढ़े, गदेरना सुते। इहॅवा आवस, जास, खाओ, जाओ, पढ़े, सुते क्रिया साध्य बा, सिद्ध नइखे। एह क्रियन से ई जानकारी

नइखे होत कि ई सब क्रिया होई कि ना। इहँवा क्रिया संदिग्ध बिआ। होखे, होखस, होई, होइहे वगैरह क्रिया साध्य क्रिया हवे स आ एह साध्य क्रियन के प्रयोग से सिद्धो क्रिया साध्य बन जाले, जइसे- रमुआ गइल होई, सुमन आइल होखे में गइल आ आइल में होई आ होखे लगला से क्रिया साध्य बन गइल बा। संदेह, संभावना आ भविष्यत काल क्रिया के साध्य क्रिया होले।

सिद्ध क्रिया-जवना क्रिया से क्रिया के निष्पति निश्चित रूप से उजागर होखे, ओकरा के सिद्ध क्रिया कहल गइल बा। एह क्रियन के सम्पन्न होखे में कहीं-कवनो संदेह नइखे, जइसे-रधिका ससुरा गइली, लगहर दुअरा आ गइल, किशन इस्कूल गइल बा, बाबू जी घरे अइले हँ। वर्तमान आ भूतकाल के क्रिया सब सिद्ध क्रिया होले।

कर्म के आधार पर क्रिया भेद

वाक्य में कर्त्ता आ कर्म के स्थान क्रिया के संदर्भ में बहुते महत्त्व के होला। क्रिया के फल या त कर्त्ता पर पड़ेला चाहे कर्म पर। वाक्य में कर्त्ता जरूर रहेला, बाकिर कुछ क्रिया कर्म लेवेले आ कुछ ना लेवे। एह से क्रिया द्वारा कर्म लेवे आ ना लेवे के आधार पर क्रिया के दूगो भेद होला-सकर्मक क्रिया आ अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया-जवना क्रिया के फल कर्त्ता के अलावे कर्मो पर पड़े ओकरा के सकर्मक क्रिया कहल जाला, जइसे-गाय कुटी खा तिआ। इहाँ खाइल क्रिया के फल कर्म कुटी पर पड़ता । एह से 'खाइल' सकर्मक क्रिया ह। जब क्रिया दू कर्म के विधान करे आ ओकर फल दूनों पर पड़े

त ऊ **द्विकर्मक क्रिया** कहाले, जइसे-माई बेटा के दूध पिआवतारी। इहाँ पीये के फल बेटा आ दूध दूनों पर पड़ता।

अकर्मक क्रिया-जवना क्रिया के फल खाली कर्त्ता पर पड़ेला, जइसे- जीव घबराता, ऊ लजातिआ, राम सुतता, हवा बहता में घबराये, लजाये, सुते आ बहे के क्रिया कर्त्ता द्वारा सम्पन्न होखत बा आ ओकर फलो कर्ते पर पड़ता। इहाँ कवनो कर्म के जरूरते नइखे। एह से इहाँ क्रिया अकर्मक बा।

अर्थ के आधार पर क्रिया भेदः

अर्थ के आधार पर क्रिया के चार गो भेद बतावल गइल बा- प्रेरणार्थक क्रिया, कर्मकर्तृक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया आ क्रियार्थक क्रिया।

प्रेरणार्थक क्रिया-जहाँ कर्त्ता क्रिया व्यापार के प्रेरणा देवेला, उहाँ क्रिया प्रेरणार्थक होले। एह क्रिया के कर्त्ता दूगों होलें। एगो मुख्य कर्त्ता जे असल में काम करेलें आ दोसरे प्रेरक चाहे प्रयोजक कर्त्ता जे प्रेरणा देलें। जइसे गुरुजी नितेश से किताब पढ़वावतारे। इहँवा मुख्य कर्त्ता नितेश हवें, बाकिर गुरु जी प्रेरक बाड़े। ऊ प्रेरणा देके नितेश से किताब पढ़वाव तारे। एह से ऊ (गुरुजी) प्रयोजक कर्त्ता बाड़े। पीटल-पिटवावल, काटल-कटवावल, लिखल-लिखवावल, चढ़ल-चढ़वावल, मिटावल-मिटवावल, साटल-सटवावल वगैरह प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण बाड़ेस। एकरा खातिर मूल क्रिया अंतिम भोजपुरी 'ल' प्रत्यय हटा के प्रायः 'वावल' प्रत्यय जोड़ दीहल जाला।

कर्म कर्तृक प्रत्यय-जहँवा कर्म कर्त्ता जइसन क्रिया के साथे प्रयोग में आवेला आ वक्ता कर्त्ता के प्रयोग ना करे तब उहँवा कर्म कर्तृ

क्रिया होले, मतलब उहँवा कर्म क्रिया के कर्त्ता बन जाला। जइसे-भात पाकता, गाछ कटाता, रोटी जरता वगैरह, वाक्य में वक्ता के कर्त्ता के उल्लेख कइल जरूरी नइखें, पाकल, काटल, जरल सकर्मक क्रिया हवेस। भात, गाछ, रोटी कर्म बाड़ेस, बाकिर इहँवा एह सब के प्रयोग कर्त्ता जइसन भइल बा। एह से इहँवा क्रिया कर्मकर्तृक कहाई।

पूर्वकालिक क्रिया-जवन क्रिया वाक्य का पूर्ण (विधेय) क्रिया के पहिले घट जाय ओकरा के पूर्वकालिक क्रिया कहल जाला, जइसे-कविता पढ़ के जाई, किसन खेल के पढ़ी, सर्वेन्द्र खाके पढ़ी, ज्ञान्ति पढ़के खइहन वगैरह। एह वाक्यन में पढ़के, खेलके, खा के पूर्वकालिक क्रिया ह। पूर्ण क्रिया जाई, पढ़ी आ खइहन के पहिलहीं एह क्रिया के व्यापार घटित हो जाता। पूर्वकालिक क्रिया खातिर धातु रूप में भोजपुरी के 'के' प्रत्यय लगावल जाला।

क्रियार्थक क्रिया-विधेय चाहे पूर्ण क्रिया जवना के अर्थ होले, ओकरे के क्रियार्थक क्रिया कहल जाला। एकरा नाँवे से ई उजागर हो जाता कि मुख्य चाहे पूर्ण क्रिया के अर्थे खातिर ई क्रिया आवेले, जइसे-विजय जी खीर खाये हमरा घरे अइहें, हम चाय पीये उपधेया जी के घरे जाएब, वाक्य में ई बात साफ बा कि हम उपधेया जी किहाँ जायेब तबे चाय पीअब, विजय हमरा घरे अइहें तबे खीर खइहें। इहँवा क्रियार्थक क्रिया मुख्य चाहे पूर्ण क्रिया के बाद घटित होई। ई क्रिया पूर्वकालिक क्रिया के उल्टा ह। पूर्वकालिक क्रिया पूर्णक्रिया के पहिले घटित हो जांले आ क्रियार्थक क्रिया पूर्ण क्रिया के बाद होला।

संयुक्त क्रिया के भेद

(i) अभ्यासबोधक-भूतकालिक कृदन्त का आगा 'कर' के प्रयोग से अभ्यासबोधक बनेला। एह से क्रिया के करे के अभ्यास मालूम होला। जइसे-ऊ गावल करेलन। तूँ हँसल करेल। हम खेलल करीले।

(ii) इच्छाबोधक-कृदन्त का आगे 'चाहल' का योग से इंच्छाबोधक संयुक्त क्रिया बनेले। एह से कर्त्ता का कवनो काम करे का इच्छा के बोध होला। जइसे-हम किताब देखे के चाहत बानी। ऊ जीअल चाहतारन।

(iii) अवधारणबोधक-पूर्वकालिक कृदन्त में 'उठल, बइठल, लेल, देल' का प्रयोग से ई संयुक्त क्रिया बनेला। ए से धृष्टता, उतावलापन, औचकपन के भी बोध होला। जइसे-सभे चिहा उठल। मार बैठल। तूँ कह देल। संभे सुन लेलक। गाड़ी लड़ गइल मगर हम भागे से बाँच गइनी।

(iv) आरम्भबोधक -एह संयुक्त क्रिया के निर्माण क्रियार्थक संज्ञा का साथ'लागल' का योग से होला। एह से क्रिया आरम्भ होखे के बोध होला। जइसे-पानी बरसे लागल। लरिका स पढ़े लागल। इहाँ क्रियार्थक संज्ञा के प्रत्यययुक्त संश्लिष्ट रूप लोकमुख से व्यवहार में बा। जइसे-बरसल-बरसे, पढ़ल-पढ़े।

(v) निरन्तरताबोधक-सकर्मक क्रिया का आगे 'जा', 'रह' का मेल से निरन्तरताबोधक संयुक्त क्रिया बनेले। जइसे-लिखत जा। कहत जाईं सुनत रह। पावत रहनी। खात रहलें।

(**vi**) **निश्चयबोधक**-क्रिया का आगा 'ले', 'दे', 'बइठ' का मेल से निश्चय-बोधक संयुक्त क्रिया बनेला। ए से मुख्य क्रिया का व्यापार का निश्चय के बोध होला। जइसे-ना मनब, त हम मार बइठब। कह लेल? कह घाल। ऊ चल पड़लन।

(**vii**) **शक्तिबोधक**-धातु के आगा 'सकल' जोड़ला से शक्तिबोध के संयुक्त क्रिया बनेले। ए से कर्त्ता का काम करे का शक्ति के बोध होला। जइसे-तूँ चल सकेल। ऊ दौड़ सकीहें। हम पढ़ सकीले। ऊ पढ़ सकेलन।

(**viii**) **समाप्तिबोधक**-धातु का आगा 'चुकल' जोड़ला से संयुक्त क्रिया बनेले। एह से मुख्य क्रिया के समाप्ति आ पूरा हो गइला के बोध होला। जइसे-हम खा चुकनी। ऊ पढ़ चुकलन।

(**ix**) **अनुमतिबोधक**-क्रियार्थक संज्ञा का आगा 'देल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से कवनो काम करे देवे के अनुमति देवे भा ना देवे के बोध होला। जइसे-उनका के जाय द । तूँ हमरा के बोले ना देल। लरिका के खेले द ।

(**x**) **नित्यताबोधक** -वर्तमानकालिक कृदन्त का आगे 'आइल, रहल, गइल' का मेल से ई संयुक्त क्रिया बनेले। एकरा से क्रिया का बन्द ना होखे का नित्यता के बोध होला। जइसे-पानी बरसत रही। लरिका पढ़त गइल। माधो बोलत आवत रहे।

(**xi**) **अवकाशबोधक**-क्रियार्थक संज्ञा का बाद 'पावल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से क्रिया का निष्पन्न होखे में अवकाश के

बोध होला। जइसे–ऊ बोल ना पवलन। चोर भाग ना पावे। हम हँस ना पवनी।

(xii) **आवश्यकताबोधक**–क्रियार्थक संज्ञा का बाद 'चाहीं', 'पड़ल' का मेल से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से काम का आवश्यकता भा विवशता के बोध होला। जइसे–उनका जाये के चाहीं। दुखिया के मदद करे के चाहीं। साँच बात कहे के पड़ल।

(xiii) **योग्यताबोधक**–क्रिया का आगा 'बनल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से क्रिया का सम्पादन में योग्यता के बोध होला। जइसे–हमरा से उनकर दुख देखल ना गइल। उनका कुछओ कहत ना बनल। चीज अछइत का लाथ कइल बनी? ई क्रिया अधिका नकारात्मक आ प्रश्नवाचक संदर्भ में प्रयोग होला।

नामधातु–जब कवनो संज्ञा (नाम) धातु के रूप में प्रयुक्त होय त ओकरा के नामधातु कहल जाला, एह नाम धातुअन से भी सब तरह के क्रियापद बनेला। जइसे–कविता सविता के लतिया दिहली, छोटकु बड़कु से बतिआवत बाड़न। इहँवा 'लात' आ 'बात' नाम बा जवना से लतिआवल, बतिआवल नामधातु क्रिया बनल बा। विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव 'भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा' में बतवले बाड़न कि 'मूल क्रिया के अलावे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय से भी क्रिया बनेले, ओइसने क्रिया के नाम नामधातु कहल जाला, जइसे–

(i) **संज्ञा से बनल नाम धातु** - लात -लतिआवल, हाथ–हथिआवल, ठेहुना - ठेहुनिआवल, अँगुरी - अँगुरिआवल, गरदन -

गरदनिआवल, छाती- छतिआवल, बात-बतिआवल, करवट- करवटल, लाठी-लठिआवल, घाम- घमावल, पानी-पनिआइल, फेन-फेनावल, दुख-दुखावल, पाँजा-पँजिआवल, गोड़-गोड़िआवल, पीठ-पिठिआवल, केहुनी-केहुनिआवल, मुक्का-मुकिआवल, कनखी-कनखिआवल, कान-अकानल, गारी-गरिआवल, जाड़-जड़वल, भारी-भरिआवल, भेंट-भेंटाइल, नाक-नकिआवल, आगी-अगिआएल, लोर-लोराइल, लाज-लजाइल, झोंटा-झोंटिआवल आदि।

(ii) सर्वनाम से बनल नामधातु- जइसे अपन से अपनावल

(iii) विशेषण से बनल नामधातु-लाल-ललिआएल, हरिअर-हरिआराइल, मोट-मोटाइल, ठाढ़-ठढ़िआएल, भक्कू-भकुआएल, सोझ-सोझिआवल, लम्मा-लमरावल, ऊँच-ऊँचकावल, ठंढा-ठंढावल, जवान-जुआएल, सोहावन-सोहाएल, गरहू-गरहुआइल, मीठ-मिठाएल, करिया-करिआएल, पीअर-पिअराएल, दूबर-दुबराएल, गरम-गरमाएल, ढीठ- ढिठाएल, टेंढ़-टेढ़िआवल, गोल-पगलाएल, गाढ़-गढ़ाएल, तीत-तिताएल, खट्टा-खट्टाएल।

कुछ क्षेत्र में 'ए' का जगे 'ई' के प्रयोग होला-जइसे गरमाइल, पगलाइल, खट्टाइल।

(iv) अव्यय से बनल नाम धातु-नियरा-नियराइल, पाछा-पछुआइल, बाहर-बहरिआइल, हँ-सकारल, न-नकारल, आगा- अगुआइल, नजदीक- नजदिकाइल नगचि-निगचाइल, औचक- अकचकाइल।

(v) अनुकरण से बनल नामधातु-कें कें-केंकिआइल, ठक ठक-ठकठकावल, चों चों-चोंचिआइल, छप छप-छपछपावल, कटकट-

कटकटावल, फों फों-फोंफिआइल, खट खट-खटखटावल, झन झन-झनझनावल, छों छों-छोंछिआएल, में में-मेंमिआएल भा मेंमिआइल।

बोध प्रश्न

1. क्रिया के परिभाषा दीं।
2. भोजपुरी में क्रियाभेद के कव गो आधार बा।
3. प्रत्यय के आधार पर क्रिया के दू गो भेद होला।
4. संरचना के आधार पर क्रिया के कव गो भेद होला।
5. संयुक्त क्रिया के भेद बताईं।

अध्याय 10

काल

काल के मतलब होला-समय। काम करे भा होखे के कवनो समय होला। जवना समय में कवनो काम पूरा भा शुरू होला ओकरा के काल कहल जाला। एह तरीका से -**क्रिया के ओह रूपांतर के काल कहल जाला जवना से कर्त्ता द्वारा नियत कार्य-व्यापार के करे के समय के बोध होला।**

क्रिया के समय या त बीत गइल हो सकेला भा हो सकेला कि अबहीं चलते भा आगे आवे वाला समय में होखे के संभावना हो सकेला। एह तरह से 'काल' के तीन गो स्थिति हो जाला। जवन क्रिया बीत गइल ओकरा के भूतकाल में, जवन क्रिया चल रहल बिआ ओकरा के वर्तमान काल में आ जवन क्रिया के आगे आवेवाला समय में शुरू होखे के संभावना बा ओकरा के भविष्यत काल में रखल जाला। एह तरह से काल तीन प्रकार के होला-1.भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत काल।

भूतकाल

जवन क्रिया से काम के पूरा समाप्त हो गइला के बोध होखेला ओकरा के भूतकाल के क्रिया कहल जाला। जइसें-'राम गइलन', 'सीता खा लिहलीं', एह में जाए आ खाए के काम पूरा हो गइल बा।

भूतकाल के छव गो भेद होला–1. सामान्य भूत, 2. पूर्णभूत 3. अपूर्ण भूत, 4. आसन्नभूत भा तात्कालिक भूत 5. संदिग्ध भूत (अपूर्ण संदिग्ध भूत, पूर्ण संदिग्ध भूत) 6. हेतुहेतुमद् भूत।

1. सामान्य भूत–क्रिया के जवना रूप से भूतकाल का सामान्य रूप के बोध होला ओकरा के सामान्य भूतकाल कहल जाला। एह में क्रिया के घटित समय विशेष के ज्ञान ना प्राप्त होला। जइसे–सीता गइली, राम गइलन।

2. आसन्न भूत- क्रिया के जवना रूप से आसन्न भा निकट के समय में अर्थात् तत्काल घटित होखे के सूचना मिले ओकरा के आसन्न भूतकाल कहल जाला। 'खेल लेलन', 'खा लेलन'।

3. पूर्णभूत–क्रिया के जवना रूप से क्रिया के पूरा होखे के समय के ई स्पष्ट बोध हो जाला कि क्रिया के खत्म भइला काफी समय हो गइल बा, त ओकरा के पूर्णभूत कहल जाला। जइसे–'ऊ खा लेलन', 'ऊ खेल लेलन'।

4. अपूर्ण भूत–क्रिया के जवना रूप से इ पता चले कि क्रिया पहिलहि से हो रहल बा, बाकिर ऊ समाप्त भइल की ना एकर पता ना चले ओकरा के अपूर्ण भूत कहल जाला। जइसे- 'ऊ खेलत रहलन', 'रमेसर खात रहलन', 'गीता जात रहली।

5. संदिग्ध भूत–क्रिया के जवना रूप से इ पता ना चले कि क्रिया भूतकाल में भइल की ना अर्थात् क्रिया के पूरा होखे के संबंध में

संदेह बनल रहे त ओकरा के संदिग्ध भूत कहल जाला। जइसे-ऊ खइले होइहन', 'ऊ गइल होइहन', 'ऊ खेलले होइहन'। 'बाबूजी खा लेले होइहन'।

6. **हेतुहेतुमदभूत**-एह में क्रिया के सशर्त पूरा होखे के भाव होला। कहे के मतलब बा कि पहिलकी क्रिया के पूर्णता दोसरकी क्रिया पर निर्भर करेले। जइसे 'ऊ अइतन त हम जइतीं'।

वर्तमान काल

'क्रिया के जवना रूप से क्रिया के व्यापार के निरंतरता के अर्थात् वर्तमान समयो में चलत रहे के बोध होखेला ओकरा के वर्तमान काल कहल जाला।' जइसे-ऊ खात बाड़न, हम जात बानी, राधा खेलत बाड़ी। एह में 'खाए, जाए, खेले' के क्रिया वर्तमान समय में भी चल रहल बा, अभी खत्म नइखे भइल।

वर्तमान काल के पाँच गो भेद होला-

1. सामान्य वर्तमान, 2. अपूर्ण वर्तमान, 3. पूर्ण वर्तमान, 4. संदिग्ध वर्तमान, 5. संभाव्य वर्तमान

1. **सामान्य वर्तमान**-क्रिया के जवना रूप से क्रिया के वर्तमान समय में हो रहल मात्र पावल जाय ओकरा के सामान्य वर्तमान कहल जाला। जइसे 'तू खात बाड़', 'हम पढ़त बानी', 'ऊ पढ़त हवे', 'ऊ पढ़त बड़ुए'।

2. **संदिग्ध वर्तमान**-क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के होखे के संबंध में संदेह बनल रहे ओकरा के संदिग्ध वर्तमान

कहल जाला। जइसे-'ऊ शायद आवत होइहन', 'बाबूजी आवत होइब।

3. अपूर्ण वर्तमान-क्रिया के जवना रूप से कार्य के वर्तमान काल में लगातार होत रहे के बोध होय आ कार्य अभी पूरा ना भइल होखे, ओकरा के अपूर्ण वर्तमान कहल जाला।

जइसे- ऊ खा रहल हवन। रमेसर खेल रहल बाड़े। ऊ पढ रहल बाड़न।

4. पूर्ण वर्तमान-क्रिया के जवना रूप से कार्य के वर्तमान काल में पूरा होखे के बोध होला ओकरा के पूर्ण वर्तमान कहल जाला। जइसे-'हम खेल लेली ह', 'ऊ खा लेली ह', 'ऊ गइली ह'।

5. संभाव्य वर्तमान-क्रिया के जे रूप से वर्तमान काल में कार्य के पूरा होखे के संभावना के बोध होखे ओकरा के संभाव्य वर्तमान कहल जाला। जइसे-'राम लौटल होइहन', 'ऊ जात होखिहन', 'रमेसर खेत पटवले होइहन'।

भविष्यत् काल

क्रिया के जवना रूप से कार्य के आगे आवेवाला समय में होखे के बोध होला ओकरा के भविष्यत् काल कहल जाला।' जइसे-हम जाइब, ऊ खेलिहन, सीता गीत गइहन। सब वाक्य में जाये, खेले, गावे के क्रिया आवेवाला समय में होखे के भाव प्रकट होता।

भविष्यत् काल के दू गो रूप प्रचलित बा-

1. सामान्य भविष्यत् 2. संभाव्य भविष्यत्

1. सामान्य भविष्यत्-जहाँ साधारण रूप से आवेवाला समय में कार्य के करे भा होखे के भाव पावल जाला ओकरा के सामान्य भविष्यत् काल कहल जाला। जइसे-'ऊ जइहन', 'ऊ खइहन', 'सीता गीत गइहन'।

2. संभाव्य भविष्यत्-भविष्य में कार्य होखे में संदेह भा संभावना भा इच्छा के बोध होखे ओकरा के संभाव्य भविष्यत् कहल जाला। जइसे-ऊ जा सकेलन', 'तबियत ठीक रही त खा लिहन', 'पढ़िहन त फर्स्ट हो जइहन'।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(समय के बोध, भूतकाल, वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान, संभाव्य वर्तमान, भविष्यत् काल, संभाव्य भविष्यत्)

(क) क्रिया के ऊ रूपांतर के काल कहल जाला जवना से कर्त्ता द्वारा नियत कार्य व्यापार के करे के .... होला।

(ख) जवन क्रिया से काम के पूरा मतलब समाप्त हो गइला के बोध होखेला ओकरा के ....के क्रिया कहल जाला।

(ग) क्रिया के जवना रूप से क्रिया के व्यापार के निरंतरता के अर्थात् वर्तमान समयो में चलत रहे के बोध होखेला ओकरा के .... कहल जाला।'

(घ) क्रिया के जवना रूप से क्रिया के वर्तमान समय में हो रहल मात्र पावल जाय ओकरा के............कहल जाला।

(ङ) क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के पूरा होखे के संभावना के बोध होखे ओकरा के .... कहल जाला।

(च) क्रिया के जवना रूप से कार्य के आगे आवेवाला समय में होखे के बोध होला ओकरा के .... कहल जाला।

(छ) भविष्य में कार्य होखे में संदेह भा संभावना भा इच्छा के बोध होखे ओकरा के .... कहल जाला।

2. मिलान करीं

	अ	ब
(क)	क्रिया के जवना रूप से भूतकाल के सामान्य रूप के बोध होला ओकरा के ....कहलजाला।	(i)सामान्य वर्तमान
(ख)	क्रिया के जवना रूप से आसन्न भा निकट के समय में अर्थात् तत्काल घटित होखे के सूचना मिले ओकरा के .... कहल जाला।	(ii) समान्य भूत
(ग)	क्रिया के जवना रूप से क्रिया के वर्तमान समय में हो रहल मात्र पावल जाय ओकरा के .... कहल जाला।	(iii) आसन्न भूत
(घ)	क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के होखे के संबंध में संदेह बनल रहे ओकरा के .... कहल जाला।	(iv) पूर्ण वर्तमान
(ङ)	क्रिया के जवना रूप से कार्य के वर्तमान काल में पूरा होखे के बोध होला ओकरा के .... कहल जाला।	(v) संदिग्ध वर्तमान

3. सही विकल्प पर (✓) आऊर गलत पर (×) निसान लगाईं ।

(क) भूतकाल के दू गो भेद होला। ( )

(ख) साधारण रूप से आवेवाला समय में कार्य करे भा होखे के भाव पावल जाला ओकरा के सामान्य भविष्यत् काल कहल जाला। ( )

(ग) क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के पूरा होखे के संभावना के बोध होखे ओकरा के संभाव्य भविष्यत कहल जाला। ( )

(घ) 'ऊ खा रहल हवन' अपूर्ण वर्तमान काल में बा। ( )

(ङ) 'ऊ खइले होहन' में 'खइले' क्रिया पूर्ण भूत ह। ( )

(च) हेतुहेतुमदभूत में क्रिया के सशर्त पूरा होखे के भाव होला। ( )

4. कोष्ठक में दिहल निर्देश के अनुसार खाली जगह पूरा करीं-

(क) रमेसर अबही.............................। (अपूर्ण भूत)

(ख) सुरेश बाजारे ....। (पूर्णभूत)

(ग) हम उनका के.........त पहचान............। (हेतुहेतुमदभूत)

5. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दिहल जाय।

(क) काल केकरा के कहल जाला।

(ख) काल के कैगो आ कवन-कवन भेद होला। उदाहरण समेत लिखल जाय।

(ग) भूतकाल के परिभाषा आऊर भेद लिखल जाय।

(घ) हेतुहेतुमदभूत के परिभाषा लिखल जाय।

जाने के चाही

(क) काल के संस्कृत में लकार अनुसार अनेक रूप कइल गइल बा, जेकर संख्या 12 गो बा, ओहनी के उदाहरण समेत लिखल जाय।

(ख) हेतुहेतुमदभूत आ एकरा से बनेवाली क्रिया के संग्रह कइल जाय।

(ग) सामान्य भूत से कवन-कवन क्रिया बनेलीसन।

अध्याय 11

वचन

व्याकरण में शब्दन के संख्याबोधक विकारी रूप के 'वंचन' कहल जाला। व्याकरण के जानकार लोग के अनुसार, 'संज्ञा', सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया के जवना रूप से संख्या के बोध होय, ओकरा के 'वचन' कहल जाला। वस्तु के संख्या 'एक' आ एक से अधिक 'अनेक' के आधार पर 'वचन' के दू गो भेद कइल गइल बा- एक बचन आ बहुबचन।

एकवचन-जवना शब्द-रूप से एक पदार्थ चाहे एक व्यक्ति के बोध होला, ओकरा के एकवचन कहल जाला, जइसे-लइका, बेटी, घोड़ा, हाथी, बाल्टी वगैरह।

बहुवचन- जवना शब्द रूप से एक से अधिक पदार्थ चाहे व्यक्ति के बोध होला, ओकरा के बहुवचन कहल जाला, जइसे-लइकन, घोरिन, हाथिन, बाल्टियन वगैरह।

भोजपुरी के शब्द अपना मूल रूप में एकवचन होला उनका में बहुवचन सूचक प्रत्यय चाहे बहुत्ववाची शब्द लगा के बहुवचन बनावे के प्रचलन बा।

भोजपुरी में वचन परिवर्त्तन के नियम :

1. भोजपुरी के एकवचन वाला शब्दन में अन, अनि, अन्ह, अन्हि, आन्हि, न, न्ह, इन, उन, वनि, वन्हि, वऩ, वन्ह वगैरह प्रत्यय जोड़ के बहुवचन बनावल जाला, जइसे-गाछ-गाछन, बएल-बएलन, लइका-लइकन, घर-घरन्ह/घरन, चमार-चमारन्ह, चमारन्हि, गाछ-गाछन, गाछन्हि/गछवन वगैरह। एकरा में आकारान्त शब्द के अकारान्त आ ईकारान्त शब्द के इकारान्त बना के एह प्रत्ययन के लगावल जाला।

2. इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त आ ऊकारान्त एकवचन शब्दन के 'इ' चाहे 'ई' के 'इय' आ 'उ' चाहे 'ऊ' के 'उव्' हो जाला। अन से मिलके 'ई' आ 'ऊ' क्रमशः 'इयन' आ उवन हो जाला। कबो-कबो ई, ऊ का ह्रस्व आ 'अन' का 'अ' के लोप हो जाला, जइसे-हाथी-हाथियन/हाथिन, भालू-भालुवन/भालुन, बाबू-बाबुवन/बबुवन/ बाबुअन वगैरह।

3. भोजपुरी में सब, सभी, स, लोग, लोगन्ह, लोगे वगैरह बहुत्व सूचक चाहे समुच्चयवाचक शब्दन के जोड़ के एकवचन से बहुवचन बनावल जाला, जइसे-लरिका- लरिका सब, लरिका स, लरिका लोग, लरिका लोगे वगैरह/ सब, सभी शब्द के पहिलहुँ जोड़ के बहुवचन बनावल जाला, जइसे-सब हाथी/सभ हाथी, सब घोड़ा/ सभ घोड़ा, सब लरिका/ सभ लरिका, सब गाय/ सभ गाय वगैरह।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भोजपुरी में वचन के कए गो भेद बतावल बा।

(क) एगो (ख) तीन गो

(ग) दू गो (घ) चार गो

2. 'लरिका' शब्द के बहुवचन का होई।

(क) लरके (ख) लरिकन

(ग) लरकी (घ) लरकों

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वचन का ह? एकरा भेदन के परिचय दीं।
2. भोजपुरी में वचन परिवर्तन के नियम का बा, उदाहरण सहित फरिआ के लिखीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वचन आ ओकरा भेदन के परिचय देत एकवचन से बहुवचन बनावे के नियम के बारे में बताईं।

अध्याय 12

लिंग

"संज्ञा के जवना रूप से वस्तु चाहे व्यक्ति के नर चाहे मादा जाति के बोध होय, ओकरा के व्याकरण में **लिंग** कहल जाला।

'लिंग' संस्कृत के शब्द ह जवना के अर्थ 'चिह्न' बतावल गइल बा। चिह्न मतलब जवना से संज्ञा के पहचानल जाव। अइसे व्याकरण चाहे भाषा-विज्ञान में लिंग-विचार के कवनो तार्किक आधार नइखे दिहल गइल जवना से लिंग निर्णय के स्थायी नियम बन सके। सामान्य तौर पर लिंग के दूगो प्रकार बा-प्राकृतिक आ व्याकरणिक। प्राकृतिक लिंग के लक्षण बतावल बा कि स्त्री स्तन आ केशावाली होली आ पुरुष लोमश (बर-बर रोआँ वाला)। जहाँ एह दूनो चिह्न वाला वस्तु पुल्लिंग, स्त्री चिह्नवाली वस्तु स्त्रीलिंग।

भोजपुरी में लिंग के दुइएगो प्रकार बा-**पुल्लिग** आ **स्त्रीलिंग**।

भोजपुरी के प्राणी वाचक शब्दन में लिंग भेद कइल आसान बा, भोजपुरी में प्रयुक्त प्राणींवाचक, संबंध सूचक, पदसूचक, जातिसूचक शब्दन के लिंग भेद के उदाहरण बा-

प्राणीवाचक - बैल-गाय, भइँसा-भइँसी, बकरा-बकरी, कुत्ता-कुत्तिया, पिल्ला-पिल्ली, गदहा-गदही, बाघ-बाघिन, बानर-बनरी वगैरह।

संबंध सूचक - बाप-मतारी, भाई-बहिन, भाई-भउजाई, बेटा-बेटी, भतीजा-भतीजी, पोता-पोती, नाती-नतिनी, बेटा-पतोह, चाचा-चाची, दादा-दादी, जाउत-जइधी, ससुर-सास, फूफा-फुआ, आजा-आजी, देवर-दिआदिन वगैरह।

पदसूचक - मालिक-मलकिनी, गुरु-गुरुआइन, चेला-चेलिन, माहटर-महटराइन चाहे माहटरिन, दरोगा-दरोगाइन, राजा-रानी, वगैरह।

जाति सूचक- बरहामन-बरहामनी, राजपूत-राजपुतनी/राजपुताइन, भूमिहार (भूइंहार)-भूमिहारिन (भूइंहारिन), कायथ-कायथिन, पंडित-पंडिताइन, साव-सहुआइन, तेली-तेलिन, माली-मालिन, अहिर-अहिरिन, मेहतर-मेहतरिन वगैरह।

भोजपुरी में प्राणिवाचक छोट जीव, कीड़ा-मकोड़ा सब के पुल्लिंग रूप में प्रयोग बा ओकर, स्त्रीलिंग रूप नइखें, जइसे-फुफुन्दी, छुछुन्दर, लीख, ढील, गोजर, बिच्छी वगैरह के प्रयोग पुल्लिंग रूप में प्रचलित बा। कुछ प्राणीवाचक शब्द के खाली स्त्रीलिंग रूप बा, पुल्लिंग रूप नइखे, जइसे-सउतिन, एहवाती, चुरइन, कोइल, धोबिन (एगो चिरई) वगैरह। कुछ प्राणीवाचक खातिर दू-दू गो शब्द एके लिंग में प्रचलित बा, जइसे-भइंस, भइंसी (दूनो स्त्री.) जनाना-जनानी (दूनों स्त्री.) वगैरह।

भोजपुरी में क्रिया आ विशेषण के जरिये लिंग सूचित होला, जइसे-

क्रिया- राम जाता/जा तारन

सीता जातिया/जा तारी

विशेषण- बरका लइका/ लरिका

बरकी लइकी/ लरिकी

भोजपुरी में संज्ञा के लिंग हिन्दी जइसन संबंध सूचक विभक्ति चाहे परसर्ग के प्रभावित ना करे। एकरा में हमेशा एके परसर्ग चाहे विभक्ति 'के' के प्रयोग होला, जइसे-देश के नर, देश के नारी, देश के सम्पत्ति वगैरह। एकरा में देश का नर, देश की नारी, देश की सम्पत्ति जइसन 'का' आ 'की' के प्रयोग ना होके खाली 'के' के प्रयोग प्रचलित बा।

भोजपुरी के लिंग सूचक प्रत्यय

(क) पुल्लिंग प्रत्यय-

भोजपुरी में 'अ' आ 'आ' से अंत होखे वाला शब्द प्राय: पुल्लिंग होला, जइसे-

अकारान्त शब्द-घर, दुआर, मचान, परात, बाँस, आम, गाँज, खोंप, मेंह, खेत, हर जुआद, पीपर, बूँट, बबूर, लूक, आङ्गन, लोर, असकत, अपटन, जमघट, झोंक, ठाट, मदर, बाप, ससुर, सार, मल्लाह, ढ़लोहार, कोंहार, सोनार, इयार, देहात, सेवार, उड़िस, जोंक, ढ़ील वगैरह।

अपवाद-सड़क, सरकार, साइकिल, रेल, कमीज वगैरह।

आकारान्त शब्द-हवा, पछुआ, .हाथा, दखिनहा, दिअरखा, खपड़ा, नरिआ, रहेठा, केरा, ढाठा, भूसा, गड़हा, खावा, हेंगा, खूँटा, बीआ, पैना, महुआ, लोटा, छनवटा, बाल्टा, पचखा, लेवा, डोरा, बरछा, छाता, सीमिआना, बगैरह।

अपवाद-पुरवइया, खटिया, जमुनिया, थरिया, बगइचा वगैरह

भोजपुरी में उकारान्त आ ऊकारान्त शब्द पुल्लिंग होलें, जइसे-बालू, आलू, गेंहूँ, कोल्हू, चीजु, राहु, खड़ाऊँ, तम्बू (तमू), नीबू, मधु, लट्टू, लेहू वगैरह।

(ख) स्त्रीलिंग प्रत्यय -

इकारान्त आ ईकारान्त शब्द भोजपुरी में स्त्रीलिंग होलें, जइसे-राति, बाति, नदी, उत्तरही, दखिनही, फुफेरी, ममेरी, चचेरी, खाटी, चउकी, गड़ही, बाल्टी, दँवरी, लरही, डाढ़ि, छाड़ि, छिपुली, गगरी, बटुली, चरखी, गँड़ासी, खुरूपी, गमछी, जोन्ही, दुभि वगैरह।

अपवाद-पतई, बालि, कोबी, रमतरोई, सुथनी, पानी, सनई, पाँकी, फीली वगैरह।

भोजपुरी के स्त्रीवाची प्रत्ययन में इया, आइन, इन, आनी, इनी वगैरह प्रमुख बा, जइसे

इया-पुरवइया, खटिया, रहतिया, सुतपुतिया, मदुइया, थरिया, डेहरिया, बछिया, बिछमतिया, डिबिआ वगैरह।

आइन- गुरुआइन, पंडिताइन, ललाइन, ठकुराइन, सहुआइन वगैरह।

इन-लोहइन, चमइन, कहारिन, रजपुतिन, दुसाधिन, नटुइन वगैरह।

आनी-नोकरानी, जेठानी, देवरानी वगैरह।

इनी-समधिनी, गोतिनी, कुरमिनी, मलकिनी, दोस्तिनी वगैरह।

भोजपुरी में 'इया' स्त्रीवाची प्रत्यय के उच्चारण 'इआ' के रूप में भी प्रचलित बा।

एह तरह से भोजपुरी लिंग परिवर्तन के जवन नियम परम्परा से प्रचलित बा, ओकरा से ई साफ उजागर होता कि लिंग परिवर्तन खातिर पुरुषवाची शब्दन में ही परिवर्तन होला। स्त्रीवाची शब्दन से पुरुष शब्द ना बनावल आय। भोजपुरी में कुछ शब्द मूल रूप से पुल्लिंग होले आ कुछ स्त्रीलिंग जवना में लिंग-परिवर्तन खातिर कवनो प्रत्यय के जरूरत ना होय, जइसे-नर-मादा, मरद-औरत/मेहरारू, बाप-मतारी/ माई पति-पत्नी, भाई-बहिन वगैरह। कुछ पुल्लिंग शब्दन में स्त्री वाची प्रत्यय ई, इया, आइन, इन, इनी वगैरह लगा के स्त्रीलिंग शब्द बनावे के प्रचलन लोक-व्यवहार में बा।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'जइधी' शब्द के पुल्लिंग शब्द का होई।

(क) जीजा (ख) जीजी

(ग) जाउत (घ) आजी

2. 'बाघ' शब्द के स्त्रीलिंग शब्द का होई।

(क) बघाइन (ख) बाघिन

(ग) बघनी (घ) बाघनी

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग' के परिभाषा देत ओकरा भेदन के परिचय दीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग आ ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय देत भोजपुरी के लिंग सूचक प्रत्ययन के बारे में बताईं।

अध्याय 13

वाच्य

संस्कृत में वाच्य के 'प्रयोग' कहल जाला। प्रयोग के मतलब क्रिया के रूपान्तरित प्रयोग से बा। वाक्य में प्रयुक्त लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार क्रिया बदलत रहेले। क्रिया के रूपांतर में कबहूँ कर्त्ता, कबहूँ कर्म त कबहूँ भाव प्रधान हो जाला। एह से वाक्य में क्रिया के रूपांतरित प्रयोग के तीन स्थिति मानल गइल बा-1. कर्तरिप्रयोग (कर्त्ता के अनुसार) 2. कर्मणि प्रयोग (कर्म के अनुसार) 3. भाव प्रयोग (भाव के अनुसार)। वाच्य क्रिया के ऊ रूपांतरित प्रयोग बोधे होला जवना से एह बात के भाव प्रकट होला कि वाक्य में कर्त्ता, कर्म भा भाव में से कवना के प्रधानता बा। कहे के मतलब बा कि क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष में बदलाव के कवन प्रधान बा-कर्त्ता, कर्म भा दूनों में से कवनो ना। दोसरा तरह से कहल जा सकेला कि 'वाक्य में कर्त्ता, कर्म भा भाव के प्रधानता के बोध करावे वाला भाव के वाच्य कहल जाला'। जइसे प्रयोग के तीन गो प्रकार कहल गइल बा ओइसहीं वाच्य के भी तीन रूप होला-1.कर्तृ (कर्तरि) वाच्य, 2. कर्म वाच्य, आ 3. भाववाच्य।

कर्तृवाच्य- जवना वाक्य में कर्त्ता के प्रधानता होखे ओकरा के कर्तृवाच्य कहल जाला। अर्थात् कर्तृवाच्य वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में रूपांतर कर्त्ता के अनुसार होखेला एहसे ओकरा के कर्तृवाच्य कहल जाला। जइसे-'सर क्लास में व्याकरण पढ़ावत बाड़न', 'मैडम

क्लास में ग्रामर पढ़ावत बाड़ी', 'बाबूजी खाना खात बाड़न', 'माई खाना बनावत बाड़ी'। एह वाक्यन में क्रिया के लिंग, वचन भा पुरुष में बदलाव कर्त्ता के अनुसार हो रहल बा एह से इ सब कर्तृवाच्य के वाक्य हवे स।

कर्मवाच्य-जवना वाक्य में कर्म के प्रधानता होखे ओकरा के कर्मवाच्य कहल जाला। अर्थात् कर्मवाच्य वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के लिंग, वचन आ पुरुष के अनुसार होखेला। एह से ओकरा के कर्मवाच्य कहल जाला। जइसे-'सर के द्वारा व्याकरण पढ़ावल जाला', 'मैडम के द्वारा व्याकरण पढ़ावल जाला', 'बाबूजी द्वारा खाना बनावे के सामान खरीदल जाला', 'माई के द्वारा खाना बनावल जाला' एह सब वाक्यन में क्रिया के रूप कर्त्ता के अनुसार ना होके कर्म के अनुसार भइल बा, एह से इ सब कर्मवाच्य के वाक्य बाड़े स।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में रूपांतर करे खातिर कर्त्ता के करणकारक रूप में लिखल जाला आऊर क्रिया के कृदंतीय रूप में 'अल', 'ला', 'जाला', 'आय', 'आव' जोड़ दिहल जाला।

ऊपर के वाक्यन में 'सर के द्वारा', 'मैडम के द्वारा', 'बाबूजी के द्वारा' , 'माई के द्वारा' में कर्त्ता के करण बना दिहल गइल बा आ क्रिया में 'वल' के साथ 'जाला' जोड़ दिहल गइल बा। अइसहीं देखल जाय-'माई से खाना न बनावल जाई', 'सीता से गीत ना गवाई', 'हमरा से खाइल ना जाई'।

भाववाच्य- जवना वाक्य में भाव के प्रधानता होला ओकरा के भाववाच्य कहल जाला। भाववाच्य वाक्य में क्रिया के रूपांतर ना त कर्त्ता

के अनुसार होखेला ना क्रिया के अनुसार बल्कि भाव के अनुसार होखेला। एह से अइसन वाक्य के भाववाच्य कहल जाला। एह में क्रिया हमेश में रहेले। जइसे-'हमरा से बइठल नइखे जात', 'गुरुजी से व्याकरण पढ़ावे के काम नइखे हो पावत'। ए वाक्यन में ना त कर्त्ता के अनुसार क्रिया बा। एकरा साथे इहो बात ख्याल रखे के चाही कि भाववाच्य में क्रिया बा ना कर्म के आनुसार बल्कि भाव के अनुसार क्रिया हमेशा संयुक्त आ भूतकालिक रूप में रहेला।

तीनों में अंतर करे के मोट तरीका इ बा कि कर्तृवाच्य के कर्त्ता में आऊर कर्मवाच्य के कर्म में क्रम से 'ने' भा 'को' चिन्ह ना लागेला।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं-

(कर्तृवाच्य, प्रयोग, वाच्य, कर्मवाच्य, भाव)

(क) संस्कृत में वाच्य के......कहल जाला।

(ख) 'वाक्य में कर्त्ता, कर्म, भा भाव के प्रधानता के बोध करावे वाला भाव के .... कहल जाला।

(ग) जवना वाक्य में कर्त्ता के प्रधानता होवे ओकरा के .... कहल जाला।

(घ) जवना वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के लिंग, वचन आ पुरुष के अनुसार होवेला एह से ओकरा के .... कहल जाला।

(ङ) भाववाचक वाक्य में क्रिया के रूपांतर ना त कर्त्ता के अनुसार होखेला ना क्रिया के अनुसार बल्कि .... के अनुसार होखेला।

2. नीचे दिहल परिभाषन के मिलान करीं।

(क) कर्तृवाच्य (i) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव भाव के अनुसार होला।

(ख) कर्मवाच्य (ii) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्त्ता के अनुसार होला।

(ग) भाववाच्य (iii) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के अनुसार होला।

3. नपल-तुलल शब्द में उत्तर लिखीं।

1. वाच्य केकरा के कहल जाला?
2. कर्तृवाच्य आ कर्मवाच्य में उदाहरण का सँगे अंतर बतलाईं।
3. वाच्य के बदलल जाय-दादी कथा कहत बाड़ी, सोहन रोटी खात बाड़न, हम घरे जात बानी।

अध्याय 14

समास

'दू भा दू से अधिक शब्द भा पद जब आपन-आपन विभक्ति छोड़ के एक दूसरा से मिल जाला स तब ओहनी के मिलला से जे विकार पैदा होला ओह बिकारी शब्द के समास कहल जाला'। जइसे-'खरपतवार', 'प्रतिदिन', 'राजपुरूख', 'शोकाकुल', 'बेआकुल', 'तिरमुहानी', 'बेलुरी', 'बेसरम'। ऊपर लिखल उदाहरण में 'खर' आ 'पतवार', 'प्रति' आ 'दिन', 'राजा' आ 'पुरूख', शोक' आ 'आकुल', 'वे' आ आकुल', 'तीन' आ 'मुहानी', 'बे' आ 'लुर', 'बे' आ 'सरम' आपन-आपन विभक्ति छोड़ के मिलल बाड़े स। एह तरह से समास के विशेषता बा-

1. समास में कम से कम दू शब्द के मेल होला,
2. शब्दन के मेल से जे बिकारी पद बनेला ओकरा के सामासिक पद कहल जाला।
3. मेल के बाद शब्द आपन-आपन आउर अलग-अलग अर्थ छोड़ के कवनो दोसर अर्थ के बोध करावे लागेले सन।
4. समास में आइल शब्दन के विभक्ति के लोप हो जाला।
5. सामासिक पद के थोड़े भाव अलग-अलग करे भा विश्लेषित करे के क्रिया के समास-बिग्रह कहल जाला।

समास के रूप

समास में दू भा दू से अधिक शब्द भा पद मिलेलेसन, जवना में कवनो दुइये गो पद प्रमुख होले स। ओहनी में कबहूँ पहिलका पद प्रमुख हो जाला, कबहूँ दूसरका पद, कबहूँ दूनों पद प्रमुख हो जाले स त कबहूँ अइसनो होला कि दूनों पद गौण हो जाले स आऊर ओहनी के जगह पर कवनो तीसर पद प्रधान हो जाला। पद प्रमुखता के ई चार स्थिति के अनुसार समास के रूप निर्धारित होला। एह तरीका से समास के मुख्य रूप से चार गो भेद होला।

1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. द्वन्द्व समास, आ 4. बहुब्रीही समास।

अव्यीभाव समास

जवना सामासिक पद के पहिलका पद प्रधान होला आउर ऊ शब्द उपसर्ग जाति के कवनो अव्यय होला ओकरा के अव्ययीभाव समास कहल जाला। एकर विशेषता बा–

1. अव्यीभाव समास के पहिला पद प्रधान होला, 2. पहिला पद कवनो उपसर्ग जाति के अव्यय होला, 3. पहिला पद के सामान्यतः कवनो अर्थ ना होला बाकिर ऊ दूसरका शब्द के साथ लग के एगो खास अर्थ देबे लागेला, 4. आम तौर पर पूरा पद क्रिया विशेषण बन जाला। जइसे–प्रतिदिन, यथाशक्ति, आजन्म, आमरण में प्रति, यथा, आ, शब्द उपसर्ग जाति के अव्यय बाड़े स। एहनी के कवनो खास अर्थ नइखे बाकिर इ सब क्रम से 'दिन', 'शक्ति', 'जन्म', आउर 'मरण' से लग के खास अर्थ 'रोज–रोज', 'शक्तिभर', 'जन्म भर', 'मरण' तक के बोध करावत बाड़े स।

तत्पुरुष समास

जवना सामासिक पद के दूसरा भा अंतिम पद प्रधान होखे ओकरा के तत्पुरुष समास कहल जाला। एकर विशेषता बा-

1. तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होला।

2. पहिला पद समान्यतः विशेषण आ दूसरा पद विशेष्य होला भा बन जाला।

3. दूनों पद के बीच जे कारक विभक्ति होला ओकर लोप हो जाला।

कारकीय (कर्त्ता आउर संबोधन छोड़ के) **विभक्ति के अस्तित्व के कारण एकर एगो नाम कारकीय समास भी हवे। कारकीय चिह्न के अनुसार भी एकर छव गो भेद कइल गइल बा।**

परिभाषा आ **उदाहरण समेत ऊ भेद बाड़े स-**

1. कर्म तत्पुरुष भा तत्पुरुष द्वितीया-जवना तत्पुरुष समास के **पहिलका पद कर्म कारक के विभक्ति 'के' भा 'को' से युक्त होला ओकरा के कर्म** तत्पपुरुष भा तत्पुरुष द्वितीय कहल जाला। जइसे-स्वर्गप्राप्त (स्वर्ग के प्राप्त), शरणागत (शरण के खातिर आइल)

2. करण तत्पुरुष भा तत्पुरुष द्वितीय- जवना तत्पुरुष समास के पहिलका पद करण कारक के विभक्ति 'से' से युक्त होला, ओकरा के करण तत्पुरुष भा तत्पुरुष तृतीया कहल जाला। जइसे- शोकाकुल (शोक से बेआकुल), अकालपीड़ित (अकाल से पीड़ित)।

3. संप्रदान तत्पुरुष भा चतुर्थी–जवना तत्पुरुष समास के पहिला पद संप्रदान कारक के विभक्ति के, के खातिर, 'खातिर' से युक्त होला ओकरा के संप्रदान तत्पुरुष भा तत्पुरुष चतुर्थी कहल जाला। जैसे–राहखंर्चा (राह खातिर खर्चा), देशभगति (देश के खातिर भगति)

4. अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी–जवना तत्पुरुष समास के पहिलका पद अपादान भा पंचमी कारक विभक्ति से युक्त होला ओकरा के अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कहल जाला। जइसे–'करमहीन', (करम से हीन), 'करमजरू' (करम से जरल), 'धनहीन' (धन से हीन), 'रिनमुक्त' (रिन से मुक्त), 'देशनिकाला' (देश से निकाला)।

5. संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी–जवना तत्पुरुष समास के पहिला पद संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कारक विभक्ति 'का', 'के', 'की' से युक्त होला ओकरा के संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कहल जाला। जइसे- गंगाजल' (गंगा के जल), 'घोड़दऊर' (घोड़ा के दौड़), 'इस्त्रीधन' (इस्त्री के धन)।

6. अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष सप्तमी समास–जवना समास के पहिला पद अधिकरण कारक विभक्ति 'में', 'पर' से युक्त होला ओकरा के अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी समास कहल जाला। जैसे–'तेलपक' (तेल में पकावल), 'खटपरू' (खटिया पर परल)।

एकरा अलावे भी तत्पुरुष समास के कर्मधारय, नञ, द्विगु कर्मधारय मध्यमपदलोपी, उपपद, अलुक, मयूरव्यंसकादि अनेक भेद होला। एमे महत्वपूर्ण बा–

कर्मधारय-कर्मधारय समास ऊ तत्पुरुष समास ह जवना में कम से कम एक पद विशेषण होला आऊर दूनों पद के बीच विशेषण-विशेष्य के संबंध होला। जइसे-'करमसाढ़' (साँढ़ लेखा करम), 'भलमानुख' (भलामानुख), 'पीताम्बर' (पीत अंबर-पीला वस्त्र), 'शीतोष्ण' (शीत-उष्ण), 'कुमारी' (क्वारी लड़की)।

नञ् समास-ऊ तत्पुरूष समास जवना के प्रथम पद नकार सूचक होला ओकरा के नञ् समास कहल जाला। जइसे-अनपढ़ (बे पढ़ल लिखल), अनगिनत (गिनल ना कइल जा सके)।

द्विगु समास-ऊ तत्पुरुष समास जवना के प्रथम पद संख्यासूचक विशेषण होला ओकरा के द्विगु समास कहल जाला। जइसे-'नवरतन' (नव गो रतन), 'चउकोर' (चार कोर वाला), 'चौराहा' (चार राह के समूह), 'त्रिभुज' (तीन भुजा वाला)।

द्वंद्व समास

ऊ समास जवना के दूनो पद प्रधान होला ओकरा के द्वंद्व समास कहल जाला। जइसें-'माईबाप' (माई अउर बाबूजी), 'सीताराम' (सीता अउरी राम), 'पाप-पुन' (पाप आ पुन), दयाधरम' (दया अउरी धरम)

बहुब्रीहि समास

ऊ समास जवना के ना त पहिला पद प्रधान होला ना दूसरा आ दूनों मिल के कवनों तीसर अर्थ देबे लागेले स तब ओकरा के बहुब्रीहि समास कहल जाला। जइसे-'लरकोरी' (लइका बा जेकरा कोरा में),

'पीताम्बर' (पीला बा वस्त्र ऊ अर्थात् कृष्ण), 'वीणापाणि' (वीणा बा जेकरा हाथ में ऊ अर्थात् सरस्वती)।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(सामासिक पद, समास-विग्रह, अव्यीभाव समास, द्वंद्व समास, बहुब्रीहि समास)

(क) शब्दन के मेल से जे बिकारी पद बनेला ओकरा के ...... कहल जाला।

(ख) सामासिक पद के तूड़े भा अलग-अलग करे भा विश्लेषित करे के क्रिया के .... कहल जाला।

(ग) जवना सामासिक पद के पहिलका पद प्रधान होला आउर ऊ शब्द उपसर्ग जाति के कवनो अव्यय होला त ओकरा के .... कहल जाला।

(घ) ऊ समास जवना के दूनों पद प्रधान होला ओकरा के .... कहल जाला।

(ङ) समास जब मूल अर्थ छोड़ के कवनो तीसर अर्थ देबे लागे तब ओकरा के .... कहल जाला।

2. सुमेलित कइल जाए

	अ	ब
(क)	अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी	लरकोरी (लइका बा जेकरा कोरा में)
(ख)	संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी	करमसाढ़ (साँढ़ लेखा करम)

(ग) अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी समास	'चउकोर' (चार कोर वाला)
(घ) कर्मधारय	'घोड़दऊर' (घोड़ा के दौड़)
(ङ) नञ् समास	दयाधरम (दया अउरी धरम)
(च) द्विगु समास	खटपरू (खटिया पर परल)
(छ) द्वंद्व समास	अनपढ़ (बे पढ़ल लिखल)
(ज) बहुव्रीह समास	'करमजरू' (करम से जरल)

3. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दीं।

(क) समास केकरा के कहल जाला।

(ख) संधि समास में का अंतर बा।

(ग) समास के कैगो आ कवन-कवन रूप बा। उदाहरण दीं।

(घ) समास के का काम ह।

(ङ) कर्मधारय समास आ द्विगु समास में का अंतर बा। उदाहरण दीं।

(च) कर्मधारय समास आ बहुव्रीहि समास में का अंतर बा। उदाहरण समेत समुझाईं।

(छ) नीचे लिखल शब्दन के बिग्रह करीं -करमजरू, करमकूट, खटपरू, खड़ेसरी, स्वर्गवासी, लरकोरी, बरजोरी।

क्रियाभ्यास

(1) समास के प्रचलित अप्रचलित रूप भेदन के संग्रह क के एगो आरेख खींचीं।

अध्याय 15

अलंकार

अलंकार के अर्थ होला 'गहना'। जइसे सोना-चानी के गहना से देह के सुनरता बढ़ जाले, ओही तरह से जवना उपकरण से काव्य के शोभा-सुन्दरता बढ़ेलें, ओकरा के अलंकार कहल जाला। 'अलंकार' शब्द के व्युत्पति मूलक अर्थ बतावत कहल गइल बा कि जे अलंकृत मतलब शोभा बढ़ावे ऊ अलंकार ह।

काव्य के सुन्दरता कबो शब्द पर निर्भर होला त कबो अर्थ पर आ कबो-कबो ई सुन्दरता शब्द आ अर्थ दूनों पर टिकल होला। काव्य के शोभा बढ़ावे वाला अलंकारन के एह तीनों स्थिति के आधार पर अलंकार के तीन गो प्रकार बतावल गइल बा-

1. **शब्दालंकार**- जहँवा शब्दगत अलंकार होखे।
2. **अर्थालंकार**- जहँवा अर्थगत अलंकार होखे।
3. **शब्दार्थालंकार**-जहाँ वा शब्दार्थगत अलंकार होखे। शब्दार्थालंकार के उभयालंकार भी कहल जाला।

अब इहाँ काव्य के शब्दालंकार, अर्थालंकार आ शब्दार्थालंकार के सामान्य ज्ञान खातिर इहवाँ के कुछ अलंकारन के लक्षण आ ओकर उदाहरण प्रस्तुत कइल जाईं जइसे शब्दालंकार के रूप में अनुप्रास (छेकानुप्रास,

वृत्यानुप्रास आ लाटानुप्रास), श्लेष आ वक्रोक्ति, अर्थालंकार के रूप में उपमा, रूपक, दृष्टान्त, संदेह, विभावना, आ अतिशयोक्ति अलंकार के लक्षण आ उदाहरण दिहल जा रहल बा।

शब्दालंकार

अनुप्रास

जहाँ व्यंजन के समता होखे, भले उनकर स्वर मिले चाहे ना, उहाँ अनुप्रास अलंकार होला। अनुप्रास में तीन खण्ड बा-अनु-प्र+आस। 'अनु' के मतलब होला आवृत्ति, 'प्र' के प्रकर्ष आ 'आस' के अर्थ होई राखल चाहे विन्यास कइल। मिला-जुला के एकर अर्थ भइल जहाँ पर वर्ण बार-बार आवृत्ति के साथ जवरे-जवरे राखल जाय। एकर कई गो भेद होला-

छेकानुप्रास-जब अनेक व्यंजन के एक बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखे, त ओकरा के छेकानुप्रास कहल जाला। श्री विश्वनाथ कविराज के कहनाम बा-

''छे ेव्यंजनसंघस्य सकृत साम्यमनेकधा''।

-साहित्य दर्पण (दशम परिच्छेद, नवम् संस्करण)

उदाहरण - मुरपुर नरपुर नाग नगरिया

रंग विरंगी बाग बजरिया

अधरम धरम, करम कुकरम के

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुवोध' (के, पृ० 8)

इहाँ 'सुरपुर नरपुर' में र प र के, 'नाग नगरिया' में न आ ग के, 'रंग बिरंगी' में र आ ग के, 'बाग बजरिया' में ब के, 'अधरम धरम' में ध रम के, आ 'करम कुकरम' में क र म के एक-एक बेर आवृत्ति से छेकानुप्रास होई।

वृत्यानुप्रास - अगर जे एक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर, अनेक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर स्वरूप से भा अनेक व्यंजन के स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखेला, त वृत्यानुप्रास कहल जाला। विश्वनाथ कविराज के कथन बा-

''अनेकस्येकधा साम्यमसकृतद्वापयनेकधा।

एकस्य सकृदप्येव कृत्यानुप्रास उच्यते ॥41॥

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 275

उदाहरण- दन दनात, दन-दनदनात दन-दन-दन-दन

फन फनात, फन-फनफनात फन-फन-फन-फन

-अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (सेवकायन) पृ॰ 51

इहाँ पहिलकी पाँति में द आ न के आउर दोसरका पाँति में फ आ न के कतना बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति भइल बाटे।

अइसहीं- **बगिया बेयरिया बहारे बसंत चाहे आवे ना आवे**

केसिया किरनियिा सँवारे बसंत चाहे आवे ना आवे

कुमार विमल (किरिन छुअत दरपन) पृ॰ 17

इहाँ पहिलकी पाँति में शब्द के शुरू में व्यंजन के कई बेर आवृत्ति भइला से वृत्यानुप्रास के उदाहरण बा।

लाटानुप्रास-जहाँ शब्द आ अर्थ के आवृत्ति में अभिप्राय मात्र के भिन्नता होखे, उहाँ लाटानुप्रास होला। विश्वनाथ कविराज के अनुसार-

''शब्दार्थयो पौनरूक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः। लाटानुप्रास इत्युक्तो।''

-**साहित्य दर्पण** (द०प०), पृ० 277

उदाहरण- **लोहन से लोह कटई, काँटन से काँट कढ़ई**
पुतरी कऽचोट खाई घायल पुतरिया।
बेंटन जब काठ क टँगारिन में लागि जाले
काटि देले काठन क मोट मोट डरिया।
जतिया कऽ बैरी बनि जाति बड़ि दुखदेई,
कुकुर के देखतई भूँकेली कुकुरिया।
गौरन की ओर से लड़ल डुमराँव राज
हाइ भोजपुरिया कि खाई भोजपुरिया।

-**चन्द्रशेखर मिश्र** (कुअँर सिंह, पृ० 228)

इहाँ लोहा, काँट, काठ, जाति, कुकुर आ भोजपुरिया शब्द के आ एकनी के अर्थ के एक रहलो पर तात्पर्य भेद बा। एगो लोहा काटे वाला, दोसर कटाये वाला, एक काँट गड़े वाला, एक गड़ल काँट काढ़ै वाला, एगो काठ काटे वाला त दोसर कटाये वाला, एक जाति दुखी त दोसर क दुख देवे वाला, एक कुकुर भूँके वाला त दोसर देखल जाए वाला आ एक

भोजपुरिया धोखा देवे वाला त दोसर धोखा खाये वाला बाटे। एही से इहाँ लाटानुप्रास अलंकार बा।

श्लेष

शिलष्ट शब्दन से अनेक अर्थ के कथन के श्लेष अलंकार कहल जाला। जहवाँ एके शब्द से अनेक अर्थ निकले, उहाँ श्लेष अलंकार होला। विश्वनाथ कविराज के परिभाषा बाटे–

''शिलष्टैः पदैरनेकार्याभिधाने' श्लेष इष्यते।
शब्दै : स्वभावदेकार्थेः श्लेषोऽनेकार्थवाचनम्।11''

–**साहित्यदर्पण** (द०प०), पृ० 282

श्लेष के दू भेद–'अभंगश्लेष' आ 'सभंगश्लेष' होला। जहाँ पद के बिना भंगले अन्यार्थ के प्रतीत हो जाए, उहाँ अभंगश्लेष होई।

जहाँ एक से अधिक अर्थ के प्रतीति शिलष्ट शब्दन के अवयव के भंग करके कइल जाए, उहाँ सभंगश्लेष होई।

उदाहरण–**आज बरसाइत रगरवा मचावे जिन नहके झगरवा उठाव**
अपनो ही बरवा में पूजो बलबीरवा पीपरवा पूजन तू हीं जाब।

–**रामकृष्ण वर्मा बलबीर** (भोजपुरी के कवि ओर काव्य, पृ०) 143)

इहाँ 'बरवा' के बिना भंग कइले 'बरगद के गाछ' आ 'प्रियतम', दू गो अर्थ निकलत बा, एही से इहाँ अभंगश्लेष बा। 'पीपरवा' में 'पीपर के गाछ' आ 'दोसरा के पिया' ई दू अर्थ निकलत बा। इहाँ सभंगश्लेष बा।

एगो उदाहरण इहाँ आउर दिहल जा रहल बा–

चढ़ी जे कमान त कमान घूम भाग चली

चारा ना चली कबो पइब ना चारा तू

बानन के चोट खाके बान मय छूट जाई

तारा से देख लेब, दुपहरिये तारा तू

उजड़ जाई नीर दूनू नयनन से नीर झड़ी

पारा के चढ़ते दरकब बनि पारा तू

बाजी अब लागल तब बाजी ना तोहार चली

कारा का होते समा जइब कारा तू

-गणेशदत्त किरण (किरण बावनी)

इहाँ कमान, चारा, बान, तारा, नीर, पारा, बाजी आ कारा जइसन शब्दन से अनेक अर्थ निकलला के कारण श्लेषालंकार होईं।

वक्रोक्ति

अगर वक्ता के अन्यार्थक वाक्य के श्लेष चाहे काकु से श्रोता अलग अर्थ लगावे त वक्रोक्ति अलंकार होईं। विश्वनाथ के परिभाषा बा-

"अन्यस्यान्यार्थक वाक्यम् अन्यथा योजयेद्यदि।

अन्यः श्लेषेषा काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततोधद्विं।"

-साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 280

काकु के अर्थ होला कंठ से विशेष ढ़ंग से आवाज निकाल के बोलल।

उदाहरण- **राजसूय यज्ञ भैल, शिशुपाल बधि भैल**

अपने से धर्म के महान अब मनि हैं

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी)

इहाँ 'धर्म के दू अर्थ हो सकत बा, एक जवन धारण कइल जाय आ दोसर युधिष्ठिर।

आउर सबै रंग दाबत-दूबत

अंबर चीरि पीतंबर आइल

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ॰ 126)

इहाँ चीरहरण के समय चीर बढ़ावे के प्रसंग में ई पाँति आइल बाटे, जवना के अर्थ इहो बा कि आकाश मार्ग से श्रीकृष्ण अइलन। अम्बर के अर्थ कपड़ा आ आकाश दुनों होला अउर पीतंबर के पीअर कपड़ा आ श्री कृष्ण दुनों अर्थ होला।

अर्थालंकार-

उपमा

विश्वनाथ उपमा के परिभाषा देले बाड़न-

''साम्यं वाच्यं वैधर्म्य वाक्यैक्य उपमा द्वयोः॥14॥

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 262

मतलब कि दू पदार्थ में भिन्नता के बावजूद समानता बतवला के 'उपमा' कहल जाला। अर्थालंकार के मूल आधार उपमा बाटे। उपमा के चार गो अंग होला उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक। 'उपमेय' ओकरा के कहल जाला जेकर बराबरी देखावल जाए, मतलब कि वर्णनीय विषयवस्तु आ प्रकृति। 'उपमान' ओकरा के कहल जाला जवना से कवनों वस्तु के मेल देखावल जाला। 'धर्म' ओह गुण आ विशेषता के कहल जाला जवन उपमेय आ उपमान दुनों में पावल जाला। 'मुँह चंदा अस चमकत बा' में चंदा आ मुँह के चमकल 'धर्म' बाटे। उपमेय आ उपमान के बराबरी देखावेवाला शब्द के 'वाचक' कहल जाला। जस, अस, जइसन, अइसन, ओइसन आदि एकर उदाहरण बाटे।

उपमा के मुख्य रूप से दू गो भेद होला-**'पूर्णोपमा'** आउर **'लुप्तोपमा'। पूर्णोपमा**

विश्वनाथ के अनुसार-**सा पूर्णा यदि सामान्य धर्म औपम्यवाचि च उपमेयं चोपमानं भवेद्वाव्यम्।** (इयंपुनः) ।। 12 ।।

मतलब कि, उपमा के चारों अंग के अगर शब्द के द्वारा कथन होखे त 'पूर्णोपमा' (पूरा उपमा) होई।

उदाहरण- **छुई मुई रानी सुकुआरि धान, पान अस,**

चान के निसान अस देहिया के कजरी।

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी पृ॰ 26)

इहाँ 'रानी' आ 'देह' उपमेय, 'धान-पान', आ 'चान' उपमान, 'अस' वाचक आ सुकुआरि आ साँवलापन (कजरी) 'धर्म' बाटे। एही से इहाँ पूर्णोपमा बाटे।

लुप्तोपमा- विश्वनाथ लिखले बाड़न-

''लुप्ता सामान्यधर्मादेरेकस्य यदि वाद्वयो॥17॥

-**साहित्य दर्पण** (द॰प॰), पृ॰ 265

मतलब कि, उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक में से एगो कवनो गायब होखे त लुप्तोपमा अलंकार होखी।

उदाहरण- **इहाँ के नारी विरताई**

दुर्गा काली के अवतार

-**रामवचन शास्त्री 'अंजोर'** (किरनमयी पृ॰ 6)

इहाँ 'भारतीय नारी' उपमेय, 'दुर्गा काली' उपनान आ 'वीरताई' धर्म बाटे। वाचक गायब बा। एही से इहाँ लुप्तोपमा अलंकार होई।

रूपक

विश्वनाथ रूपक के परिभाषा देत लिखले बाड़न–

''रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे''

–**साहित्य दर्पण** (द०प०), पृ० 303

जहाँ उपमेय में उपमान के आरोप करके दुनों के अभेद वर्णन कइल जाय, त उहाँ रूपक अलंकार होई। आरोप के मतलब इहाँ रूप दिहला से बा। जहाँ उपमेय के ही रूप दे दिहल जाय, उहाँ रूपक अलंकार होला। आरोप में समानतावाचक पद के कथन ना कइल जाय। उपमेय के उपमान के रूप दिहल जाय, तबहुओ उपमेय के साथ रहल जरूरी होला। रूपक में तीन गो बात जरूरी होला–

(क) उपमेय के उपमान के रूप दिहल

(ख) वाचक पद के अभाव

(ग) उपमेय के भी साथ-साथ कथन।

उदाहरणः 'मुखचान बा' कहला पर उपमेय 'मुख' के उपमान चाँद के रूप से दिआत बा। वाचक आ धर्म नइखे।

रूपक के तीन भेद होला–**साङ्ग रूपक, निरंग रूपक** आ **परम्परित रूपक।**

साङ्ग रूपक–विश्वनाथ के कहनाम बा–

"अङ्गिनो यदि साङ्गस्य रूपण सांगमेवतत ।।30।।

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 305

जहवाँ अंग सहित उपमेय में उपमान के आरोप कइल जाला, उहाँ साङ्गरूपक कहल जाई। एह में उपमेय के अंग सब में उपमान के अवयवन के आरोप कइल जाला।

उदाहरण- **कवनों रंगीन जवान भाव**
विचार के मउरी पेन्हले
शब्दन के डोली पर परिछात
लाल पीयर पगड़ी बन्हले
अछरन के बरियात
अंगुरियन के पोर के सहारे
कलम कँहरिया के कान्ह पर
कल्पना के गाँव में आ रहल बा।

-कुमार विमल

(भोजपुरी सम्मेलन, पत्रिका, मई 90, पृ॰ 156)

इहाँ 'कलम' उपमेय के कँहरिया उपमान के रूप दिआइल बा। कलम के काम बा तरह-तरह क अक्षरन के ढोअल (लिखल)। ओही तरह 'कँहरिया' के काम बरिआत ढोअल बाटे। इहाँ सब आरोप शब्द के द्वारा भइल बाटे। एही से इहाँ साङ्ग रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

एगो दोसर उदाहरण देखल जा सकत बा-

भोर बयार सँगे उठि के छिछियात फिर भटके जियराई

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 146)

'जियरा' उपमेय खातिर 'भोर' बयार उपमान के आरोप साधर्म्य छिछिअइला आ भटकला के सँगे कइल गइल बा। वाचक नइखे। एह से इहाँ साङ्गरूपक अलंकार बा।

निरंग रूपक-विश्वनाथ के अनुसार निरंग रूपक के परिभाषा बा-

निरङ्ग केवलस्यैव रूपणं तदपि द्विधा ।। 31।।

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 306

अवयव से रहित उपमान के जहाँ उपमेय में आरोप कइल जाय, उहाँ निरंग रूपक अलंकार होई।

उदाहरण- **तिरिअइतिन तन रतन अटारी**

बाँकी चितवन नयन कटारी

-रघुनाथशरण शुक्ल कुबोध (के, पृ॰ 36)

इहाँ नयन कटारी में घायल करे के गुण के लेके रूपक बान्हल गइल बा। एह में अंग के वर्णन नइखे, एह से इहाँ रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

परम्परित रूपक- विश्वनाथ के उक्ति बा-

"यत्र कस्यचिदारोपः परारोपण कारणम्। तत्परम्परित।"

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 315

जहवाँ एगो आरोप दोसरा आरोप के कारण होखें, उहाँ परम्परित रूपक होई।

उदाहरण- **आशा बेलि बिरिछ लपिटावल**

आश बिरिछिया भूईं नियरावल

आशा सुमन आस वास मय

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के पृ॰ 36)

इहाँ एगो आशा (उपमेय) में उपमान फूल के आरोप अंगन के द्वारा भइल बा। जइसे, लतर, वृक्ष, फूल आ सुगन्ध के आरोप भइल बा। एही से इहाँ परम्परित रूपक बा।

दृष्टान्त

विद्यानाथ दृष्टान्त के परिभाषा अइसे देले वाड़न-

"द्वयोरर्थ योर्द्विरूपादानं विम्बप्रतिविम्बभावः।"

-प्रतापरूद्रीय, पृ॰ 311

जब पहिले कवनो बात कहि के ओकरा के समझावे खातिर दोसर बात कहल जाय आ जवन एके अइसन होखे, त दृष्टान्त अलंकार होई।

दृष्टान्त के मतलब उदाहरण भी ह। कवनो बात के कहके ओकर सच्चाई साबित करेला दोसर बात के कहल जाए त दृष्टान्त अलंकार होई।

उदाहरण- **राम कृपा अघ दूर हटे**

रवि से निशि के तम भागत लेखा।

-**श्रद्धानन्द पाण्डेय** (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

इहाँ पहिले कहल गइल बा कि राम के कृपा से पाप आ दुख दूर हटेला। फेर एह बात के समझावे खातिर ई कहल गइल बा कि जइसे सूर्य से रात के अन्हार भाग जाला, ओइसहीं राम कृपा से पाप भागेला। इहाँ पहिले कहल बात के सच्चाई साबित करे खातिर ओइसनके दोसर बात कहल गइल बा।

•

सन्देह

विश्नाथ के दिहल परिभाषा बा-

''सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः।

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 35

जहवाँ कवनो वस्तु के सम्बन्ध में सादृशमूलक सन्देह होखे, उहवाँ सन्देह अलंकार होई। कि, का वगैरह शब्दन के द्वारा संदेह प्रकट कइल जाला। कतहीं एकरा बिना रहलहुँ काम चल जाला-

उदाहरण-खींचत सारी दुसासन हारी

आ बूड़न लागे समुन्दर सारी

देखि चिहाँ सँउसे दरबारी

कि सारी में नारी कि नारी में सारी

-रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के घनश्याम पृ॰ 51)

इहाँ सारी में नारी के आ नारी में सारी के स्थिति साफ-साफ नइखे बुझात, एही से सन्देह के सृष्टि होत बा।

भ्रांतिमान

भ्रांतिमान के बारे में विश्वनाथ के कथन बा-

''साम्यादतस्मिं स्तद्बुद्धिभ्रांन्ति प्रतिमोत्थित:॥36॥

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 311

जहाँ भ्रम से कवनो वस्तु के कवनो आन वस्तु मान लिहल जाय, उहाँ भ्रांति चाहे भ्रम अलंकार होई।

उदाहरण- **ऊपर से हरि सारी बढ़ावेले**

ज्यों झरना झरलें बहुरंगा,

चीर मुड़ै मुड़ि के सिकुड़ै,

नभ बीच बने बड़ छोट तरंगा।

ई छवि देख के डाह के मारे

मसान से दौड़ल बा सिव नंगा।

संकर कौन नया झटकारत

रोकत बा लटकारी में गंगा?

चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ., 128)

इहाँ सारी में झरना के, चीर मुड़ के सिकुड़ला में लहर के आ एह से बनत स्थिति में गंगा के भ्रम पैदा होत बा, एही से इहाँ भ्राँतिमान अलंकार होई।

विभावना

विश्वनाथ के अनुसार विभावना के परिभाषा बा-

"विभावना बिना हेतु कार्योत्पत्तिर्य दुच्यते ॥66॥

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 350

कारण के अभाव में कार्य का उत्पत्ति के वर्णन से विभावना अलंकार के सृष्टि होला। विभावना में कवि कवनों विशेष कारण के बिना कार्य का उत्पत्ति के वर्णन करेला।

असवद श्रवण, परस बिनु मूरत

निसदिन ध्यान पुरूख बिनु सूरत

निरस रसत, सौरभ बिनु सूँघत

जोगी जनम नशावल।

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के पृ॰ 67)

इहाँ बिना सबद के सुने के कार्य, बिना सूरत के देखे के कार्य, बिना सूरत के पुरूष के रोज ध्यान करे के कार्य, बिना रस के रस प्रवाह के कार्य आ बिना सुंघले सुगंध के कार्य के उत्पति भइला से-वर्णन भइला से इहाँ विभावना के उपस्थिति होत जात बा।

अतिशयोक्ति

विश्वनाथ अतिशयोक्ति अलंकार के परिभाषा देत लिखले बाड़न-

"सिद्धत्वेऽध्वसायस्याति शयोक्तिर्निगद्यते ॥46॥"

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 323

उपमेय के छिपा के उपमान के साथ अभेद प्रतीति करावल अतिशयोक्ति अलंकार ह। अतिशयोक्ति के अर्थ ह बढ़ल-चढ़ल कथन। उपमेय के एकदम छिपा के उपमान से ओकर अभेद देखावल-उपमान से ओकर अभिन्नता देखावल अतिशयोक्ति के विषय ह। दू अलग-अलग वस्तु में अभिन्नता देखा के, अभिन्न वस्तु में भिन्नता देखा के, सम्बन्ध

रहला पर सम्बन्ध के अभाव बताके, सम्बन्ध के अभाव में सम्बन्ध बता के आ कहीं कार्य-कारण में सम्बन्ध गड़बड़ा के अतिशयोक्ति अलंकार के चमत्कार पैदा कइल जा सकेला।

उदाहरण- **मउरल पात कुसुम कुम्हिलाइल,**
मुरूदलि ललित लता लतराइल,
विरस विपिन बिनु गंध विधूनल,
कुसुम कलि मटियावल।

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ॰ 83)

इहाँ उपमेय जीवन गायब बा, उपमान-पात, कुसुम, लता वगैरह के झड़ी लाग गइल बा, जवन जीवन के साथ आपन अभिन्नता बता रहल बा।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अनुप्रास' अलंकार ह।

(क) अर्थालंकार (ख) शब्दालंकार

(ग) उभयालंकार (घ) रूपक

2. उपमेय के छिपा के उपमान के साथ अभेद महसूस करावल कहाला।

(क) अतिशयोक्ति (ख) लाटानुप्रास

(ग) रूपक (घ) उपमा

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अलंकार के बारे में बताईं।
2. अलंकार के कै गो प्रकार होला?
3. कवनों दू अलंकारन के उदाहरण सहित लक्षण बताईं।

अध्याय-16

छन्द

निश्चित वर्ण आ मात्रा सब के विराम, गति, यति वगैरह से बन्हाइल शब्द योजना के छन्द कहल जाला।

छन्द के अंग के रूप में वर्ण, मात्रा, संख्या, यति, गति, तुक, चरण वगैरह पर विचार कइल जरूरी बा।

वर्ण- वर्ण दू तरह के होला-**स्वर** आ **व्यंजन**। छन्द शास्त्र में वर्ण के गिनती करत समय व्यंजन के ना गिनल जाए, खाली स्वर के गणना होला। जइसे 'स्त्री' शब्द (स्+त्+र्+ई-स्त्री) में चार वर्ण बाटे, बाकिर, एकरा के एक ही गिनल जाई काहे से कि एके गो स्वर-ई बाटे।

मात्रा-छन्द शास्त्र में स्वर के मात्रा कहल जाला। स्वर कहला से स्वर से युक्त व्यंजन भी लिहल जाला।

ह्रस्व-स्वर-एक मात्रा वाला स्वर के ह्रस्व कहल जाला। जइसे-अ, इ, उ, ऋ। जइसे-मुनि।

दीर्घ-स्वर-दू मात्रा वाला स्वर के दीर्घ स्वर कहल जाला। जइसे-आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ। एह स्वर सब के उच्चारण में एक मात्रा वाला स्वर से जादे समय लागेला। उदाहरण खातिर- गीता।

एह तरह से ह्रस्व के एक मात्रा आ दीर्घ के दू मात्रा मानल जाला।

संख्या आ क्रम-मात्रा अउर वर्ण का गिनती के संख्या कहल जाला।

लघु आ गुरु-जवना वर्ण के एक मात्रा होखे आ ऊ अनुस्वार अउर विसर्ग से रहित होखे, ओके 'लघु' कहल जाला। मतलब कि अ, इ, उ, ह्रस्व आ इनका साथ मिलल एक, दू, तीन चाहे एकरा से अधिक व्यंजन के लघु मानल जाला। जइसे-'नयन' में तीन वर्ण लघु बा।

चन्द्रविन्दु वाला ह्रस्व स्वर भी लघु मानल जाला। जइसे-'हँसी' में 'हँ' लघु बाटे।

आ, ई, ऊ त्रह वगैरह दीर्घ स्वर आ एकनी से मिलल व्यंजन वर्ण 'गुरु' होला। जइसे-नाना, मीता।

ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर से मिलल व्यंजन वर्ण गुरु होला। जइसे-पैसा, पैना, लेखा।

अनुस्वार वाला सब वर्ण गुरु होला। जइसे-लंगा, चंगा, रंगा। विसर्गान्त सब वर्ण गुरु होला। जइसे-दुःख।

संयुक्त वर्ण से पहिले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला। जइसे-'सत्य' में 'स' 'कर्म' में 'क'।

हल् अक्षर से पहले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला जइसे-'सत!' में 'स' गुरु बा।

पाद के अन्त में होखे वाला लघु वर्ण के भी कबहुँ-कबहुँ जरूरत का मोताबिक गुरु मानल जाला।

यति

'विराम' के यति कहल जाला। विराम से मतलब ई बा कि जहाँ कुछ देर खातिर ठहरल जाए।

गति

छन्द में पढ़े वाला लय के गति कहल जाला। मात्रा के संख्या पूरा भइलो पर 'गति' भा 'लय' के बिना छन्द ना बने।

तुक

पाद का अन्त में स्वर सहित वर्ण का आवृति के तुक कहल जाला। तुक का प्रयोग सं कविता में एगो विशेष कर्ण-प्रियता आ कमनीयता आ जाला। तुक के ही अलंकार में **'अन्त्यानुप्रास'** कहल जाला।

पाद भा चरण

कवनो पाद के चउथा भाग के पाद भा चरण कहल जाला। छन्दशास्त्र का नियम के अनुसार कबहीं-कबहीं एक पद्य के चार से बेसी चरण होखेला। जइसे- छप्पय मे छव गो चरण होला।

छन्द के भेद

चरण का गति के आधार पर वर्णिक छन्द आ मात्रिक छन्द के तीन भेद कइल जाला–सम, अर्द्धसम आ विषम।

जवना छन्द के चारों चरण आ वर्ण के दृष्टि से समान होखेला, ओके सम कहल जाला।

जवना छन्द के पहिला आ तीसरा आउर दूसरा आ चउथा चरण समान होखे, ओके अर्द्धसम कहल जाला। दोहा–सोरठा उदाहरण बा।

जवना छन्द के चरण में कवनों नियमित समानता ना होखे, ओके विषम कहल जाला।

भोजपुरी कवितन में प्रयुक्त कुछ छन्द–

छंद

दोहा

ई मात्रिक अर्धसम छन्द ह। 'प्राकृत पैंगलम (1178) के अनुसार एह छन्द का पहिला आ तीसरा पाद में 13–13 मात्रा आउर दूसरा आ चउथा पाद में 11–11 मात्रा होखेला। यति पाद के अन्त में होला, विषम चरण का शुरू में जगण ना होखे के चाहीं। अन्त में लघु होखे के चाहीं। जइसे–

तीरथ राज प्रयाग जा, नहा त्रिवेणी नीर।
पाँव पूजि मुनि–लोग से, हाल कहे रघुवीर॥

–**श्रद्धानन्द पाण्डेय** (श्री राम कथा) पृ. 56

जय जय जयकारि कर, अतुल तुमुल ध्वनि बोलि।
हरख उमँग उत्साह से, दल गरजत दिल खोलि॥

-दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण लंका काण्ड) पृ. 43

सोरठा

ई मात्रिक अर्धसम छंद ह। 'प्राकृत पैंगलम' में सोरठा अपभ्रंश सोरठा आ सौराष्ट्रम के दोहा का उलटा कहल गइल बा (1:170)। एकरा विषम पाद में 11-11 आ समपाद में 13-13 मात्रा होला। तुक पहिला आ तीसरा पाद में मिलेला। कतही-कतहीं दूसरा आ चउथा में मिल जाला। जइसे-

समर जीति दशशीश, सिया छुड़ा पुष्पक चढ़ल।
रामचन्द जगदीश, लौटि रहल बाड़े अवध॥

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री राम कथा) पृ. 170

श्यामल-मेघ-शरीर, लोचन लाल-विशाल के।
भजु मनवाँ रघुवीर, दूर करू भव जाल के॥

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री राम कथा) पृ. 128

हरिगीतिका

ई 28 मात्रा के छन्द ह, जवना में 16 आ 12 मात्रा पर यति होला। अन्त में लघु –गुरु होखे के चाहीं। उदाहरण–

भरल पाल–घट सिर पर धइलीं, मल से मन नहववलीं।
पर निंदा धरफोरी कइलीं, केहू के ना भवलीं।
अनका पथ के रोड़ा बनलीं, आपन गरज पटवलीं।
जीवन आपन तोर मोर का 'झगड़ा' में बिनसवलीं।।

कुण्डलियाँ

कुन्डलिया विषम मात्रिक छन्द ह जवना में प्राय: छव चरन होला। एकर दू पहिल दोहा के आ पिछला चार चरन रोला के होला। एकरा ह क चरन में 24-24 मात्रा होला।

कुन्डलिया में एगो दोहा के बाद एगो रोला छन्द होला। एकर जवना शब्द से सिरी गनेस होला, अंतो ओही शब्द से होखे के चाहीं। कबो–कबो शुरू आ अंत में कई शब्द समान होलें। एही तरह से दोहा के अन्त के अंश रोला के शुरू के अंश में दोहरा दिहल जाला।

''प्राकृत पैंगलम्' के अनुसार रोला के दूसरका चरन के पूर्वांश के आवृत्ति भी तीसरा चरन में कइल जाला।

उदाहरण-

बा बिनती सिरी स्याम से, मन पावन हो थीर
गुन गाईं हम झूमि के, मन मोहन यदुवीर॥
मनमोहन यदुवीर, बखानी जसुमति छइया।
द्वापर के सिर मउर, हरि निरधन के भइया।
करत पाप अरू मोह, रटन कइला प नाम से
रहूँ चरन चिल्लाय विनय बा इहे श्याम से
-रामबचन शास्त्री 'अँजोर', (निरधन के घनश्याम), पृ॰ 16

रोला

श्वास करके वीर रस आ वर्णनात्मक काव्य में प्रयोग में आवे वाला एह मात्रिक छन्द का प्रत्येक चरण में 24 मात्रा होला। 11 आ 13 मात्रा पर विराम होला। अन्त में दू गुरु चाहे दूगो लघु होखे के चाही।

उदाहरण-

बीतल बारह बरिस, पंडवन के वन माही।
मधुसूदन के छोड़ि, न लउकल केहू दाही॥
खतम भइल अज्ञात, विराटे का रजधानी।
परगट भइले बीर, बिता सउँसे हलकानी॥
-रामवचन शास्त्री 'अंजोर' (निरधन के घनश्याम, पृ॰ 55)

छन्द 148

आल्हा

एह मात्रिक छन्द के प्रत्येक चरण में एकतीस मात्रा रहेला आ 16 अउर 15 मात्रा पर विराम होला चाहे 8, 8 आ 15 पर विराम होला। प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु-लघु होखे के चाहीं।

उदाहरण-**तब छाती पर भार दिआवसु, पाँच जने के एके बार,**
बीसन नवहा हुमचु दबावसु, कुँलचि उठेले सभके झार।
घंटन रहे सगल रोजाना, कवन लगाई बल के थाह,
कइ हाथिन के बल फाटत बा, उपटल नवहा माल सोखाह।
-डॉ॰ सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ॰ 23)

बिरहा

ई मुख्य रूप से प्रेम आ विरह के उपयुक्त व्यंजना खातिर सार्थक लोकधुन बा। वियोग श्रृंगार के अधिकांश अभिव्यक्ति बिरहा में भइल बाटे। एह लोकधुन के जन्म भोजपुरिये प्रदेश में भइल बाटे। बिरहा के 16गो लोक प्रचलित प्रकार बा। बाकिर, एह में से एक जवना में दू चरण होला। दूसरा चरण के अन्त गुरू (ऽ) आ लघु (।) होला। साहित्यिक कृतियन मे एह प्रकार के प्रचलन जादे बाटे। कुछ उदाहरण-

लजिया दबावे मनमथवा सतावे मोसे एको छन रहलो न जाय।
लखि बल बिरवा जमुनवा के तीखा री हियरा के धीखा नसाय।।
-रामकृष्ण वर्मा 'बलवीर' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ॰ 143)

नगीचे बहत रहे नदिया जमनवा से बनी लेली लोटवा उठाय।
सुनत नूँ बाड़ मोती अजुबा कहनिया हो पर ना हुँकारी चितलाय॥

-मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ॰ 16)

झूमर

लोकगीतन में, खास करके भोजपुरी लोकगीतन के ई प्रिय गीत प्रकार ह, जवना में श्रृंगार का दूनू पक्ष के वर्णन आवेला। एकर लय मस्ती से भरल होखेला। उदाहरण-

का जनिहें का जनिहें का जनिहें हो
दुख मोर कन्हाइया का जनिहें
बीच डहरिया में फोरले गगरिया
घरवा में अइले व मरली मतरिया
गागर के दमवा चुका जइहे। ॥ दुख॥

-रामसूरत राम (गोपी विरह, पृ॰ 56)

सोहर

ई लमहर बहर वाला छन्द प्रकार ह, जवन औरत के गर्भधारन के बाद से लेके पुत्र जनमला के बाद तक गावल जाला। हर पाँति के अन्त में हहें चाहे हो जरूर गावल जाला। हर दोसरका 'पाँति' में 'ए ललना' चाहे अउरू कवनो सम्बोधन कइल जाला। जइसे-

आवहु मोर परोसिन, गीत दयादिन हो ललना,

होरिला जनमवा के सोहर, गाइ सुनावहु हो।

-लोक प्रचलित गीत (भोजपुरी लोकोक्ति और मुहावरे, पृ॰ 16)

आनन्द घर-घर अवध नगर नौबत बाजत हो ललना,

बढ़ि अइले हिया से हुलास सुमंगल साजत हो।।1।।

रघुकुल कमल दिनेस अवध में उदय लेलन हो ललना,

खिली गइल जस सबलोक सुनत मन मोद भइल हो।।2।।

-कवि हरिनाथ (भोजपुरी कवि और काव्य, पृ॰ 163)

सवैया

सवैया के कवनो एगो लक्षण नइखे। एकर चरण 22 से 26 वर्ण वाला होला। ब्रजभाषा का एह प्रचलित छन्द के आन-आन भाषा का पद्य-रचना खातिर खूब उपयोग भइल बा। एकर प्रमुख भेद-पाँच छव गो बाटे। 22 अक्षर के मालिनी आ मदिरा सवैया भी कहल जाला। 24 अक्षर वाला दुर्मिल सवैया में सात मगन (।।ऽ) आ एगो गुरु होला। 23 वर्ण का मत गयंद सवैया में सात गो भगण (ऽ।।) आ एगो गुरु होला। 23 वर्ण का मत गयंद सवैया में सात गो भगन (ऽ।।) आ अन्त में दू गो गुरु होला। एकरा के मालती सवैया भी कहल जाला। 24 अक्षर वाला दुर्मिल सवैया

में आठ गो सगण (।।ऽ) होला। किरीट सवैया (24 वर्ण) में आठ गो भगण (ऽ।।) होला। सुन्दरी सवैया (24 अक्षर) में आठ गो सगण (।।ऽ) आ एगो गुरु रहेला। सुख सवैया 26 वर्ण के होला, जवना में आठ गो सगण (।।ऽ) आ अन्त में दू गो लघु होला।

भोजपुरी के कवि लोग मतगयंद या मालती सवैया के रचना प्रचुरता के साथ कइले बा। भेजपुरी में खोजला पर दुर्मिल आ किरीट सवैया के उदाहरण भी मिलेला। उदाहरण–

मतगयंद (मालती)–

पाहन ऊपर राज निदेश लिखा सगरो रखले रघुराई
वञ्चक चोर लुटेर तथा नर घातक के शिर काटि टँगाई
जे अनुशासन ना मनिहें अपवाद बिन चठ दण्ड दियाई
मोर निहोर न धर्म विरूद्धल काज करीं कवहीं पुर माई

–**श्रद्धानन्द पाण्डेय** (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

दुर्मिल

सुखदायक नेहत जे सबके हितकारक मातु–पिता हउवे
जग के मरूभूमि–पियासल आकुल हेतु सुधा सरिता हउवे

छन्द 152

जवना सिय नायक के महिमा लखि लाजत कल्पलता हउवे
उनुके पद पुष्प चढ़ावल, पाटल सप्तशती कविता हउवे
-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

किरीट-

पोषल-सुन्दर-तेज कुरंगम, रावण मारिच के बहकावल
देखि सिया भइली 'ति लोभित, हम लजावत लेप लगावल
हे प्रभु स्वर्णमृगा तन छाल हमें इति दी अनवा मन भावल
ई सुनते रघुनायकजी धनुसायक ले गइले अनु धावल
-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

कवित्त

ई वर्णिक दंडक छन्द ह। एह में 26 से लेके 33 तक ले वर्ण प्रत्येक चरण में होला। अन्त में गुरु-लघु-गुरु के कतहीं-कतहीं भेद कर लिहल जाला। 31 अक्षर के कवित्त मनहरण, 32 के अलहरण आ रूप घनाक्षरी अउर 33 के देव घनाक्षरी कहाला।

घनाक्षरी (31 वर्ण), अन्त में गुरु होला। एकरा सोलहवाँ वर्ण पर चरण का अन्त में यति होला। उदाहरण-

सारी बहुआरी बाटै विविध किनारी बाटै,
सलमा सितारी बेल बूटी धूप छहियाँ।
फीक बाटै, गाढ़ बाटे, लागल, पहाड़ बावे,

मखमली पाढ़ बाटे सिलिक मखनहियाँ।
रघवा जउ होत आज आगे ठाढ़ि होई जात,
पूछि लेत कान्ह ले पकड़ि दूनऊँ बहियाँ।
मोरे आगे कमरी तू ओढ़ के चरउल गाई,
बोल कान्ह सारी कहाँ पउल रेसमहियाँ।

–**चन्द्रशेखर मिश्र** (द्रोपदी, पृ॰ 125)

चौपाई

ई मात्रिक सम छन्द ह। प्राकृत आ अपभ्रंश का 16 मात्रा के वर्णनात्मक छन्दन का आधार पर विकसित हिन्दी आ आधुनिक भारतीय भाषा के सर्वप्रिय आ आपन छन्द ह। पाद का अन्त में दू गो गुरु होला। तुक पहिला चरण के दोसरा से आ तीसरा के चउथा से मिलेला। यति पाद के अन्त में होला, जइसे–

जब से राम व्याहि घार अइलें।
अवध मोद मंगल नित बढ़ले॥
देस नगरपुर राज पनपलें।
प्रजा मुदित सुख सगर बरिसलें।

–**दुर्गाशकर प्रसाद सिंह ''नाथ''** (साहित्य रामायण, अयोध्या आ अरण्य काण्ड, पृ॰ 5)

टूटल ताहि समय मुनि ध्याना।
देखहिं राजकुमार समाना॥
शिशु किशोर बालक बनवासी।
शिलाखण्ड बइठल सन्यासी।

–अर्जुन सिंह 'अशान्त' (बुद्धायन, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, जुलाई 60 पृ॰ 2)

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दोहा कवन छन्द ह।

(क) वर्णिक (ख) मात्रिक

(ग) अर्ध सम (घ) पूर्ण सम

2. 'कवित' कवन छन्द ह।

(क) वर्णिक (ख) मात्रिक

(ग) विरहा (घ) सोहर

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. छन्द के परिभाषा बताईं।
2. छन्द का अंगन के परिचय दीं।
3. कवनों दू छन्दन के उदाहरण सहित 'लक्षण' बताईं।

रचना खण्ड

अध्याय 17

पत्र-लेखन

मीडिया मोबाइल के युगो में चिट्‌ठी भा पाती भा पत्र के जरूरत आ महत्व बनल बा। चिट्‌ठी भा पाती दिल के बात दोसरा से निश्छल आ बेधड़क बतला देवे वाला स्वाभाविक आउर प्रभावशाली लिखित माध्यम ह। चिट्‌ठी के जरिये पत्र-लेखक आ पाठक के दिल के तार जुड़ेला। दिल भावना के धारातल पर कबहुँ उतराये लागेला त कबहूँ अतल सागर में गोता लगावे ला, डूबे ला, तैरे ला। जैसे बक्सा के चाभी खोलेला ओइसहिं दिल के दुआर खोलेले चिट्‌ठी।

हिन्दी वैयाकरण लोगन के अनुसार पत्र तीन प्रकार के होला।

1. सामाजिक भा व्यक्तिगत पत्र-जइसे कवनो संबंधी के इहवाँ लिखल संदेश पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, शोक संदेश।

2. व्यावसायिक भा व्यापारिक पत्र-लेन-देन, क्रय-विक्रय से जुड़ल पत्र।

3. सरकारी भा कार्यालयीय पत्र-स्कूल, कॉलेज, सरकारी दफ्तर से जुड़ल आवेदन भा प्रार्थना पत्र।

भोजपुरियो में कुछ-कुछ इहे स्थिति बा। अंतर अतने बा कि व्यक्तिगत भा सामाजिक पत्र के चिट्‌ठी भा संदेश भा पाती भा पत्र कहल

जाला आ शेष दूनों के अर्जी भा प्रार्थना पत्र में समेट दिहल जाला। एह प्रकार से भोजपुरी में पत्र दू प्रकार के होला।

1. चिट्ठी भा पाती,

2. अर्जी भा प्रार्थना पत्र।

चिट्ठो भा अर्जी लिखल एगो कला ह। जेकरा में नीचे लिखल विशेषता होखे के चाही–

1. छोटहन बाकिर पूरा– दुनिया के रफ्तार बड़ा तेज बा। लाम–लहकर चिट्ठी पढ़े के धीरज सबके पासे नइखे। एह से चिट्ठी नपल–तुलल शब्द में लिखे के चाहीं। बाकिर अइसनों ना होखे के चाहीं कि संक्षेप के फेर में बात छोड़ दीहल जाए भा भाव के बुझौवल बना दिहल जाए।

2. प्रभावशाली–जवन भी विचार होखे ओकरा के राफ–साफ शब्द में प्रभावशाली ढंग से रखे के चाहीं, जे पढ़े वाला के प्रभावित क सके।

3. शुद्धता आ स्वच्छता–भाषा में शुद्धता आ लिखावट में सफाई होखे के चाहीं। सोच–समझ के लिखे के चाहीं, काट–छाँट से बचे के चाहीं।

4. विनम्र भाव में स्पष्ट विचार– चिट्ठी में विचार स्पष्ट होखे के चाहीं। लागेवाला बात भले काहे ना होखे, उहो विनम्र भाव से कहे के चाहीं।

5. सहज आउर स्वाभाविक भाषाशैली-पत्र के भाषा आ शैली सहज आउर स्वाभाविक होखे के चाहीं। कठिन शब्दन के प्रयोग से बच के सीधा-सादा शब्द में आपन विचार स्पष्ट रूप में आ खुल के प्रगट करे के चाहीं।

6. बाहरी सजावट-फीको पकवान ऊँचा दाम में बिका जाला, अगर दोकान ऊँचा होखे। मतलब कागज बढ़िया होखे, लिखावट सुन्दर आ साफ होखे। चिट्ठी के जरूरी अंग शीर्षक, तारीख, अदब, अनुच्छेद आ अंत अपना नियत स्थान पर आ क्रम से होखे के चाहीं। पत्र के ऊपर पता ठिकाना पूरा आ स्पष्ट होखे के चाहीं, उचित स्थान पर वाजिब दाम के टिकट लगावे के चाहीं।

चिट्ठी पतरी के अंग

चिट्ठी हाड़-मास विहीन जीवंत दूत ह। दूतरूपी मनुष्य के जैसे मोटा-मोटी सिर, गरदन, धड़ आ पैर के चार अंग में बाँटल जाला ओइसहीं पत्र के चार अंग मानल जाला। सिर के 'आरंभ', गरदन के 'अभिवादन', धड़ के 'विचार' आउर पैर के 'अभिनिवेदन' भा 'समापन' कहल जा सकेला। नीचे खिंचल आरेख के माधयम से एकरा के आसानी से समझल जा सकेला-

अर्जी में	पाती में
जेकरा पासे लिखल जाला ओकर पदनाम आ पता	लिखेवाला के स्थान आ तारीख

अर्जी में	पाती में
अभिवादन आ विषय	अभिवादन

भाव भा विचार

पावेवाला के नाम पता	लिखेवाला के हस्ताक्षर, नाम आ तारीख

अब पाती के अंगवन के बारे में तनिक विचार हो जाव-

1. आरंभ (सिर)- पाती के आरंभ में अगर लेटर पैड के स्थिति ना होखे त जवना स्थान से चिट्ठी लिखल जा रहल बा दहिना कोना में ओह स्थान के नाम आ ओकरा नीचे तारीख लिखल जाला। जइसे-

सिपार, सिवान-841507
तारीख-12-05-06

2. संबोधन आऊर अभिवादन (गरदन)-आरंभ के बाद बाँये किनारा पर संबोधन आऊर अभिवादन के स्थान होला। संबोधन आऊर अभिवादन पावेवाला के साथ लिखेवाला के संबंधा पर निर्भर करेला। जइसे-बेटा जब बाबूजी के चिट्ठी लिखिहन तब-

पूज्य बाबूजी,

सादर प्रणाम,

संबोधन आ अभिवादन आ अभिनिवेदन नीचे नीचे लिखल तालिका के अनुसार होखेला-

लिखेवाला	पावेवाला	संबोधन	अभिवादन	अभिवादन
बाप	बेटा	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीष/जीअ	तोहार बाबूजो
माई	बेटा	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीर्वाद/खुश रह	तोहर माई
बेटा	बाप	पूज्य बाबूजी	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारा पुत्र

बेटा	माई	पूजनीया माई	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारा पुत्र
बड़ भाई	छोट भाई	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीष/शुभाशीर्वाद	तोहार भइया
छोट भाई	बड़ भाई	पूज्य/श्र)य भैया	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर छोटका भाई
पति	पत्नी	प्रिये/प्राणेश्वरी	शुभाशीष	तोहार प्राणधान
पत्नी	पति	प्रियवर/प्राणेश्वर	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारी पत्नी
मित्र	मित्र	प्रिय मित्र	नमस्ते	तोहार संघतिया
छोट	बड़	आदरणीय/पूज्य	प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर.. (जे रिस्ता होखे)
		आदरणीया/पूजनीया	प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर... (जे रिस्ता होखे)
बड़	छोट	चिरंजीव / प्रिय	शुभाशीष/खुश रह	तोहार...(जे रिस्ता होखे)

3. विचार (धाड़)- पत्र के इहे मुख्य भाग ह। एह भाग में पत्र लेखक अपना दिल के बात लिखे लन। भाषा सरल आ सहज होखे के चाहीं। चमत्कार प्रदर्शन से बचे के चाहीं। बार-बार एके बात दोहरावे-तिहरावे के ना चाहीं। विचार पूर्ण होखे के चाही। विचार भरपूर आ खुलल होखे के चाहीं, भाव में गहराई भी होखे के चाहीं।

4. अंत भा उपसंहार (पैर)- पत्र के अंत में दॉया कोना में पत्र पावेवाला के साथ आपन संबंध के विनम्रता पूर्वक उल्लेख करे के चाहीं।

जइसे-

राऊर दुलरूआ

अभिषेक

नोट् :- अगर छपल-छप्पावल लेटर पैड होखे तब ऊपर बायें में प्रेषक के नाम त होखबे करेला आ दहिने में पता भी होखेला, पाती के अंत में बाये तरु पावेवाला के नाम भी लिख दिहल जाला। अगर सादा कागज पर लिखे के होखे त आरंभ के जरूरत पड़ेला।

कुछ उदाहरण

बेटा के चिट्ठी बाबूजी के नामे

रानीघाट, पटना

12.06.08

पूज्य बाबूजी,

चरण स्पर्श।

रउवा सभे के आशीर्वाद से खुशहाल बानी। शुरू-शुरू में जब इहवाँ अइनी त मने ना लागत रहे। अब कुछ संघतिया बन गइल बा, जे पढ़े-लिखे में होसियार आ मेहनती बाड़े लोग। मिलजुल के पढ़िला जा, एक दोसराके मदद खातिर सभे लोग तत्पर रहेलन। अब पढ़ाई जोर पकड़ लेले बा, नया-नया किताब खरीदे के पड़ल ह। जरूरत के अनुसार मिल-जुल के त किताब खरीद लेहनी जा, बाकिर सब किताब सबके पासे चाहीं। काम चल रहल बा। पढ़ाई करे में बहुते मेहनत करे के पड़ता। दूध फल जरूरी लागता। एह से अगिला महीना में जब खर्चा भेजब त कुछ जादे पैसा भेज देहब कि किताब खरीदा जाए आ दूधो के व्यवस्था हो जाए।

आशा करत बानी की माई ठीके होई। माई से कह देब कि इहवाँ हम आराम से बानी। कवनो परेशानी नइखे। बबुआ के भी पढ़ावे पर धयान देब। चाचा-चाची के प्रणाम आउर बबुआ-बुचियन के आशीर्वाद बोल देब।

राउर प्यारा बेटा

रवि प्रकाश

भेजेवाला	मिले
रविप्रकाश	श्री देवानन्द प्रसाद
सी.वी.रमण छात्रावास	ग्राम-सिपार, पो0-सिंधौली
रानीघाट, पटना-6	जिला-सिवान-841507

बाबूजी के चिट्ठी बेटा के नामे

सिपार

18.6.08

चि. रविप्रकाश,

खुश रह

तोहार चिट्ठी मिलल। इहवाँ सभे ठीक बा। तोहार बबुआ तोहरा के इयाद करत रहेला, अब उहो पढ़े में खूब मेहनता करता। आ कहता कि हम भइयो से जादे नंबर लाइब आ हमहूँ पटना में नाम लिखाइब। तोहार माई तोहरा पढ़ाई, खुशी आ स्वास्थ्य के चिंता करत रहेली। हमनी सब के इच्छा बा कि तू खूब पढ़। पढ़-लिख के सफल आ अच्छा इंसान बन।

पइसा-कौड़ी के कवनो चिंता मत करीह। बाकिर पइसा के बरबादी भी मत करीह। अबकी बार हम पइसा भेजब ना, हम खुद आइब। जवन-जवन किताब के जरूरत होई खरीद लिहल जाइ। दूधा-नल के उठवना क लिह। आइब त ओकरो हिसाब किताब क देहब। अऊर सब ठी बा। गलत सोहब्बत से बचल रहीह। खूब मन लगा के पढ़, आ सफल होख, इहे हमनी के कामना बा।

तोहार बाबूजी

देवानन्द

भेजेवाला

देवानन्द प्रसाद

ग्राम-सिपार,

जिला- बक्सर

पिन कोड- 841507

मिले,

रविप्रकाश

कमरा सं. 8

सी.वी.रमन छात्रावास,

रानीघाट, महेन्द्रू,पटना-6

मित्र के पासे चिट्ठी

मिन्टू छात्रावास

पटना कॉलेज, पटना-5

15.06.08

प्रिय आश्चर्य आनन्द,

नमस्ते।

तोहरा जान के खुशी होई कि 12वीं के परीक्षा में सब पेपर अच्छा गइल बा। आई.आई.टी. के भी परीक्षा देले बानी। पेपर बड़ा अच्छा गइल

बा। विश्वास बा कि 12वीं के परीक्षा में प्रथम त आइए जाइब, हो सकेला कि बोर्ड परीक्षा में भी कवनो स्थान मिल जाई, आ आई.आई.टी. परीक्षा में भी सफल हो जाइब। अगिला सप्ताह में हम घरे आइब। तू गाँवे पर रहिह। मेला देखे चलल जाई आ उहवाँ खूब मौज-मस्ती कइल जाई। चाचा-चाची के प्रणाम बोल दीह। छोटका के शुभाशीष बोलिह।

तोहार संघतिया

संजय

बधाई पत्र

नया गाँव, सारण

25.06.08

प्रिय रवि,

नमस्ते।

काल रोजगार समाचार पत्र मिलल। ओह में आईआईटी. परीक्षा के रिजल्ट निकलल रहे ओह में तोहार नाम आ रौल नंबर देख के पूरा गाँव झूम गइल। तोहरा बाबूजी के खुशी के ठेकाना ना रहल। गाँव के लोग कहे लगलन ई सफलता सिर्फ रवि के सफलता ना ह। ई पूरा गाँव के सफलता ह। रवि हमनी के गाँव के नाम रौशन क दिहलन आ हमनी के सीना चौड़ा क देहलन। ई शानदार सफलता पर हमरा साथे सभ संघतिया आ पूरा गाँव के बड़-बुजुरग के बधाई तू स्वीकार कर।

गाँवे जल्दी आव, सब तोहार स्वागत में आँख बिछवले बाड़न।

तोहार मित्र

सुरेन्द्र

नेवता (श्राद्ध)

मान्यवर, ...

नमस्ते ।

दुःख के साथ सूचित करत बानी कि दिनांक 8.06.08 के सबेरे 6.00 बजे स्वर्गवास हमरा बाबा के हो गइल। 13 तारीख के ब्रह्मभोज बा। स्वर्गवासी बाबा के आत्मा के शांति के खातिर श्राद्धकर्म आ प्रार्थना सभा आयोजित बा। उपस्थित होखे के कृपा करीं।

विनीत

रामविलास आ

पूरा परिवार

नेवता (विवाह)

मान्यवर,

श्रीमान्/श्रीमती...............................

परमपिता परमेश्वर के कृपा से हमरा बड़का बेटा रवीन्द्र के विआह तय हो गइल बा। बैसाख बदी अष्टमी दिनांक 28-4-08 दिन-सोमवार के तिलक आ बैसाख सुदी एकम दिनांक-06-05-08 दिन-मंगलवार के बिआह बा। बारात 06 तारीख के सबेरे बस से भागलपुर जाई। तिलक-विआह दूनो अवसर पर सपरिवार उपस्थित होके हमनी के दुआर के शोभा बढ़ाई।

दरस के अभिलाषी

देवेन्द्र प्रसाद आ पूरा परिवार

अर्जी-प्रार्थना पत्र

अर्जी भा प्रार्थना पत्र कवनो संस्थान भा कार्यालय के प्रमुख के नामे लिखल जाला। ओह में प्रार्थी आपन कवनो माँग रखेला भा कवनो शिकायत साफ-साफ लहजा में वाकिर विनम्रतापूर्वक रखेला। एकरो रूप चिट्ठी जइसन ही होला। अंतर अतने बा कि चिट्ठी में दहिना आँख खुलल रहेला-अर्जी में बॉया आँख खुल जाला।

अर्जी के आरंभ में जेकरा पास अर्जी लिखल जाला ओकर पदनाम आ पता बाँये किनारे लिखल जाला। ओकरा नीचे अर्जी के वजह लिखल जाला। विषय के बाद विनम्रतासूचक संबोधन महोदय/महोदया, महाशया महाशय लिखल जाला। ओकरा बाद आपन मॉग भा शिकायत के स्पष्ट रूप में लिखल जाला। अंतिम में मॉग भा शिकायत के पूर्ति खातिर आभार व्यक्त कइल जाला। अभिनिवेदन के स्थान पर राऊर आज्ञाकारी भा प्रार्थी भा विश्वासी लिख के आपन हस्ताक्षर कइल जाला आ पूरा पता तिथि के साथ अंकित कइल जाला।

कुछ उदाहरण

अपना मुहल्ला में पेयजल के आपूर्ति में उत्पन्न व्यवधान के दूर करे के संबंधा में संबंधित मंत्री के धयान आकर्षित करे खातिर संपादक के नाम चिट्ठी।

कंकड़बाग, पटना-20

10.05.08

सेवा में,

संपादक,

दैनिक जागरण,

पटना।

विषय- जलापूर्ति के समस्या के ले के पाठकनामा में प्रकाशित क के संबंधित मंत्री के ध्यान खींचे खातिर।

महाशय,

राउर लोकप्रिय अखबार दैनिक जागरण के माध्यम से पेयजल आपूर्ति मंत्री के धयान खींचल चाहत बानी कि हमरा मुहल्ला के पम्पहाउस के मोटर बराबर खराब भइल रहेला। सप्लाई के पाईप भी फाटल बा। जब पंप चले लागेला तब पाइप से पानी निकल-निकल के सड़क पर आ राह में फैल जाला। जल जमाव के समस्या खड़ा हो जाला। गंदगी फैल जाला। आवाजाही में परेशानी होला। घर-घर तक पानी भी पहुँच ना पावेला। मंत्री जी से ई मुहल्लावासी निवेदन करत बाड़ें कि पम्पहाउस के जीर्णोद्धार करवावल जाव, नया मोटर लगवावल जाव आ फूटल पाइप के स्थान पर नया पाइप लगवा के घर-घर तक पानी पहुँचवावल जाव। कृपा होई।

निवेदक

सब मुहल्लावासी

कंकड़बाग, पटना-20

गैरहाजिर रहला पर प्राचार्य के पास आवेदन पत्र

सेवा में,

प्राचार्य,

राजेन्द्र कॉलेज छपरा

विषय- गैरहाजिरी दण्ड माफ करे के बारे में।

महाशय,

विनयपूर्वक निवेदन बा कि 8.06.08 के हमार छोट बहिन के शादी रहल। हम घर के इकलौता क्रियाशील सदस्य बानी। शादी के सब इंतजाम हमरे करे के रहे। एही वजह से हम दिनांक 05.06.08 से 10.06.08 तक कॉलेज में ना आ सकली। गैरहाजिरी दण्ड से मुक्त करे के कृपा कइल जाए।

एकरा खातिर हम राऊर आभारी रहब।

राऊर आज्ञाकारी छात्र

रविन्द्र प्रसाद

कक्षा-11

क्रमांक-35

आई.एस-सी.

मूल प्रमाण पत्र निकलवावे खातिर बोर्ड ऑफिस के सचिव के पास अर्जी

सेवा में,

सचिव,

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति,

पटना-800001

विषय- मैट्रिक के मूल प्रमाण-पत्र निकलवावे के संबंध में।

महाशय,

निवेदन बा कि वर्ष 2007 में मैट्रिक परीक्षा दिहली रहलीं। अभी तक हमरा मूल प्रमाण पत्र नइखे मिलल। निर्गत करे के आदेश देबे के कृपा करीं।

एकरा खातिर हम राऊर आभारी रहब।

राऊर विश्वासभाजी

सुरेन्द्र कुमार

क्रमांक-107

पंजीयन- 1208/2000

केन्द्र कोड- 6107

विद्यालय-उच्च विद्यालय समरदह, सिवान

परीक्षा केन्द्र-उच्च विद्यालय नबीगंज, सिवान

तारीख-15.06.08

प्रकाशक के नामे किताब आ पुस्तक सूची मँगावे खातिर

सेवा में,

प्रबंधक,

अक्षर प्रकाशन

नई दिल्ली-02

विषय:- किताब आ पुस्तक सूची मँगावे खातिर।

महाशय,

निवेदन बा कि हम आई.एस-सी. के विद्यार्थी बानी। मेडिकल परीक्षा के तैयारी कर रहल बानी। आई.एस-सी आ मेडिकल परीक्षा से संबंधित हमरा किताब खरीदे के बा। रऊरा अपना इहाँ से प्रकाशित पुस्तकन के सूची नीचे लिखल पता पर भेज दीहीं। साथे एह बात के भी सूचना देहब कि पुस्तक खरीद पर कतना प्रतिशत छूट मिली।

एकरा खातिर राऊर कृतज्ञ रहब।

विश्वासभाजन

श्री नारायण

हमार पत्राचार के पता

श्री नारायण

द्वारा-श्री उमाकान्त यादव

मो+पो -घोघरडीहा

जिला- मधुबनी

बिहार।

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प चुनीं।

(क) पत्र क प्रकार के होला

(अ) एगो (ब) दूगो (स) तीन गो (द) चार गो।

(ख) पत्र के अंग होला

(अ) एगो (ब) दूगो (स) तीन गो (द) चार गो।

(ग) पत्र में संबोधन बदलेला

(अ) स्थान के अनुसार (ब) लिखे-पावेवाला के संब्रंध के अनुसार
(स) लिखेवाला के विचार के अनुसार

(द) पावेवाला के पद के अनुसार।

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(संस्थान भा कार्यालय, अभिनिवेदन' भा 'समापन, व्यक्तिगत पत्र, व्यावसायिक पत्र दहिना, बाँया, दूत)

(क) सामाजिक भा व्यक्तिगत पत्र कवनो संबंधी के इहवाँ लिखल जा ला जबकि .... संस्थान के प्रमुख के पासे लिखल जा ला।

(ख) चिट्ठी के चार अंग मानल जाला। सिर के 'आरंभ', गरदन के 'अभिवादन', धड़ के 'विचार' आउर पैर के ....कहल जा सके ला।

(ग) अंत भा समापन में पत्र भा अर्जी के अंत में ....कोना में पत्र पावेवाला के साथ आपन संबंध के विनम्रता पूर्वक उल्लेख करे के चाहीं।

(घ) चिट्ठी के हाड़-मांस विहीन जीवंत .... कहल जाला।

(ङ) अर्जी भा प्रार्थना पत्र कवनो ....के प्रमुख के नामे लिखल ला।

(च) पाती के आरंभ में जवना स्थान से चिट्ठी लिखल जा रहल बा ....कोना में ओह स्थान के नाम आ ओकरा नीचे तारीख लिखल जाला।

3. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दीं।

(क) चिट्ठी के परिभाषा लिखीं।

(ख) चिट्ठी आ अर्जी में का अंतर बा।

(ग) चिट्ठी के कगो आ कवन कवन अंग बा। ओहनी के बारे में संक्षेप में लिखीं।

(घ) चिट्ठी के का काम ह?

(ङ) प्रभावशाली चिट्ठी में कवन--कवन गुण होखे के चाहीं।

क्रियाभ्यास

(क) किसिम-किसिम के चिट्ठी आ अर्जी के संग्रह करीं।

अध्याय 18

संक्षेपण

संक्षेपण में मूल भाव भा विचार के सुरक्षित रखल जाला। आ ओह मूल भाव के स्पष्टीकरण में आइल प्रासंगिक-अप्रांसगिक उदाहरण, मुहाबरा, विशेषण अलंकार आदि जे भाव के विश्लेषण करे में सहायक रहेला ओकनी के छोड़ दिहल जाला आउर मूल भाव के पास पास ला दिहल जाला।

सुघड़ संक्षेपण में नीचे लिखल गुण होखे के चाहीं-

1. **मूल के पूर्ण सार**-संक्षेपण मूल के सार होला आ पूर्ण भी होखेला। संक्षेपण के रूप अइसन होखे के चाहीं कि ओकरा के पढ़ला के बाद मूल पढ़े के जरूरत ना पड़े आ सब भाव के जानकारी मिल जाव।

2. **क्रमबद्धता**-संक्षेपण में मूल के सब विचार एगो निश्चित क्रम में रखल जाला।

3. **संक्षिप्तता**-संक्षेप मूल संक्षेपण के अनिवार्य शर्त ह। संक्षेप के अर्थ लगावल जाला मूल के तिहाई।

4. **स्पष्टता**-भाव के स्पष्टीकरण के खातिर वक्ता भा लेखक अपना मूल विचार के संगे-संगे अनेक उदाहरण, अलंकार, विशेषण जोड़ देलन। बाकिर इहे सफाई पाठक भा श्रोता खातिर बोझा बन जाले। सफल

संक्षेपणकर्ता फिजूल के उदाहरण, असंगत शब्द, पद भा वाक्यांश के हटा के मूल भाव के सरल आ स्पष्ट रूप में रख देवे के काम करेलन।

5. **शुद्धता**- संक्षेपण में शुद्धता के बड़ा महत्व बा। शुद्धता सिर्फ शब्द के ही ना भाव के भी होखे के चाहीं। अपना तरफ से कवनो मिलावट ना होखे के चाहीं। नवीनता से बचे के चाहीं।

6. **प्रभावात्मकता**- मूल के प्रभाव आ संक्षेपण के प्रभाव में अंतर ना होखे के चाहीं। शब्द के संख्या घटावल कवनो बड़ काम ना ह। शब्द घटे बाकिर प्रभाव ना घटे ई बड़ काम ह। मूल पाठ में लेखक जवना बात पर बल देले होखस ओही बात पर संक्षेपणकर्ता के भी बल होखे के चाहीं ना कि कतही अउरी। ना त लेखक के साथ अन्याय हो जाई।

संक्षेपण करे के नियम

1. सबसे पहिले मूल पाठ के बार-बार आ तब तक पढ़े के चाहीं जब तक कि ओकरा भाव के खुलासा ना हो जाव।

2. मूल के भाव समझला के बाद ऊ-ऊ शब्द, पद, वाक्यखण्ड, वाक्य के चिन्हित करे के चाहीं जवना के संबंध मूल विचार से सीधा जुड़ल होखे।

3. संक्षेपण के अंतिम रूप देवे के पहिले रेखांकित पद, वाक्यखंड के आधार पर रूपरेखा बनावे के चाहीं फिर ओकरा में उचित आ आवश्यक संशोधान जोड़-घटाव क के क्रमिक रूप से लगभग एक तिहाई शब्दन में लिख देबे के चाहीं।

4. ई बात के खास ख्याल रखे के चाहीं कि संक्षेपण मूल के संक्षेप ह ना कि मूल के बारे में राऊर विचार ह। एह से संक्षेपण में आपना टीका-टिप्पणी, मत, खंडन, मंडन के भाव से तटस्थ रहे के चाहीं।

5. संक्षेपण में अवतरण के लेखक के नाम, पता आ परिचय भी अगर होखे त लिखे के चाहीं।

6. प्रारूप के संक्षिप्त रूप देबे के पहिले मूल अवतरण के शब्द संख्या गिन लेबे के चाहीं। संक्षेपित शब्द के संख्या के उल्लेख ना भइल होखे त लगभग एक तिहाई में संक्षेपण करे के चाहीं। एक तिहाई के मतलब गणित के फार्मूला के अनुसार 1/3 ना होखेला। शब्द घट-बढ़ भी हो सकेला मगर घट-बढ़ के भी सीमा होला अधिक से अधिक 5 प्रतिशत कम भा बेशी शब्द हो सकेला। ओकरा आगे अड़चन होई।

7. संक्षेपण के एगो सरल सटीक, सार्थक आकर्षक आ भाव से संबन्धित शीर्षक देवे के चाहीं। शब्द संख्या के उल्लेख कर देबे के चाहीं।

8. संक्षेपण अपना भाषा में आऊर जवना काल में अवतरण होखे ओही काल में करे के चाहीं।

संक्षेपण करे में धयान देबे के चाहीं

1. संक्षेपण में विशेषण, क्रियाविशेषण आ आलंकारिक भाषा के प्रयोग से बचे के चाहीं।

2. संक्षेपण में उहे मूल शब्द के रखे के चाहीं जे भाव के अर्थ

प्रगट में सहायक होखे, शेष के छोड़ देबे के चाहीं भा ओकरा बदला में दोसर शब्द रख देबे के चाहीं बाकिर ई बात के खास धयान रखे के चाहीं कि मूल के अर्थ में उलट फेर ना होवे।

3. संक्षेपण प्रत्यक्ष कथन शैली में ना लिखके अप्रत्यक्ष कथन शैली में लिखे के चाहीं।

4. संक्षेपण में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग से बचे के चाहीं।

5. भाषा व्याकरण सम्मत होखे के चाहीं।

6. संक्षेपित रूप में भाषा प्रवाह होखे के चाहीं, अइसन कबहूँ आ कतहूँ ना लागे कि अलग-अलग विचार एक साथ चिपका दिहल गइल बा।

कुछ उदाहरण

उदाहरण-1

प्रकृति के अनेक रूप बा। प्रकृति हमनी के सामने अलग-अलग आ अनंत रूप में आवेली। कहीं सरस, सुन्दर, सुमधुर आ सुसज्जित रूप में त कहीं कर्कश, बेडौल भा भयानक रूप में। कहीं भव्य, विशाल भा विचित्र रूप में त कहीं उग्र, विकराल आ भयंकर रूप में। सच्चा कवि के हृदय प्रकृति के सब रूप में लीन हो जाला। काहे कि ओकर लगाव के कारण आपन खास सुख-भोग ना हो के चिरसाहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना होला। जे कवि प्रकशति के प्रफुल्ल प्रसून प्रसाद के सौरभ संचार, मकरन्दलोलुप मधुकर के गुंजार, कोकिलकूजित निकुंज आ शीतल सुख स्पर्श समीर के

ही चर्चा करेलन उनका के विषयी भा भोगलिप्सु कहल जाला। एही तरह से जे मुक्ताकाश हिम-विन्दुर्मंडित मरकताभ शाद्वजाल, विशाल गिरि शिखर से गिरते जलप्रपात के गंभीर गति से उठत सीकर नीहारिका के बीच विविध वर्णी स्फुरण के विशालता, भव्यता आऊर विचित्रता में ही सबकुछ पावेलन, उ तमाशबीन हवन, सच्चा भावुक आ सहृदयी कवि ना हो सकेलन। प्रकृति के साधारण-असाधारण, सुन्दर-कुरूप, सुडौल-बेडौल सब प्रकार के रूप के वर्णन बाल्मीकि, कालिदास, भवभूति आदि संस्कृत के प्राचीन कविगन में मिलेला। पिछला खेवा के कविलोग मुक्त रचना में प्रकृति के वस्तुन के अलग-अलग उल्लेख मात्र उद्दीपन के दश्ष्टि से कइलन। प्रबंध रचना में थोड़ -ढेर संश्लिष्ट रूप में भी चित्रण कइलन, बाकिर प्रकृति के विशेष रूप विभूति के लेके ही कइलन।

(शब्द संख्या-212)

प्रकृति आऊर कवि

प्रकृति के दू गो रूप बा- सुन्दर आ असुन्दर। सच्चा कवि के हृदय दूनों रूप में रमेला। जे कवि खाली प्रकृति के बाहरी सौंदर्य के वर्णन करे ऊ सच्चा कवि न होके तमाशबीन भा भोगलिप्सु कहालन। प्रकृति के सच्चा आ सम्पूर्ण रूप के चित्रण संस्कृत के प्राचीन कविजन प्रबंध भा मुक्तक सरल भा संशिलष्ट दूनों रूप में कइलन। बाद के कवि सिर्फ उद्दीपन रूप में ही वर्णन कर पइलन।

(संक्षेपित शब्द संख्या-69)

उदाहरण-2

काश्मीर से कन्याकुमारी तक फैलल आपन देश भारत आकार आऊर आत्मा दूनों दृष्टि से महान् आऊर सुन्दर देश बा। एकर बाह्य सौंदर्य विविधता के सामंजस्य पूर्ण स्थिति ह, त आत्मा के सौंदर्य विविधता में छिपल एकता के अनुभूति करावेला। चाहे कभी ना गले वाला हिम के प्राचीर होखे, चाहे कभी न सूखे न जमे वाला अतल सागर, चाहे सूर्य के किरण रेखा से खचित धारती के हरियाली होखे, चाहे एकरस शून्यता ओढ़े मरूस्थल, चाहे घहरात घन-करिया बदरी होखे, चाहे लपट के सॉस छोड़त बवंडर, सब आपन भिन्नता में भी एक ही देवता के विग्रह के पूर्णता प्रदान करेले। जइसे मूर्ति के कवनो एगो अंग टूट के संपूर्ण देव-विग्रह के खण्डित कर देला ओइसहीं अपना देश के अखण्डता खातिर विविधाता के स्थिति ह। अगर एह भौगोलिक विविधाता में व्याप्त सांस्कृतिक एकता न होइत, त इ देश विभिन्न नदी, पर्वत, वन के विचित्र संग्रह भर बन के रह जाइत। बाकिर एह देश के प्रतिभा एकरा आत्मा के रसमयता में प्लावित कइके एकरा के विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कइले बाड़े। जेह से इ देश आसमुद्र एगो नाम के परिधि में बँध जाला।

(शब्द संख्या-178)

भारत अनेकता में एकता

आपन देश भारत अनेक भौगोलिक आ प्राकृतिक विविधता से युक्त विशाल देश बा। ऊपरी विविधता के बावजूद, सांस्कृतिक एकता के

कारण एह देश के व्यक्तित्व अखण्ड बा, आत्मा एक बिआ। अगर आंतरिक एकता ना रहीत त इ देश अनेक विचित्रता के संग्रह भर बन के रही जाइत बाकिर अइसन नइखे इ सब विभिन्नता में भी एके के विभिन्न रूप ह।

(संक्षेपित शब्द संख्या-60)

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प पर ✓आ गलत पर ✗ के निसान लगाईं।

(क) संक्षेपण में मूल भाव भा विचार के बदल दिहल जाला। ( )

(ख) कवनो मूल भाव भा विचार में बिना कवनो काट-छाँट कइले मूल के ग्रहण आ फिजूल के त्याग कइके कम भा छोट करे के भाव भा क्रिया के संक्षेपण कहल जाला।' ( )

(ग) संक्षिप्त शब्द के संख्या के उल्लेख ना भइल होखे ते लगभग एक चौथाई में संक्षेपण करे के चाहीं। ( )

(घ) संक्षेपण के शीर्षक ना देवे के चाहीं। ( )

(ङ) 1998 में चार गो शब्द बा। ( )

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(रख देबे, अप्रत्यक्ष, होखे, ना करे, से बचे, प्रत्यक्ष, के छोड़)

(क) संक्षेपण में विशेषण, क्रियाविशेषण आ आलंकारिक भाषा के प्रयोग ....के चाहीं।

(ख) संक्षेपण में उहे मूल शब्द के रखे के चाहीं जे भाव के अर्थ बतावे

में सहायक होखे, शेष ......देबे के चाहीं भा ओकरा बदला में दोसर शब्द ....के चाहीं बाकिर ई बात के खास धयान रखे के चाहीं।

(ग) संक्षेपण ....कथन शैली में ना लिखके ....कथन शैली में लिखे के चाही।

(घ) संक्षेपण में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग से......के चाहीं।

(ङ) भाषा व्याकरण सम्मत .... के चाहीं।

(च) संक्षेपित रूप में भाषा प्रवाह ....के चाहीं, अइसन कबहूँ आ कतहूँ ना लागे कि अलग-अलग विचार एक साथ चिपका दिहल गइल बा।

3. **नपल-तुलल शब्द में उतर दीं।**

(क) संक्षेपण के परिभाषा लिखीं।

(ख) शब्द गिने के का तरीका बा।

(ग) संक्षेपण के का काम ह।

(घ) प्रभावशाली संक्षेपण में कवन-कवन गुण होखे के चाहीं? वर्णन करीं।

क्रियाभ्यास

(क) अपना पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्न के उत्तर लिख के ओकर संक्षेपित रूप भी लिखे के प्रयास कइल जाई त परीक्षा अवधि में बड़ ला भ होई कोसिस करीं।

अध्याय 19

पल्लवन

'संक्षेपण' के उल्टा होला 'पल्लवन'। संक्षेपण में जहवाँ दिहल अवतरण के निश्चित शब्द संख्या भा तिहाई में सीमित क दिहल जाला उहवाँ पल्लवन में दिहल सूत्रवाक्य भा बीज वाक्य के विस्तार कइल जाला।

पल्लव के अर्थ होला–'पता'। बीज अंकुरित होला, डाल डेहूँगी से होत पात–पात तक छितरा जाला। ओइसहीं बीज रूप में दिहल सूत्रवाक्य के अंकुरित शाखित-प्रशाखित करत पता तक पहुँचावे के क्रिया के **पल्लवन** कहल जाला। एकरा के परिभाषा रूप में कहल जा सकेला कि "पल्लवन ऊ रूपरचना विधान ह जवना में कवनो बीज वाक्य भा सूत्र वाक्य के भीतर छिपल भाव भा विचार के खोल के रखल जाला"। पल्लवन के वृद्धिकरण, विस्तारण, विस्तारित रूप में भाव विस्तार आ भाव पल्लवन भी कहल जाला।

पल्लवन करे में ई बात के धयान रखे के चाहीं–

दिहल सूत्रवाक्य के अर्थ के ठीक से समझला आ समझे लायक बनवला बिना सुन्दर आ प्रभावशाली पल्लवन ना हो सकेला।

1. पल्लवन के बीजवाक्य के बार–बार पढ़ला–गुनला–सोचला के बाद जवन–जवन विचार मन में उठे ओकरा के कलमबद्ध क लेबे के चाहीं।
2. कलमबद्ध भाव भा विचार के क्रमबद्ध क के प्रत्येक विचार के

व्याख्या भा विस्तारित करे के चाहीं। विस्तारित करे में ऊ सब तत्त्वन के उपयोग अलंकरण, मुहावरा, कहावत, उद्धरण, उदाहरण, आ दृष्टांत देबे के चाहीं जेकर संक्षेपण में त्याग कइल जाला।

3. विस्तारित विचार भा भाव के सब अनुच्छेद क्रमबद्ध आऊर सुसंगत रहे के चाहीं ना कि अइसन लागे कि अलग-अलग अनुच्छेद के लाके सटा दिहल गइल बा।

4. ई बात के भी धयान राखे के चाहीं कि चिंतन-मनन से निकलल भाव भा विचार के विस्तार त होखे बाकिर ओकर खण्डन--मंडन ना करे के चाहीं कवनो एगो सुस्पष्ट आ मान्य विचार लेके आगे बढ़े के चाहीं।

5. पल्लवन के अर्थ ह विषय के विस्तार। विस्तार के मतलब ई ना भइल कि एके बात के बार-बार दोहरावल जाव, बलुक ई भइल कि ओह विचार पर भिन्न-भिन्न नजरिया से विचार कइल जाव।

6. पल्लवन के विस्तार कतना होखे, विद्वानन के बीचं बखेड़ा पैदा क दिहले बा। बाकिर जादे लोग के विचार इहे बा कि पल्लवन के आकार निबंधा से छोटा होखे के चाहीं। अगर पंक्ति में सीमित कइल जाव त एकर आकार 10 से 15 पंक्ति तक सीमित रखे के चाहीं।

7. पल्ल्वन खातिर जरूरी बा कि उद्धरण के गूढ़ अर्थ स्पष्ट हो जाव, गूढ़ अर्थ समझे खातिर बार-बार पढ़े के चाहीं।

8. भाषा सरल होखे के चाहीं। कठिन शब्द के प्रयोग आ आलंकरिक चमत्कार पैदा करे के प्रयास में अर्थ-ग्रहण में बाधाा ना पड़े एह बात के भी ख्याल रखे के चाहीं।

9. पल्लवन में मूल भा गौण भाव भा विचार पर टीका-टिप्पणी आ आलोचना ना करे के चाहीं।

10. विस्तारण करे के समय मूल विचार विन्दु से अलग ना भटकें के चाहीं घूम फिर के मूल विन्दु पर नजर गड़वले रहे के चाहीं।

11. पल्लवन में शीर्षक ना देबे के चाहीं।

12. पल्लवन यथासंभव वार्तालाप शैली में आ अन्य पुरुष में लिखे के चाहीं।

13. पल्लवन में केहु के कहल भा कहीं लिखल पंक्ति अगर प्रासंगिक होखे त उद्धरण रूप में उपयोग में लावे के चाहीं।

14. पल्लवन के अंतिम रूप देवे के पहिले प्रारूप बना लेबे के चाहीं।

15. पल्लवन में प्रश्नवाचक वाक्यन के उपयोग आ ओकर स्पष्टीकरण के जरिये विस्तार करे के चाहीं।

कुछ उदाहरण

अकेले चना भाड़ ना फोड़ी

कहे के त लोग कहबे करेलन कि अपने ऊपर विश्वास करे के चाहीं। अकेले चले के चाहीं। आपन हाथ जगरनाथ पर भरेसा होखे के चाहीं। इ भी सच बा कि आदमी एह धारती पर आवेला अकेले आ जइबो करेला अकेले। बाकिर इ दुनिया में सब केहू सबकुछ अकेले क लीही असंभव ना त कठिन जरूर बा। अकेले चल के आदमी सफल जरूर बन सके ला बाकिर महान ना बन सके ला। जतना महान लोग दुनिया में भइलन

ऊ कवनो काम के शुरूआत अकेले जरूर कइलन बाकिर सफलता के शिखर पर चढ़ पइलन तबे जब समाज से सहयोग लेहलन। संघ बनाके आपन काम आगे बढ़इलन, एही से कहल जाला **'संघे शक्ति कलियुगे'** मतलब कलियुग में संगठन में ही शक्ति के निवास होखेला।

एह संबंध में अनेक पुरान कथा प्रचलित बाड़ी स। एगो कथा बा कि एगो किसान के चार गो बेटा रहले स। चारों आपस में हरमेशा लड़त-झगड़त रहले स। किसान ओहनी के लड़ाई-झगड़ा से परेशान रहत रहल। जब मरे-मरे भइल त सब लइकन के अपना पासे बोलवल स। सभन से एकग गो छड़ी मंगवइल स। सब छड़ी के एक साथ बन्हवा के बारी-बारी से बंडल सभन के देके कहलस के एकरा के जे तूर दी सब संपति ओकर। लइका लोग लगलन तूरे केहू ना तूर सकल। तब ऊ बंडल खोलवा के एकग गो छड़ी बाँट दिहलस आ कहलस कि अब आपन-आपन छड़ी तूर लोग। सभे तूर देलस, तब ऊ बतइलस कि देख लोग एक साथे-एक में मिलके रहब जा त केहूँ तोहनी लोग के सताइ ना दबाई आ खूब प्रगति करब लोग। अगर अइसहीं लड़त झगड़त रहब जा त केहू दबा दिही, एकता में बल होखेला मिलजुल के रहिह जा, इही हमार संपति ह, सबलोग बाँट ल जा।

एकता आऊर सहयोग में बड़ा बल होखेला। एकता आ सहयोग के बल पर दुनिया में असंभव लागेवाला काम भी आसानी से भ गइल बा। कबूतर आ शिकारी के कहनी जानते बानी जा। गाँधी जी भी लाखों बार जेहल जइतन अगर जनता से सहयोग ना ले ले रहितन त देश आजुओ गुलामे बनल रहित।

एकता आ सहयोग में समाइल एही बल के देख के कहल जाला अकेला चना भाँड़ न फोड़े। अकेल चना के भूँजे खातिर भाड़ी में डालल जाय आ कतनो गरम बालू डालल जाए चना फूट ना सकेला। बाकिर जब थोरकी आऊर चना डाल दिहल जाला त सब चना फूट जाला। जादे चना हो जाला त ओहनी के भड़भड़हट से भाँड तक फूट जाला। एही से कवनो बड़ भा महान काम क के महान बने के होखे त मिलजुल के काम करे के चाहीं। अकेले सब काम ना हो सके एही से कहल गइल बा अकेले चना भाड़ ना फोड़ सकेला।

का बरखा जब कृषि सुखानी

कवनो काम समय से कइले पर ठीक रहेला। जब कवनो काम समय पर ना कइके समय के बीतला पर कइल जाला तब काम के उपयोगिता त खत्म होइए जाला, सब मेहनत पर पानिओ फिर जाला। जइसे खेती के समय में पानी ना बरिसे त फसल सूखा जाइ। फसल सूखला के बाद कतनो मूसलाधार बारिस होइ ओकर कवनो उपयोग ना रही जाइ। ठीक समय पर वस्तु के उपयोग ना कइला से वस्तु के सार्थकता तक नष्ट हो जाला। उदाहरण के तौर पर कहल जा सकेला कि जइसे कवनो विद्यार्थी बीतत समय के उपेक्षा करत इ कहस कि परीक्षा आई त देख लेहब, अइसहीं करत-करत परीक्षा के समय भी आ जाला उनकर चिंता बढ़े लागेला। ऊ बेचैन हो उठेलन। समय ही ना रही जाला कि पूरा पाठ इयाद क सकस। समय खोअला के पश्चाताप करे लागे लन, सिर धुने लागे लन, बाकिर कुछुओ हो ना पावेला, कवनो फायदा ना हो पावेला, फेल भी हो

जालन काहे? एही से नू कि ऊ अपना समय के उपयोग ना कइलन। समय से पढ़ाई ना कइलन। एही विचार से मिलत अंग्रेजी में भी कहावत प्रचलित बा Time and Tide wait for none समय आ काल केहूँ के प्रतीक्षा ना करे ला। एह से इ बात शत प्रतिशत साँच बा "का बरखा जब कृषि सुखानी।"

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प पर (✓) आ गलत पर (✗) के निसान लगाईं।

(क) "पल्लवन संक्षेपण' के समानार्थी होला । ( )

(ख) 'पल्लवन शब्द के उत्पति 'पल्लव' से मानल जाला। ( )

(ग) पल्लवन के अर्थ होला विषय के संक्षेपित कइल। ( )

(घ) 'पल्लवन' में बीजवाक्य के तिहाई शब्द संख्या में सीमित क दिहल जाला। ( )

(ङ) पल्लवन के एगो सरल सटीक, सार्थक, आकर्षक आ भाव से संबधित शीर्षक देवे के चाहीं। ( )

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(करे, ना करे, सूत्रवाक्य, विस्तार)

(क) 'पल्लवन में भाषा सरल आ ......होखे के चाहीं। विद्वता प्रदर्शन के प्रयास ......के चाहीं।

(ख) पल्लवन में ....सामान्यतः मुहावरा भा कहावत भा कवनो आप्तवचन होला।

(ग) पल्लवन के अर्थ ह विषय के ....।

(घ) पल्लवन में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग ...... के चाहीं।

(ङ) पल्लवन में भाव से संबन्धित शीर्षक .... के चाहीं।

(च) पल्लवन के लेखन वार्तालाप शैली में आ अन्य पुरूष में ..... के चाहीं।

3. नपल-तुलल शब्द में उतर दीं।

(क) पल्लवन के का काम ह।

(ख) प्रभावशाली संक्षेपण में कवन कवन गुण होखे के चाहीं। वर्णन कइल जाए।

क्रियाभ्यास

(क) माई,बाबू,दादा, दादी से भोजपुरी में बिसरल जा रहल कहाउत आ मुहाबरा के पूछ के ओकर पल्लवन कइल जाव।

अध्याय 20

लेखन के विविध आयाम

रिपोर्ताज

'रिपोर्ताज' फ्रेंच भाषा के शब्द ह। एकरा मूल में अंगरेजी के 'रिपोर्ट' शब्द बा। पत्रकारिता के 'रिपोर्टिंग' शब्द से एकर गहिर सम्बन्ध बा। विद्वान लोग रिपोर्ताज के रिपोर्ट के कलात्मक रूप कहेला, साहित्यिक प्रस्तुति बतावेला। एह साहित्यिक गद्य विधा के जनमो दूसरका विश्वयुद्ध के समय भइल बतावल जाला।

रिपोर्ताज के अन्तर्वस्तु, भाषा, शैली आ प्रतिपाद्य के अध्ययन के आधार पर कहल जा सकेला कि समसामयिक घटना-दुर्घटना, जइसे युद्ध, भूकम्प, अकाल, बाढ़, महामारी वगैरह का मानवीय पहलुअन के तथ्यपरक साहित्यिक शैली में अभिव्यक्त समाचार अथवा रिपोर्टिंग के रिपोर्ताज कहल जाला। एकर लेखक पत्रकारिता से जुड़ल केहू साहित्यकार चाहे साहित्यिक प्रतिभा के धनी केहू पत्रकार हो सकेलन।

भोजपुरी साहित्य में रिपोर्ताज हिन्दी के प्रभाव से आइल बा। बाकिर भोजपुरी में एकर लेंखन शैली ओह तरह से नइखे उतर सकल जइसन विदेशी साहित्य में बा। परमेश्वर दूबे शाहाबादी के भोजपुरी रिपोर्ताज

संग्रह 'एनक' भोजपुरी के पहिला रिपोर्ताज संग्रह ह। जवना में बाबा बरमेसर नाथ की जै, गंगा माई के भरली अररिया, सोन वा चमचम चमके ना, जय दुर्गा महारानी की वगैरह एगारह रिपोर्ताज संकलित बा। 'ऐनक' के भूमिका में रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के बेयान बा कि एकर नाँव ऐनक एह से रखाइल बा कि जवना घटना अवसर आ जगह के बरनन एह में बा, ओकर सही सहज चित्र में एह में साफ लउकत, झलकत बा।' एह संग्रह के अनेक रचना के संस्मरणात्मक शैली देख के ई कहल कठिन हो जाता कि ई संस्मरण ह कि रिपोर्ताज। शाहाबादी जी के अलावे डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' भोजपुरी में डॉ. विवेकी राय के लिखल रिपोर्ताज आ फीचर मानक मानल जाला।

बोध प्रश्न

1. 'रिपोर्ताज' कवना भाषा के शब्द ह।
2. रिपोर्ताज के बारे में बताईं।
3. भोजपुरी में रिपोर्ताज लेखन के बारे मे बताईं।

फीचर

फीचर पत्रकारिता के अंग ह। ओकर एगो प्रकार ह। फीचर बहुत हद तक रिपोर्ताज जइसन होला। बाकिर, दूनों में फरक ई होला कि रिपोर्ताज में जहँवा कवनो समसामयिक समाचार के अलम लेहल जरूरी होला, उहँवे फीचर लेखन खातिर ई जरूरी ना होखे। दोसरे रिपोर्ताज में कवनो ताजा आ खास घटना–दुर्घटना के मानवीय संवेदना से जोड़ के तुरत लिखे छपवावे होला, ताकि ऊ बासी ना हो जाय। ओकरा पास सामग्री जुटावे खातिर पौराणिक, ऐतिहासिक वगैरह किताब आ दस्तावेज के हीरे–मथे भा घोंके–बाँचे के समय ना होला, जबकि फीचर के लेखक कवनो विशेष विषय के सीधा सही जानकारी के साथ–साथ पौराणिक ऐतिहासिक सामग्रियन के सहारा ले सकेला।

'फीचर' अंगरेजी के शब्द ह। हिन्दी में एकरा खातिर 'रूपक' शब्द चलेला। पत्रकारिता के क्षेत्र में फीचर अथवा रूपक ओह निबन्धात्मक शैली में लिखल रचना के कहल जाला, जवना में लेखक कवनो समयानुकूल महत्वपूर्ण विषय पर मर्यादित आकार में प्रभावी भाषा प्रदान करत विनोदपूर्ण ढंग से आपन विचार प्रस्तुत करेला। प्रभावी फीचर लेखक उहे व्यक्ति हो सकेला, जेकर तेज–तरख नजर रोज–रोज के घटत महत्वपूर्ण घटना पर होखे। फीचर ताजा समचार के अलावे पौराणिक ऐतिहासिक घटना, तिथि, परम्परा, जरूरत वगैरह कवनो विषय पर लिखा सकत बा।

फीचर लेखन के कई गो प्रकार होला, जइसे– वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, व्याख्यात्मक, चित्रात्मक वगैरह। ई सब निबन्धो के प्रकार हवे स। बाकिर, समय के अनुकूलता आ समसामयिकता के स्तर पर फीचर आ निबन्ध में फरक होला। गाँधी जी का सिद्धान्त पर लिखाईल लेख निबन्ध कहाई त 'आज के परिवेशमें गाँधी का सिद्धांत के भूमिका' विषय पर लिखाइल रचना फीचर के कोटि में आई। के.पी. नारायण के अनुसार– तथ्य आ आँकड़ा के लेके लेख लिखल सहज होला। बाकिर फीचर चाहे रूपक लेखन ओकरा अपेक्षा अधिक कलात्मक होला। एकरा खातिर अनुभूति, भावना, कल्पना आउर अवलोकन सब के जरूरत होला। एके विषय–वस्तु पर निबन्ध आ फीचर लिखा सकता। बाकिर, दूनों के शैली आ प्रतिपादन भिन्न हो जाई- निबन्ध में सामान्य तौर पर कवनो खास विषय, समस्या चाहे ओकरा कवनो खास पहलू के महीन आ गहीन अध्ययन पावल जाला त फीचर खातिर ओतना गहराई में ना जाके शब्दने के सहारे अपेक्षित प्रभाव पैदा कइल जाला।'' साहित्यिक पत्रकारिता के बाद दूरदर्शन, सिनेमा, आ प्रेस–मीडिया में आपन जगह बनावे के क्रम में भोजपुरी में फीचर लेखन के परम्परा शुरू हो गइल बा।

बोध प्रश्न

1. **फीचर के का अर्थ होला।**
2. **फीचर कवना भाषा के शब्द ह।**
3. **फीचर लेखन के बारे में बताईं।**

विज्ञापन

विज्ञापन के अर्थ होला-परचा, परिपत्र, पोस्टर, पत्र-पत्रिका चाहे इलेक्ट्रानिक मिडिया, सिनेमा, दूरदर्शन, कम्प्यूटर इन्टरनेट वगैरह द्वारा कवनो विषयवस्तु आ उत्पादन वगैरह के वास्तविक काल्पनिक चाहे आरोपित गुण सब के प्रचार।

आज सउँसे दुनिया विज्ञापन युग में जी रहल बा। एकरा अलावे बस गाड़ी पर, बस-गाड़ी में, बस स्टैंड पर, रेलवे पलेटफार्म पर, सड़क देवालपर चाहे जहाँ कवनो जगह बाँचल बा उहवाँ होर्डिंग, पोस्टर स्टिकर वॉलिग (देवाल पर लिखल के) वगैरह से विज्ञापन के रूप में कवनो चीज के झूठ साँच प्रचार कइल जा रहल बा। मतलब जेने नजर डाली- ओनही विज्ञापने विज्ञापन नजर आवत बा। विज्ञापन शब्द भलही आधुनिक युग के देन होखे बाकिर विज्ञापन चाहे कवनो विषय वस्तु के प्रचार के काम त प्राचीने काल में होत रहल बा। पहिले डुगडुगी बजाके, गाँव के फेरी लगा के, हरकारा के जरिये कवनो चीज के प्रचार कइल जात रहे। बाकिर जइसे जइसे मशीनी जुग आवत गइल- छापाखाना के बाद बेतार के तार रेडियो, टेलीफोन, लाउडसपीकर, टी.वी. विडियो कंप्यूटर आदि के विकास के संगे-संगे विज्ञापन के रूप प्रकार आ आकार बढ़ते गइल। आज के विज्ञापन आ ओकरा ढंग के देख के कहल जा सकेला कि विज्ञापन के एगो उपकरण ह। जनसंचार के माध्यम सब में कवनो विषयवस्तु भा उपकरण उत्पादन वगैरह के प्रचार जवना जरिये कइल जाला, ओकरे के विज्ञापन कहल जाला। प्रचार करे खातिर कुछ सूचना दिहल जरूरी होला। सूचना

देवे के त समाचार कहल जाला। बाकिर समाचार आ विज्ञापन में फरक होला। समाचार से जवन जानकारी चाहे ज्ञानवृद्धि होला ओकर लाभ पाठक भा श्रोता भा दर्शक के होला जबकि विज्ञापन से प्राप्त समाचार पत्र-पत्रिका वगैरह में जवन विज्ञापन छपेला ओकरा के सजावटी (प्रदर्शनात्मक) विज्ञापन कहल जा सकेला। प्रकाशन खातिर कालम आ विज्ञापन के जरिये घेरल जगह का लम्बाई चौड़ाई (क्षेत्रफल) के आधार पर पइसा लिहल जाला। एकर आकार प्रायः बड़ होला। एह सब से एह विज्ञापन में चित्र, मोट टाइप आ प्रिटिंग ब्लॉक बगैरह के प्रयोग हो सकेला। एह तरह के विज्ञापन के सामग्री सरकारी, गैरसरकारी, प्रशासनिक, व्यापारिक, संस्थागत प्रचार चाहे कवनो कम्पनी का उत्पाद के महिमा बखान कर के विक्री बढ़ावे खातिर होला। छोट-छोट अक्षर वाला छोट-छोट विज्ञापन वर्गीकृत (क्लासीफाइड) विज्ञापन कहल जाला। बिआह नोकरी गुमसुदगी, किराया के मकान, कीना-बेची वगैरह से जुड़ल एह तरह के विज्ञापन प्रतिशब्द का दर से समाचार पत्र पत्रिकन में छपेला। आकार के दृष्टि से विज्ञापन एक कालमी, दू कॉलमी, तीन कालमी, चौथाइ पन्ना के, आधा पन्ना के, पूरा पन्ना के, एक से अधिक पन्ना के हो सकेला आ ओह सब के आकार के हिसाब विज्ञापन दर तय होला।

उदाहरण- हेनहूँ झाँकीं। कायम चूर्ण खाईं गैस भगाईं।

श्रव्य माध्यम के विज्ञापन

श्रव्य माध्यम के विज्ञापन खातिर रेडियो प्रमुख साधन बा। एकरा जरिये सरकारी व्यापारी चाहे रोजगारी विज्ञापन के प्रसारण होला। रेडियो पर

कवनो कार्यक्रम- समाचार चाहे दोसर कवनो कार्यक्रम के प्रसारण का पहिले, बीच में आ अंत में गीतात्मक, संगीतात्मक स्लोगन आधारित विज्ञापन चाहे संदेश दिहल जाला।

दृश्य श्रव्य माध्यम के विज्ञापन

दृश्य श्रव्य माध्यम मतलब दूरदर्शन, सिनेमा, वीडियो, केबल टीवी वगैरह के दायरा आउर सब माध्यमन के व्यापक भइला से सूचना विज्ञापनदाता के आ माध्यम के लाभ पहुँचावेला। संचार माध्यम के विज्ञापन से आर्थिक आय होला आ विज्ञापन देवे वाला के अपना उत्पाद के बिक्री बढ़ावे में मदद मिलेला। इ स्थिति रोजगार, किराया विवाह वगैरह के विज्ञापन सब के संदर्भ में भी सही बा काहें कि विज्ञापन देवेवालन के सम्पर्क एगो बड़ वर्ग से बढ़ेला जवना से उन्हन के सुपात्रन के चुनाव में आसानी होला।

ऊपर के व्याख्या के आधार पर कहल जा सकेला कि विज्ञापन जनसंचार के कई एक माध्यम से प्रचार करे के एगो उपादान ह जवना में खास तरह के सूचना होले। एह सूचनन के प्रकाशित-प्रसारित करे खातिर कुछ ना कुछ धन लिहल जाला। ई धन शब्द संख्या स्थान चाहे समय के आधार पर वसूल कइल जाला।

विज्ञापन के वर्गीकरण

जनसंचार के माध्यम के आधार पर विज्ञापन के तीन वर्ग में बाँटल जा सकेला-दृश्य माध्यम सब के (विज्ञापन लिखल आ छपल) श्रव्यमाध्यम के विज्ञापन (टीवी, सिनेमा, कंप्यूटर वगैरह) दृश्य माध्यम सब के विज्ञापन

में लिखित मतलब हाथ के लिखल जइसे-देवाल पर लिखल, बोर्ड पर लिखल , बस-गाड़ी बिजली के खंभा वगैरह पर गेदू चूना चाहे पेंट वगैरह से लिखल विज्ञापन आ छपल (मुद्रित) जइसे पम्पलेट पोस्टर समाचार पत्र, पत्रिका वगैरह के विज्ञापन आवेला। एह विज्ञापन लिखे का ढँग के अलावा भाषा, रंग आ चित्र के चमत्कार शामिल होला जवना से विज्ञापन पढ़ेवाला के भीतर विज्ञापन के विषय-वस्तु या उत्पाद प्राप्त करे के इच्छा प्रबल हो जाय।

एह सब पर विज्ञापन प्रसारित करे के दर आउर माध्यमन से बहुत अधिक होला। एह सब माध्यम से प्रसारित विज्ञापन के अउर श्रोता-दर्शक-उपभोक्ता पर अधिक असर होला।

बोध प्रश्न

1. विज्ञापन के अर्थ बताईं।
2. विज्ञापन के परिभाषा लिखीं।
3. विज्ञापन के प्रकार बताईं।
4. वर्तमान युग विज्ञापन युग ह। एह कथन के साबित करीं।

अनुवाद

कवनो भाषा में व्यक्त भाव चाहे विचार चाहे तथ्य जब लक्ष्य भाषा में व्यक्त होले मतलब प्रकट होले त ओकरा के अनुवाद कहल जाला। विद्वान लोग अनुवाद प्रक्रिया के सातगो चरण बतवले बा-पाठ-चयन, पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण, भाषांतरण, पुनः निरीक्षण, मिलान आ संशोधित-भाषांतरण। मतलब अनुवाद करे खातिर सबसे पहिले पाठ्य-सामग्री के चुनाव करके ओकरा ढंग से पढ़े आ खूब विश्लेषण कइला के बाद, भाषांतरण करे के होला। भाषांतरण के बाद भाषांतरित सामग्री के भाव, अर्थ, आशय, शिल्प आ आउर सब प्रकार का संदर्भन के समतुल्यता के निरीक्षण के बाद मूल पाठ से मिलान कर के जरूरत के मुताबिक भाषांतरण के संशोधित करत अनुवाद के काम पूरा कइल जाला।

अनुवाद के प्रकार

अइसे त पाठ्य-विस्तार, भाषा-स्तर, अनुवाद के प्रकृति, विषय वगैरह के आधार पर अनुवाद के कइगो भेद बतावल बा, जवना में मुख्य भेद बा-शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद, वार्तानुवाद (आशुअनुवाद) आ रूपांतरण। कवनो अच्छा अनुवाद के गुण

होला–ओकर सहजता, निकटता, समग्रतुल्यता, मूल्यनिष्ठता, समूलता, सरलता, बोधगम्यता आ स्पष्टता। जवना भाषा में अनुवाद हो रहल बा, ओकर प्रकृति का मुताबिक शब्द आ वाक्य के चुने–लिखे के चाहीं। मूल भाषा का शब्दन के समानार्थक शब्द के हूबहू प्रयोग कइल जाय त शब्दानुवाद कहल जाई। जब मूल भाव के अनुवाद का भाषा में स्वतंत्र रूप में राखल जाय त ई भावानुवाद कहाई। जब लेख के सारांश के अनुवाद होई त ई सारानुवाद कहाई। जब मूल भाव के दोसरा भाषा में अपना ढंग से विस्तार से समुझा के लिखल जाय त एकरा के व्याख्यानुवाद भा टीका कहाई। पद्य के अनुवाद गद्यो में हो सकेला। एकरा के गद्यानुवाद चाहे भावानुवाद कहल जाई। जब एक विधा के रचना के अनुवाद दोसरा विधा में कइल जाय त ई रूपान्तर होई जइसे प्रेमचन्द के कहानी 'पंच परमेश्वर' के नाट्य रूपान्तर 'पंच परमेसर' बा।

रेडियो वार्त्ता

'वार्त्ता' शब्द के अर्थ होला–बातचीत आ वृतांत। अंगरेजी में एकरा खातिर 'स्पोकेन वर्ड' चलेला। बाकिर आमतौर से वार्त्ता आ रेडियो वार्त्ता में फरक होला। रोजमर्रा के व्यवहार में होखे वाली वार्त्ता में दू चाहे दू से अधिक आदमी आपस में खाली बातचीत करेलन ज़बकि रेडियो वार्त्ता के एगो खास अर्थ होला। जब वक्ता रेडियो पर मानव समूह से अप्रत्यक्ष रूप से कवनो खास विषय पर बातचीत करेला त ओकरा के 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' में 'रेडियो वार्त्ता' कहल जाला। अंगरेजी में एकरा के 'रेडियो टॉक' आ वार्त्ताकार के 'रेडियो टॉकर' कहल जाला।

रेडियो वार्त्ता एगो खास वार्त्ताकार के जरिये प्रसारित कइल जाला। एकरा में श्रोता पक्ष का संवादी प्रवृत्ति के जिम्मेदारी वार्त्ताकारे के होला। मतलब अपना वार्त्ता में वार्त्ताकार ई समझ लेवे कि श्रोता ओकरा वार्त्ता के संगे आपन दिमाग जोड़ चुकल बा आ ओकरा अभिव्यक्तियन के साथे श्रोता सब के भाव–बोध जुड़ल होला। रेडियो वार्त्ता खातिर लिखल आलेख मुद्रण खातिर ना प्रसारण खातिर होला। एह से एकरा में श्रव्य रचना के सब गुण भइल जरूरी होला। वार्त्ता प्रसारित करे के समय वार्त्ताकार के सामने ओकर आलेख जरूर रहे के चाहीं। आलेख ना रहला पर वार्त्ताकार कुछ के कुछ बोल सकेलन। जवना से उनका साथे–साथे रेडियो कार्यक्रम भी दोषपूर्ण हो सकेला।

उत्तम रेडियो वार्त्ता खातिर वार्त्ता के विषय के चुनाव जरूरी होला। ओह विषय से जुड़ल हर तरह के जानकारी वार्त्ताकार रहे के चाहीं। एकरा संगही वार्त्ताकार के एह बात के ध्यान राखे के चाहीं कि एह वार्त्ता के सुननिहार के लोग बा। ताकि रेडियो नीति के ध्यान में राखत उ वार्त्ता के रोचक आ प्रभावी आलेख तइयार कर सकस। वार्त्ता के भाषा सहज, सरल आ स्वाभाविक सम्भाषण के भाषा होले। एकरा खातिर अइसन जीवंत शैली के अपेक्षा होले जवना के शब्द बोलत होखे, चित्र निर्माण करत होखे आ जवन श्रोता सब के अपना सुंदरता के प्रति खिंचाव पैदा ना क के अपना भीतर उफनत भाव विचार के प्रति खिंचाव पैदा करे। जवना वाक्यन में गति, प्रवाह, लयात्मकता आ जीवंतता होखे। रेडियो वार्त्ता चूकि एगो तय समय सीमा के भीतर प्रस्तुत होले। एह से वार्त्ताकार का वार्त्ता के आलेख ओही हिसाब से तइयार कर के प्रस्तुत करे के अभ्यास कर लेवे के चाहीं। उदाहरण खातिर आकाशवाणी पटना के भोजपुरी कार्यक्रम आरती से प्रसारित रेडियो वार्त्ता सुनल जा सकेला।

बोध प्रश्न

1. वार्त्ता के शाब्दिक अर्थ का होला।

2. आम-वार्त्ता आ रेडियो-वार्त्ता के फरक बताई।

3. रेडियो-वार्त्ता के विशेषता बताईं।

समाचार लेखन

कवनो नया घटल घटना के आकर्षक ढंग से प्रकाशित चाहे प्रसारित करे के कला समाचार लेखन कला के अन्तर्गत आवेला। समाचार तइयार करेवाला का एह बात के ज्ञान होखे के चाहीं कि ई समाचार काहे खातिर आ केकरा खातिर तइयार हो रहल बा। समाचार में कवनो घटल नया घटना–दुरघटना के सिलसिलेवार ढंग से आकर्षक भाषा में उजागर कइल जाला ताकि प्रकाशित चाहे प्रसारित समाचार कि ओर पाठक, श्रोता चाहे दर्शक सहजे आकर्षित हो जास। विभिन्न स्रोतन से मिलल जानकारी के समाचार के रूप में ढालल समाचारलेखन कला के मूल लक्ष्य होला। जन समाचार पत्र खातिर निर्धारित नियम, पाठक–श्रोता के जरूरत आ समाज सहित देश दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डाले का खेयाल से तइयार कइल जाला। कवनो समाचार के मुख्य रूप से तीन गो भाग होला–शीर्षक, आमुख आ मूल कलेवर। शीर्षक मुद्दा के पाठक भा श्रोता के सोझा राखेला, ओकरा मुख्य मुद्दा के पाठक भा श्रोता के सोझा राखेला। समाचार के शीर्षक देत समय ध्यान राखे के चाहीं कि शीर्षक अइसन होखे जवना के देखते पाठक अथवा श्रोता में समाचार पढ़े आ सुने–देखे खातिर उत्सुकता बढ़ जाय। हर समाचार का प्रारंभ के तीन–चार पंक्ति समाचार के सारांश बतावेला। जवना में समाचार के मुख्य विषय–वस्तु–घटना आ प्रसंग के आकर्षक आ उत्सुकता

जगावेवाला उल्लेख होला। एकरे के समाचार के आमुख कहल जाला। मुख्य कलेवर समाचार के ऊ भाग होला जवन आमुख के बाद बिस्तार में लिखल भा बतावल जाला। एकरा में ऊ सब सूचना होला, जवना के समाचार पाठक आ सुननिहार लोग तकले पहुँचावे के होला।

समाचार लिखे का पहिले नीचे लिखल बातन में ध्यान दिहल समाचार लेखन कला के जरूरी शर्त्त बा-

(i) समाचार लेखन प्रारंभ करे से पहिले अपना तथ्यन के ठीक-ठीक जाँच कर लेवे के चाही आ जवना एजेन्सी से सूचना मिले, ओकर हवाला समाचार में देवे के चाहीं।

(ii) समाचार लिखे का पहिले महत्त्वहीन तथ्य आ सूचना के अलग कर देवे के चाहीं।

(iii) महत्त्वपूर्ण तथ्यन में तारतम्यता बइठा के साफ-साफ समाचार प्रस्तुत करे के चाहीं।

(iv) सउँसे समाचार के केन्द्रीय मुद्दा चाहे महत्वपूर्ण बात के चुन के आमुख के रूपमें लिखत, ओही से शीर्षक बनावे के चाहीं।

(v) समाचार के भाषा सुन्दर, आकर्षक आ सभका समझ में आ जाय वाला होखे के चाहीं।

(vi) समाचार के निष्पक्ष आ सकारात्मक प्रभाव वाला होखे के चहीं।

क्षेत्रीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर के समाचार के

कईगो प्रकार पावल जाला-सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, व्यावसायिक, खेल-मनोरंजन से सम्बन्धित, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक वगैरह। एह सभ के कई एक उपप्रकार पावल जाला।

बोध प्रश्न

1. समांचार के परिभाषा दीं।
2. समाचार के कय गो भाग होला।
3. समाचार लेखन में कवना-कवना बात के ध्यान राखे के चाहीं।

पटकथा

पटकथा के मतलब होला–दृश्यक्रम के निर्धारण। एकरा के अंग्रेजी में **'स्क्रीन प्ले'** चाहे, सिनेरियो भी कहल जाला। एकर संबंध श्रव्य-दृश्य माध्यम दूरदर्शन चाहे सिनेमा से बा। कवनो कथा के घटना प्रसंग के रूप में क्रमवार जब दूरदर्शन चाहे सिनेमा के पट (स्क्रीन चाहे परदा) पर उतारल जाला त ओकरे के पटकथा कहल जाला। मनोहर श्याम जोशी अपना किताब "पटकथा लेखन : एक परिचय" में लिखले बाड़न कि "पटकथा कुछ आउर ना कैमरा से फिल्मा के परदा पर देखावे खातिर लिखाइल कथा ह।" अगर कहल जाय कि कथानक के अलग-अलग दृश्यन में तुड़ के प्रस्तुत कइल पटकथा ह त बेजाँय ना कहाई। पटकथा लेखन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के एगो अइसन विधा ह जवना में कहानियन के दृश्यन में बाँटे के होला। एकरा में दृश्यन के सिलसिला ओही तरह के होला जइसे उपन्यास में परिच्छेदन के होला। एह विद्या में जब घटना स्थल बदलेला उहवें दृश्यो बदल जाला।

पटकथा लेखन खातिर दृश्य ज्ञान भइल जरूरी होला। एकरा खातिर लेखक का फिल्म के लम्बाई, दृश्यन के संख्या, दृश्यन के क्रम निर्धारन, दृश्य के आदि आ अंत वगैरह के ज्ञान रहल जरूरी होला। पटकथा लिखे के पहिले घटना के अनिश्चित वर्तमान काल में घटे के कल्पना करत ओकरा के कागज पर शब्द के रूप देवे के चाहीं। एह बात

के ध्यान जरूर राखे के चाहीं कि दृश्य में अइसन कवन घटना लिहल जाय जवना से पात्रन का चरित्र के जानकारी मिल सके। लेखक के इहो जाने के चाही कि पात्र सब कवना मनः स्थिति आ परिस्थिति के वशीभूत होके काम कर रहल बाड़े आ का पावे के चाहत बाड़े।

पटकथा तीन अंकीय सूत्र पर आधारित होला। पहिलका अंक कथा -कथानक के गर्भ होला। एकरा में अइसन बात परोसे के चाही जवना से आगे चलके चरित्र-चित्रन नाटकीय मोड़ ले पावे। पात्रन के स्थिति-परिस्थिति आ इच्छा एही अंक में उजागर होला। आगे आवेवाली घटनन के नेवतल जाला। एकरा के संटप भी कहल जाला। दूसरका अंक में पात्रन के विशेष परिस्थिति में अलग-अलग इच्छा कामना के चलते भइल संघर्ष दिखावल जाला। कथानक के संवादन के जरिये उलझावल जाला ताकि ऊ चरमोत्कर्ष के ओर सहजे बढ़ सके। पात्रन के घात-प्रतिघात के वर्णन एह तरह से दिखावल जाला कि उन्हन के संकट के एहसास हो जाय। कहानी के विकास एही भाग में होला। एही से पटकथा के दुसरका भाग सबसे बड़ भाग कहाला। एकरा में एक घटना से दोसर घटना आ एक दृश्य से दोसर दृश्य पैदा होला। कथानक के कवनो अइसन दृश्य ना होखे जवन कथा के आगे बढ़े से रोके। पटकथा के तिसरका अंक संकट के समाधान के होला, आभास के होला। एह अंक में कथा खतम हो जाला। ई अंक लम्बा ना होके पहिलके अंक जइसन छोट होला। एक घंटा के फिल्म खातिर पटकथा के लगभग 100-120 पन्ना टँकित होखे के चाहीं। पहिला आ तिसरका अंक खातिर होखे के चाही 36-30 पन्ना। बाकिर पन्ना दोसरा अंक खातिर होखे चाहीं। तीनों अंकन का क्रम के ध्यान जरूर रखें के

चाहीं। पटकथा लिखे से पहिले कथानक विन्दु तय कर लेला से कथा निर्माण के दिशा मिल जाला। दर्शक के मन में जिज्ञासा ठीक से उठावत कथानक में नाटकीय तत्वन क होसला बढ़ावे के चाही। सेटप में इ बतावल जरूरी बा कि पात्र कहा बा? के बा? का करता? आ का चाहऽता?

फिल्म आ टेलीविजन के पटकथा लेखन में फरक होला। साहित्य से जुड़ल आदमी टेलीविजन लेखन में सक्षम होले जबकि फिल्म के संबंध में अइसन नइखे। फिल्म के पटकथा पूरा-पूरा व्यवसाय के ध्यान में राख के लिखाला जबकि टेलीविजन के पटकथा के संबंध में व्यवसाय के संगे-संगे विचार प्रधान होला। टेलीविजन में समय के आभाव होला। एकरा में नाटकीय संवाद के जरूरत होला। दृश्य के सिनेरियो में 3 स्थिति पैदा करे के होला जवना से संवाद में रोचकता बढ़े। जबकि फिल्मन में अइसन ना होखे। फिल्म लेखक का बृहद चिंतन के जरूरत होला। पटकथा एगो हुनर ह। आज फिल्म आ दूरदर्शन के प्रसार-विस्तार आउर पटकथा के लेखन में रोजगार के बढ़त सम्भावना के देखत आज के पीढ़ी पटकथा लेखन में रूचि ले रहल बा। भोजपुरियों में पटकथा लेखन के संभावना धीरे-धीरे बढ़ल जा रहल बा।

बोध प्रश्न

1. **पटकथा का ह।**
2. **पटकथा लेखन का बाड़े में बताईं।**
3. **टेलीविजन आ फिल्म पटकथा लेखन में का अंतर बा।**

अध्याय 21

भोजपुरी के मुहावरा

'मुहावरा' अरबी भाषा के शब्द ह जवना के अर्थ होला- बातचीत कइल भा उत्तर दीहल। संस्कृत वाङ्मय में 'मुहावरा' के समानार्थक कवनो शब्द नइखे। कुछ लोग एकरा खातिर 'प्रयुक्तता', 'वाग्रीति', 'वाग्धारा' भा 'भाषा-सम्प्रदाय' के प्रयोग करेला। वी०एस० आप्टे अपना 'इंगलिश-संस्कृत कोश' में मुहावरा के पर्यायवाची शब्दन में 'वाक्पद्धति', 'वाकरीति', 'वाक्-व्यवहार' आ 'विशिष्ट स्वरूप' लिखले बाड़न। पराड़कर जी 'वाक् सम्प्रदाय' के एकर पर्यायवाची मनले बाड़न। काका साहेब कालेलकर 'वाक्-प्रचार' के मुहावरा खातिर 'रूढ़ि' शब्द के सुझाव दीहले बाड़न। युनानी भाषा में 'मुहावरा' के 'ईडियोमा', फ्रेंच में 'इडियाटिस्मी' आ अंग्रेजी में 'इडियम' कहल जाला। 'भोजपुरी मुहावरा संग्रह' के भूमिका में हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के कथन बा कि ''मोहाबरा (मुहावरा) में तीन गो शब्द बा- (मुँह+आव+रह) 'मुँह' के अर्थ 'मुख', 'आव' के अर्थ 'चमक' आ 'रह' के अर्थ 'रास्ता'। आने मुँह से निकलल चमकदार शब्द के 'मुहावरा' कहल जाला।'' सहृदयके अनुसार 'मुहावरा' शब्द खातिर 'सिद्ध प्रयोग', 'परम्परा प्राप्त प्रयोग', 'साधु प्रयोग', 'वृद्धवाक् व्यवहार' आ 'व्यवहार सिद्ध प्रयोगे सटीक शब्द होलन स।

विद्वान लोग 'मुहावरा' के अपना-अपना ढंग से परिभाषित कहले स। हरिवंश राय शर्मा अपना 'मुहावरा कोश' के 'आमुख' में लिखले बाड़न कि मोट तौर पर हम कह सकिले कि जवना सुगठित शब्द समूह से लक्षणाजन्य कभी-कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलेला ओकरा के 'मुहावरा' कहल जाला। कभी-कभी ई व्यंग्यात्मक होलें।

मुहावरा के महत्व

मुहावरा के प्रयोग से भाषा चुस्त, सुदृढ़, गतिशील, रूचिकर, धारदार आ असरदार बन जाले। प्राय: मुहावरन में लक्षणा आ व्यंजना के प्रयोग निहित होला जवना चलते ओकरा प्रयोग से भाषा में प्रभावोत्पादकता आ चित्रमयता आ जाले, जइसे दाँत तले अंगुरी दबावल, रंगल सियार भइल, अपना गोड़ पर अपने कुल्हाड़ी मारल आदि। मुहावरन में कई प्रकार के अलंकार पावल जाला जवना चलते मुहावरन के प्रयोग से भाषा के सौन्दर्य बढ़ जाला। भाषा में माधुर्य अउर ओज आ जाला। मुहावरन के सहायता से लेखक के 'गागर में सागर' भरे में सहायता मिलेला।

भोजपुरी के कुछ प्रमुख मुहावरा

1. **आग उगिलल**- कठोर बात बोलल
2. **अंगुरी पकड़ के पहुँचा पकड़ल**- थोड़ा आश्रय देला पर अधिकार जतावल
3. **अंगूठा देखावल**- धोखा दिहल, चिढ़ावल

4. **अंचरा पसारल**– दया के भीख **माँगल**
5. **अंट-शंट बकल**– ऊटपटांग बोलल
6. **आन्हर हाथ बटेर लागल**– संजोग से **अयोग्य के सफलता** मिलल।
7. **अकिल के पैदल**– मूर्ख
8. **अकिल ठिकाने लागल**– होश गुम भइल, गलती समझ में आइल।
9. **आपन माथ ओखरी में दिहल**– जानबूझ के खतरा मोलल
10. **अपना गोर पर खड़ा भइल**– स्वावलम्बी भइल
11. **आपना गोड़ पर कुल्हाड़ी मारल**– आपन हानि अपने कइल
12. **आँख के पानी गिरल/मरल**– बेलज्ज भइल
13. **आँख में गड़ल**– खटकल
14. **आँख चरबिआइल**– घमंडी बनल
15. **आँख लागल**– निन्द आइल
16. **आग में घीव डालल**– क्रोध भड़कावल
17. **आटा-दाल के भाव बुझाइल**– परिस्थिति के प्रतिकूलता के भान भइल
18. **इज्जत लिहल**– सम्मान नष्ट कइल
19. **उड़न-छू भइल**– गायब भइल।
20. **उधेड़बुन में पड़ल**– चिन्तित भइल
21. **उल्टा साँस चलल**– मरे का नियरा पहुँचल

22. **ऊसर में बीआ बोअल-** बेकार के काम कइल

23. **कटल-कटल दिखल-** अलग-थलग रहल

24. **कईची जइसन जबान चलल-** अमर्यादित बात बोलल

25. **करम फूटल-** अभागा, भाग्य बिगड़ल

26. **करेज छेदल-** मर्मस्पर्शी बात बोलल

27. **कसाई के खूँटा में बन्हाइल-** निर्दयी आदमी के हाथे दिहल

28. **कागज करिया कइल-** व्यर्थ में कुछ लिखल

29. **कान कइल-** ध्यान दिहल

30. **कान खड़ा भइल-** चौकन्ना भइल

31. **कान में तेल डाल के सुतल-** सुन के अनसुना कइल/लापरवाह भइल

बोध प्रश्न

1. **मुहावरा के परिभाषा दीं।**
2. **मुहावरा प्रयोग के महत्व बताईं।**
3. **नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ बताईं-**

   गुड़ गोबर कइल, लाल-पियर भइल, अगिआइल, तरवा के लहर कपारे चढ़ल, बकबास कइल।

4. **भोजपुरी के अपठित दस मुहावरन के लिख के ओकर अर्थ बताईं।**

भोजपुरी कहाउत आ लोकोक्ति

कहाउत चाहे लोकोक्ति अनुभवसिद्ध ज्ञान के भंडार ह। कहाउत के भोजपुरी में 'कहावत' भी कहल जाला। जवना के सम्बन्ध लोक प्रसिद्ध कवनो लोककथा से होला। भोजपुरी के प्राय: हर कहाउत चाहे लोकोक्ति पद्यमय पावल जाला जवन एक चरन चाहे दू चरन आ कबो-कबो दू चरन से ज्यादे के भी होला, जइसे-**'सात भईस के सात चभक्का, सोरह सेर घीव खाँडव रे, कहाँ गइले तोर बाघ मामा, एक टक्कर लड़ जाऊँ रे। अतिसय लोभ बकुलवे किन्हा, छन में प्रान कोंकड़वे लिन्हा'। 'अघाइल बकुला के पोठिया तीत, 'अकिल के पटपट ग्यान कहाँ पाइला, एही अकिल से रउआ कछुआ के खाईला'** वगैरह।

ई सभ भोजपुरी के कहाउत आ लोकोक्ति ह, जवना में कवनो ना कवनो कथा छिपल बा। जइसे 'अकिल के पटपट गेयान कहाँ पाईला, एही अकिल से रउआ कछुआ के खाईला', एकरा में एगो कछुआ के कथा बा। 'एक बेर एगो सियार कछुआ के खाये खातिर पकड़लस। कछुआ चट से आपन मुँड़ी अपना देही के खोल में ढुका लिहलस। सियार जब कछुआ के खाये लागल त ओकरा दाँत से कछुआ के उपरवारी हड्डीदार परत कटइबे ना करे तब सोचलस कि कछुआ सूख के चीमर हो गइल बा, एकरा के पानी में भिंजा के मोलायम बना लिहब तब खाइल जाईं। उ कछुआ के ले जाके पोखरा के पानी में किनारहीं ध दिहलस, धरते कछुआ पानी में सरक

गइल आ पानी में जाके ऊ सियार के मूर्खता पर इहे कहावत कहलस। ई कहाउत कवनो मूर्ख व्यक्ति का मूर्खता पर कहल जाला। अइसही हरेक कहाउत के जड़ कवनो ना कवनो लोककथा से जुड़ल होला।

भोजपुरी के कुछ प्रमुख कहाउत आ लोकोक्ति

1. **आन्हर गोरइया, भरसाई में खोंता**– मूर्ख आदमी आपन नाश अपने करेला।
2. **गाय मार के जूता दान**– भारी अपराध कर के मामूली प्रायश्चित कइल।
3. **चलनी दूसे सूप के जेकरा सहस्सर छेद**– खुद गलती करे वाला जब दोसरा में गलती बतावेला तब ओकरा पर दोसरा के व्यंग्य।
4. **अन्हरन में काना राजा**– मूर्खन का बीच कम अकिल वाला के प्रधानता।
5. **अधजल गगरी छलकत जाय**– कम जानकार के अधिक बोलल।
6. **आपन हाथ जगरनाथ**– अपने आप पर भरोसा कहल।
7. **आम के आम, गुठली के दाम**– दुगुना फायदा उठावल।
8. **आगे नाथ ना पाछे पागहा**– जिम्मेवारहीन आदमी।

9. **एक पंथ, दू काज**- एके साथ दूगो काम के भइल।

10. **करिया अक्षर भईंस बराबर**- निपढ़-गँवार।

11. **गुरू गुड़ चेला चीनी**- गुरू के आगे चेला के बढ़ल।

12. **घर के भेदिया लंका दाहे**- आपसी फूट से हानि।

13. **देशी मुर्गी बिलायती बोल**- दोसरा के नकल में आपन असलियत भुलाइल।

14. **नौ के लकड़ी नब्बे खरच**- लाभ कम आ खर्च अधिक।

15. **सात चूहा खाके बिलाई भइली भगतिन**- पापी द्वारा पुण्यात्मा बने के ढोंग।

बोध प्रश्न

1. लोकोक्ति चाहे कहाउत के परिभाषा बताईं।

2. नीचे लिखल पाँच कहाउत के अर्थ बताईं-

माटी के चंदन घसे रघुनंदन, जहाँ गाछ ना बिरीछ उहाँ लेंड़ पुरधान, हाथी के दाँत भीतर न जात, आरसी ना फारसी मियाँ जी बनारसी, करनी ना धरनी धिया ओठ बिदरनी।

3. अपना गाँव के पुरनिया लोग से सुन के पच्चस गो कहाउतन के लिखीं आ ओकर अर्थ बताईं।



BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LIMITED, PATNA
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना